अनुपम

2019-20/2020-21

संरक्षक

डॉ. सरोज श्रीवास्तव

प्राचार्य

सम्पादक

डॉ. माधवीलता दुबे

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र

सह संपादक

डॉ. अरूणा जैन

डॉ. मीनू चतुर्वेदी

श्रीमती आशा वाधवानी

डॉ. एकता पाल

प्रिंट एवं ग्राफिक्स

श्री हरि डिजिटल प्रिंट

नोटः– पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं।

महाविद्यालयीन प्राचार्य एवं शैक्षणिक स्टॉफ

महाविद्यालयीन प्राचार्य एवं कार्यालयीन स्टॉफ परिवार

पत्रिका संपादक मंडल समिति

MANGUBHAI PATEL
GOVERNOR, MADHYA PRADESH
BHOPAL - 462052

मंगुभाई पटेल
राज्यपाल, मध्यप्रदेश
भोपाल - 462052

क्रमांक 563 /राजभवन/2021
भोपाल, दिनांक 27 जुलाई, 2021

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय द्वारा पत्रिका **अनुपम** के संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिका छात्रों में निहित रचनात्मक प्रतिभा को सामने लाकर उनकी रचना धर्मिता को प्रकटीकरण का अवसर उपलब्ध कराती है। उनका मनोबल बढ़ाती है। विद्यार्थियों को टीम भावना में काम करने और दायित्वों को स्वीकार करने का अनुभव देने का महत्वपूर्ण साधन महाविद्यालय की पत्रिका है।

आशा है, पत्रिका अनुपम छात्र-छात्राओं को भविष्य में उनकी पहचान बनाने में सहयोगी होगी।

शुभकामनाएं।

(मंगुभाई पटेल)

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

दिनांक 28 जुलाई, 2021
पत्र क्रमांक 378/21

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शासकीय विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल द्वारा पत्रिका "अनुपम" का प्रकाशन किया जा रहा है। विद्यार्थियों को रचनात्मक चिंतन प्रक्रिया से परिचित कराते हुए उनमें बौद्धिक उद्यमिता का संस्कार विकसित करने का यह प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका में कोरोना काल में विद्यार्थियों की गतिविधियों और अनुभवों तथा कोरोना अनुकूल व्यवहार पर आधारित आलेखों का समावेश रहेगा।

विश्वास है कि महाविद्यालयीन पत्रिका "अनुपम" के माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रवादी चेतना विकसित करने की प्रेरणा मिलेगी।

शुभकामनाओं सहित।

(शिवराज सिंह चौहान)

डॉ. मोहन यादव
मंत्री
उच्च शिक्षा विभाग
मध्यप्रदेश शासन

मंत्रालय : कक्ष क्र. E-216, VB-III,
भोपाल - 462004
निवास : विंध्य कोठी, भोपाल
दूरभाष : 0755-2430757, 2430457 (निवास)
0755-2708682 (मंत्रालय)
ई-मेल : mohan.yadav@mpvidhansabha.nic.in
drmyadavujn@gmail.com

पत्र क्र. 1081
दिनांक 10-8-2021

//शुभकामना संदेश//

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल के द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका "**अनुपम**" का प्रकाशन किया जा रहा है।

ऐसी आशा है कि **पत्रिका** में प्रकाशित होने वाली सामग्री विद्यार्थियों के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

महाविद्यालय की पत्रिका "**अनुपम**" के सफल प्रकाशन प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. मोहन यादव)

रामेश्वर शर्मा
- विधायक , हुजूर विधानसभा-155
- अध्यक्ष, ''कर्मश्री''

मोबा.: 094250 04111
फोन : 0755- 4244566
2570182
2675498

क्रमांक .....

दिनांक 05/08/2021

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय की पत्रिका 'अनुपम' सत्र 2019–20 एवं 2020–21 के संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है। उक्त पत्रिका में महाविद्यालय की उपलब्धियों के दस्तावेजों के साथ–साथ, विद्यार्थियों की रचनाधर्मिता को एक सशक्त माध्यम भी प्रदान करती है।

मैं "अनुपम" पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनायें व्यक्त करता हूँ ।

(रामेश्वर शर्मा)
विधायक

श्री चंदशेखर वालिम्बे
आई. ए.एस.

//शुभकामना संदेश//

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय भोपाल मध्यप्रदेश द्वारा वर्ष 2019–20 एवं 2020–21 हेतु वार्षिक पत्रिका **अनुपम** का संयुक्तांक प्रकाशित किया जा रहा है पत्रिका में महाविद्यालय परिवार द्वारा प्रदान की गई नवीन जानकारियों से विद्यार्थी और पाठक गण लाभान्वित होंगे।

मुझे विश्वास है यह पत्रिका महाविद्यालय को समग्र रूप से प्रतिबिंबित करने में समर्थ होगी।

पत्रिका की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

अपर आयुक्त
उच्च शिक्षा, मध्यप्रदेश शासन
भोपाल

Prof. R.J. Rao
Vice Chancellor

प्रो. आर.जे. राव
कुलपति

BARKATULLAH UNIVERSITY
Bhopal-462 026, Madhya Pradesh (India)

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय
भोपाल–462 026, मध्यप्रदेश (भारत)

Ref. No. : .....

Date : 8/8/21

संदेश

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका 'अनुपम' सत्र 2019–20 एवं 2020–21 के संयुक्तांक का प्रकाशन कर रहा है।

निश्चित ही महाविद्यालय परिवार के संयुक्त प्रयासों से पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता, संदेश एवं अन्य ज्ञानवर्धक सामग्री का मिश्रण होगा। इस सुअवसर पर समस्त विद्यार्थीगणों एवं शिक्षकगणों को अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने का अवसर भी प्राप्त होगा। पत्रिका के प्रकाशन से महाविद्यालय के वर्तमान एवं भावी गतिविधियों की जानकारी से समाज को एक नई दिशा एवं बदलाव मिलेगा जिससे प्रदेश, देश एवं पूरे विश्व को एक नया संदेश मिलेगा।

मैं, पत्रिका 'अनुपम' के प्रकाशन के सुअवसर पर महाविद्यालय परिवार के सदस्यों, विद्यार्थीयों को मेरी ओर से तथा विश्वविद्यालय परिवार की ओर से शुभकामना प्रेषित करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि महाविद्यालय अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में हमेशा सफल रहेगा।

(प्रो.आर.जे.राव)

Phone: +91-755-2517001, 2517002, Fax: 91-755-2517003, E-Mail: buvcmp@nic.in, www.bubhopal.ac.in

प्राचार्य के उद्गार...

▪ डॉ. सरोज श्रीवास्तव
प्राचार्य

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय (पुराना बेनजीर) भोपाल प्रदेश में अपना विशिष्ट स्थान रखता है महाविद्यालय ने अपने लक्ष्य को सार्थक करते हुये नई ऊंचाईयों को छूने का प्रयास किया है महाविद्यालय 38 वर्ष के सफर में छात्र संख्या निरंतर बढ़ती गई, जो आज बढ़कर 2983 तक पहुँच गई है। महाविद्यालय में विज्ञान, वाणिज्य संकाय के साथ–साथ कला संकाय एवं गृहविज्ञान संकाय को भी आरंभ किया गया है एम.एस.सी. एम.कॉम. एवं एम.ए. पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं। पीएच.डी. कार्य हेतु इस महाविद्यालय को शोध केन्द्र बनाया गया है उच्च शिक्षा गुणवत्ता को सार्थक एवं उपयोगी बनाने की पहल महाविद्यालय में की जा रही है। महाविद्यालय सीमित साधनों का उपयोग कर, विकास के लिये महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है, महाविद्यालय को नेक (NAAC- National Assessment and Accreditation Council) द्वारा B+ ग्रेड दिया गया है वर्तमान में यह 'A' ग्रेड के लिये प्रयासरत है। 'रूसा' एवं विश्वबैंक की सहायता से यह अपनी अधो–संरचना को विकसित कर रहा है।

जनभागीदारी समिति के अमूल्य योगदान से महाविद्यालय अपने संसाधनों को सही दिशा में अधिकतम विस्तार करने का प्रयास कर रहा है– आधुनिक विधाओं एवं तकनीकों के माध्यम से अध्ययन, अध्यापन, व्यावसायिक एवं रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम, कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ, परिसर साक्षात्कार, शिक्षक अभिभावक योजना, वर्चुअल क्लास रूम, सर्किट कैमरा महाविद्यालय की प्रत्यक्ष उपलब्धियाँ हैं। इसके अलावा केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से MOU हस्ताक्षरित होने से विद्यार्थियों को विकास के अधिक अवसर सुलभ हो सके। महाविद्यालय में NCC एवं NSS की सशक्त इकाईयाँ कार्यरत हैं छात्रवृत्ति योजनाओं तथा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना' से छात्र लाभान्वित हुए हैं इन सभी उपलब्धियों से शिक्षा के उच्च स्तर को बनाये रखने का हमारा उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ा है।

आज विद्यार्थियों के लिए पारम्परिक उच्च शिक्षा को केवल ज्ञान पर आधारित न रखकर इसमें ज्ञान और दक्षता का समावेश करते हुए इसे विकसित करने का एक व्यापक दृष्टिकोण महाविद्यालय ने अपनाया है। आने वाले समय में जिन क्षेत्रों में विकास की अपार संभावनाएं हैं और जहाँ रोजगार उपलब्ध होगा उन क्षेत्रों के उत्तम पाठ्यक्रमों को हम स्ववित्तीय पाठ्यक्रमों द्वारा लागू कर रहे हैं– जैसे, बायोटेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर एप्लीकेशन, सर्टिफिकेट कोर्स प्रमुख रूप से शामिल हैं हमारा प्रयास है कि विद्यार्थियों में हुनर का विकास हो ताकि एक ओर वह पारंपरिक उपाधि प्राप्त कर सकें वहीं दूसरी ओर उनमें जीवनोपयोगी दक्षताएँ भी विकसित हो सकें। विद्यार्थियों में उद्यमिता के गुण आयें और वे स्वयं उद्यमी बनें इसका प्रशिक्षण भी महाविद्यालय में दिया जा रहा है।

हमारा समग्र दृष्टिकोण और दर्शन विद्यार्थियों को समाज में एक सशक्त इकाई के रूप में स्थापित करने का है। हम विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं अकादमिक जगत का सम्बल और सुझाव चाहते हैं। इसी आशा और विश्वास के साथ।

डॉ. सरोज श्रीवास्तव

संपादकीय...

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, समाज भी इससे अछूता नहीं है। कुछ परिवर्तन हम लाना चाहते हैं ऐसे परिवर्तन वांछित परिवर्तन के रूप में समाज में घटित होते हैं लेकिन यह भी सच है कि जब परिवर्तन किन्हीं आकस्मिक परिस्थितियों से उत्पन्न हों तब हमारी तैयारी उन परिस्थितियों के अनुरूप नहीं होती है जिसकी आवश्यकता होती है। अतः हम परिवर्तित परिस्थितियों से उत्पन्न चुनौतियों का सामना कर सकें इसके लिए हमें साहसी बनना होगा। महात्मा गाँधी का मंतव्य था, **साहस के बिना शिक्षा मोम की पुतली के समान है।** साहस यदि बना रहा तो मनुष्यता भी बची रहेगी। कोरोना काल में हम सामाजिक दूरी बनाए रखने की उत्पन्न आवश्यकता के अनुरूप रिश्तों से अर्थात् समाजिक ताने–बाने से दूर होते चले गए। साथ ही खुद के प्रति भी संवेदनहीन होने लगे। भय, आशंका, असुरक्षा ने हमारे अंदर कुंठा पैदा कर दी ऐसी स्थिति में हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मनोभाव का उतार–चढ़ाव हमारी कार्यशीलता को प्रभावित करता है हमें सतत कर्म में रत रहना चाहिए। यह भी सच है कि यदि हम कर्म करेंगे तो सफलता हमसे दूर कैसे हो सकती है? गीता में कृष्ण ने कहा है, कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे भव्य आहितः। अर्थात् 'यदि मैं सीधे हाथ से कर्म करूंगा तो मेरे उल्टे हाथ में विजय अवश्य होगी।' मैं कर सकता हूँ, कर सकती हूँ, यह विश्वास जब अंदर जागेगा तब आपके अंदर स्वतः स्फूर्त प्रेरणा काम करेगी। युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत स्वामी विवेकानंद ने युवाओं का आह्वान कर कहा था–

'उठो, जागो और तब तक लगे रहो जब तक लक्ष्य न मिल जाए।'

अतः मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि हम साहसी बनें, योग्य बनें कर्त्तव्य परायण बनें और स्वावलंबी बनें तभी हम अपना, परिवार का और राष्ट्र का भला कर सकते हैं। अनेक अवरोधों के पश्चात् महाविद्यालय की पत्रिका 'अनुपम' अपने स्वरूप में आई है 'अनुपम' के संयुक्त अंक को आपके समक्ष रखते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस संदर्भ में जिनका सहयोग, मार्गदर्शन, शुभकामनाएं हमें प्राप्त हुईं, हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। सर्वप्रथम किसी कार्य को प्रारंभ करने में शुभकामनाओं का अपना महत्व होता है यही शुभकामनाएं न केवल कार्य करने का मनोबल प्रदान करती हैं बल्कि किए गए कार्य को गरिमा भी प्रदान करती हैं। मैं, महामहिम राज्यपाल महोदय जी, माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय शिक्षा मंत्री जी, माननीय विधायक महोदय श्री रामेश्वर शर्मा जी, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय जी, आयुक्त उच्च शिक्षा विभाग महोदय का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कर हमें अनुगृहीत किया। इस कार्य को संपन्न करने में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सरोज श्रीवास्तव की प्रेरणा, निर्देशन और विश्वास था, जिसकी वजह से '**अनुपम**' पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका। महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों का प्रत्यक्ष और परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ उसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ। मैं सम्पादक मंडल के सभी सहभागी सदस्य प्राध्यापक साथियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। साथ ही मुझे **कम्प्यूटर ऑपरेटर**, **मोहिनी धाकड** का अप्रतिम सहयोग प्राप्त हुआ।

कोरोना काल में विद्यार्थियों से आमने–सामने का संपर्क सीमित होने के बावजूद विद्यार्थियों ने मुझे जो जानकारी प्रदान की वह बेजोड़ थी। पत्रिका की भी अपनी सीमाएं होती हैं अतः प्रकाशन हेतु प्रस्तुत समस्त सामग्री को जगह नहीं दी जा सकी, लेकिन कोशिश की, कि विद्यार्थियों की रचना धर्मिता को जगह मिले और उनकी प्रतिभा का परिचय पाठकों को मिले। पत्रिका में इतिहास, राजनीति, साहित्य, विज्ञान, स्वास्थ्य जागरूकता संबंधी भरपूर सामग्री है, कहानी, कविता और संस्मरण स्वतः की अनुभूत अनुभूतियों से प्रेरित हैं, नवाचार भी है, सीमित संसाधनों और विपरीत परिस्थितियों में भी विद्यार्थियों की प्रतिभा का परिचय देती हुई इस पत्रिका में पढ़ने के लिए बहुत कुछ है विभाग में प्राध्यापक गणों की अकादमिक उपलब्धियां भी संस्था को गौरव प्रदान करती हैं। पत्रिका के प्रकाशन में सज्जा एवं प्रिंट के लिए श्री हरि डिजिटल प्रिंट (एम.पी.नगर भोपाल) को मैं हार्दिक धन्यवाद देती हूं।

एक बार पुनः सभी को हार्दिक धन्यवाद, शुभकामनाओं के साथ।

डॉ. माधवीलता दुबे

महाविद्यालय एक नजर में...

शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल अपनी स्थापना के 39वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। विज्ञान व वाणिज्य संकाय के अतिरिक्त 2018–19 में महाविद्यालय में गृह विज्ञान संकाय में स्नातक तथा कला संकाय स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन–अध्यापन प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय का गौरवशाली अतीत रहा है। प्रारम्भ में बेनजीर के नाम से जाना जाने वाला महाविद्यालय वर्तमान में (2020–21) में अपने नवीन भवन में स्थानांतरित हो गया है। 2018–19 में महाविद्यालय में प्रवेशित कुल विद्यार्थियों की संख्या 1883 थी। वहीं 2019–20 में 2371 विद्यार्थी प्रवेशित हुए। 2020–21 सत्र् में कुल 2983 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। सत्र् 2018–19 में 80 प्रतिशत विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। सत्र् 2019–20 एवं 2020–21 में कोरोना से उत्पन्न परिस्थितियों के कारण अंतिम वर्ष में बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय द्वारा ओपन बुक पद्धति से तथा प्रथम व द्वितीय वर्ष में आंतरिक मूल्यांकन तथा पिछले वर्ष के अंकों के आधार पर परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। स्नातकोत्तर स्तर पर भी इसी प्रक्रिया को अपनाते हुए विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षा परिणाम जारी किये गये।

महाविद्यालय में विभिन्न संकायों में पंजीकृत **शोध** निर्देशक प्राध्यापक गणों के निर्देशन में 2018–19 से 2020–21 तक कुल 35 से अधिक पीएच.डी. अवार्ड हुई। 06 शोध प्रबंध ग्रंथ जमा किये गये एवं 24 शोध छात्र शोधरत हैं।

महाविद्यालय में म0प्र0 उच्च शिक्षा विभाग की समस्त **हितग्राही योजनाओं** (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग छात्रवृत्ति, अनुसुचित जाति, अनुसूचित जनजाति, आवास योजना, गाँव की बेटी योजना, प्रतिभा किरण योजना, विक्रमादित्य योजना, मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना, जनकल्याण योजना) का लाभ विद्यार्थियों को मिल रहा हैं। इसके अलावा कमजोर वर्ग के छात्र–छात्राओं को रेमेडियल कक्षाओं के माध्यम से ज्ञान में अभिवृद्धि के प्रयास किए जा रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के द्वारा छात्र–छात्राओं को रोजगार सम्बन्धी प्रशिक्षण व रोजगार अवसर उपलब्ध कराए जाने हेतु तत्परता से सतत् प्रयास किए जा रहे हैं। कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा 03 एम.ओ.यू. भी sign किए गए है।

शिक्षक अभिभावक योजना एवं **भूतपूर्व छात्र संगठन** जैसे समितिगत प्रयास भी सक्रियता से महाविद्यालय में किए जा रहे हैं।

महाविद्यालय की **अनुशासन समिति और एंटी रैगिंग समिति** महाविद्यालय परिसर में शांति और सुरक्षा प्रदान करने में तत्परता से कार्य कर रही हैं।

हमारे लिए गर्व का विषय है कि महाविद्यालय के छात्र–छात्राएँ विभिन्न क्षेत्रों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं–

1. सत्र् 2018–19 में महाविद्यालय के छात्र **गौरव शाक्य** ने **वर्ल्ड कप–पैसा पोलो** में सहभागिता की । महाविद्यालय के छात्रों ने विश्वविद्यालय स्तर पर खो–खो, बेडमिंटन इत्यादि खेलो में समय–समय पर सहभागिता की। महाविद्यालय की टीम ने खो–खो और बेडमिंटन में रनर अप ट्राफी भी प्राप्त की।
2. राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत **गणतंत्र दिवस परेड 2021** में महाविद्यालय के छात्र **ऋषभ शर्मा, बी.ए. तृतीय वर्ष** ने म0प्र0 दल का प्रतिनिधित्व किया। इसके अलावा बहुमुखी प्रतिभा के धनी छात्र **ऋषभ शर्मा ने म0प्र0 लोक संस्कृति आदिवासी समूह नृत्य में युवा उत्सव 2021 में राष्ट्रीय स्तर पर (अंबेडकर भवन, दिल्ली) अपनी प्रस्तुति दी।** महाविद्यालय के **छात्र रवि चौहान** ने म0प्र0 सरकार की योजना **मां तुझे प्रणाम** में 2018 में सहभागिता की एवं राज्य और राष्ट्रीय स्तर के राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर में भागीदारी की। राज्य स्तरीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर 2019 में महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व **श्रेजल चौहान, प्राची शर्मा एवं अच्युतानंद शुक्ला** ने किया एवं 2020 में राज्य स्तरीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व **सोनम साहू, तीरथ मार्को, मनीष सोनकर** स्वयं सेवकों ने किया।
3. महाविद्यालय में **एन.सी.सी में 53 कैडेट्स** हैं, वर्तमान में एन.सी.सी दल का नेतृत्व **पंकज पाडेण्य** कुशलता पूर्वक कर रहे हैं।

4. कोरोना गतिविधियों में महाविद्यालय के **छात्र राहुल मालवीय, एम.ए. समाजशास्त्र** को उत्कृष्ट स्वयंसेवी प्रयासों के द्वारा कोविड–19 द्वारा प्रभावित जन साधारण को सहायता उपलब्ध कराने हेतु UNICEF द्वारा COVID -19 **Youth Champion** से अलंकृत कर प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इसके साथ ही महाविद्यालय की **छात्रा विक्रमशिला चौधरी, बी.एस.सी.द्वितीय वर्ष को यूनिसेफ** द्वारा बाल संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु **Youth Champion** 2020 से अलंकृत किया गया। बहुमुखी प्रतिभा की धनी छात्रा विक्रमशिला चौधरी को वृद्धों के संरक्षण, कोविड–19, पर्यावरण जागरूकता जैसे अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए विभिन्न संस्थाओं ने प्रशस्ति पत्र प्रदान किए।
5. स्वतन्त्रता की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर आजादी का अमृत महोत्सव के परिप्रेक्ष्य में म0प्र0 शासन व विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता 'दांडी मार्च का आजादी में योगदान' विषय पर **कु स्नेहा नामदेव 2021 ने द्वितीय स्थान** प्राप्त किया।
6. लोकसभा निर्वाचन 2019 में मतदाता जागरूकता पर जिला स्तरीय महाविद्यालयीन स्लोगन प्रतियोगिता में महाविद्यालय के **छात्र दिनेश कुमार ने द्वितीय स्थान** प्राप्त किया। महाविद्यालय के **छात्र अच्युतानंद शुक्ला** को लोक सभा निर्वाचन 2019 में उत्कृष्ट कार्य हेतु जिला प्रशासन द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।
7. महाविद्यालय की **छात्रा विजयलक्ष्मी झा** द्वारा बनायी गयी पेटिंग को **ट्रैफिक पुलिस द्वारा आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार** प्रदान किया गया।
8. गांधीजी पर केन्द्रित प्रश्न मंच प्रतियोगिता 17/01/2020 को आयोजित हुई जिसमें महाविद्यालय की टीम **(अंशुल सराठे, धर्मेन्द्र यादव तथा रत्नेश विश्वकर्मा)** को **जिला स्तर पर प्रथम, तथा विश्वविद्यालय स्तर पर भी प्रथम स्थान** प्राप्त हुआ।

म0प्र0उच्च्य शिक्षा विभाग और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय, यू.के. के बीच 2019–20 में **केंब्रिज असेसमेंट इंग्लिश ट्रेंनिग प्रोगाम** हेतु MOU sign हुआ इसके अंतर्गत आयोजित Lingua Skill Test जो कि विद्यार्थियों को 60 घंटे की ट्रेनिग के पश्चात् देना निर्धारित था, के तहत महाविद्यालय के **02 छात्र अन्हा नावेद अली (बी.एससी. प्रथम वर्ष), आशीष विश्वकर्मा (एम.एससी गणित) में बी2 लेवल सर्टिफिकेट** प्राप्त किया। इसके साथ ही **दीपिका सैयाम (एम.ए समाजशास्त्र) तथा फातिमा अहमद (बी.एससी तृतीय वर्ष) को बी1 लेवल सर्टिफिकेट** प्राप्त हुआ। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम डॉ. प्रज्ञा रावत (विभागाध्यक्ष अंग्रेजी) के कुशल संयोजन में संपन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम के तहत आयोजित TKT (Teaching Knowledge Test) में महाविद्यालय की **सहायक प्राध्यापक, श्रीमती आशा वाधवानी (अंग्रेजी विभाग) को बेण्ड 3** प्राप्त हुआ, जो कि उच्च श्रेणी में शामिल किया जाता है।

महाविद्यालय में भारत सरकार के द्वारा भारत के सांस्कृतिक एकीकरण के प्रयासों में **एक भारत श्रेष्ठ भारत** की पहल के तारतम्य में दिनांक 18/01/2020 से 21/01/2020 तक पूर्वोत्तर राज्य असम के विद्यार्थियों के साथ सांस्कृतिक आदान–प्रदान का कार्यक्रम सम्पन हुआ।

पुरस्कार–महाविद्यालय के रसायन शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष **प्रो. डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी को 30 जून 2019** में आयोजित सेमीनार में उत्कृष्ट शिक्षा एवम् शोध के लिए Indian Iconic Personality Award से ''**ग्लोरियस ऑरगेनाइजेशन फॉर एक्सीलरेटेड टू लिटरेसी**'' नई दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया एवं अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष **डॉ. प्रज्ञा रावत** को ''**डॉ. सुषमा तिवारी सम्मान**'' **2018 दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय भोपाल**, द्वारा प्रदान किया गया। महाविद्यालय में **राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी, महिला इकाई–डॉ. हेमलता वर्मा को लोक सभा निर्वाचन 2019 में मतदाता जागरूकता अभियान** के तहत उत्कृष्ट कार्य हेतु जिला प्रशासन द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

संसाधन – महाविद्यालय के पुस्तकालय में 20 हजार से अधिक पुस्तकें, 28 पत्र–पत्रिकाएं एवं शोध जर्नल्स उपलब्ध हैं। 08 न्यूज पेपर (दैनिक/साप्ताहिक) भी अध्ययन हेतु उपलब्ध है। इसके साथ ही 07 स्मार्ट क्लास रूम और 01 वर्चुअल क्लास रूम भी विद्यार्थियों के लाभार्थ उपलब्ध है, एवम् रसायन शास्त्र विभाग में रूसा के सहयोग से **Atomic Absorption Spectrophotometer** का 2020 में संस्थापन किया गया जो कि आधुनिक शोध का महत्वपूर्ण उपकरण है।

संस्था का ध्येय

''लक्ष्य आधारित गुणात्मक शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में स्थापित होकर समाज का निर्णायक एवं विकासात्मक गतिविधियों में सक्रिय एवं सार्थक सहभागिता हेतु छात्र-छात्राओं को सशक्त एवं सम्पूर्ण नागरिक बनाने में शिक्षा का सदुपयोग करना।''

उद्देश्य

- समाज के आर्थिक रूप से कमजोर एवं उच्च शिक्षा से वंचित छात्र एवं छात्राओं को गुणात्मक शिक्षा एवं शोध के अवसर प्रदान करना।
- वैश्विक समाज के परिदृश्य के अनुरूप आवश्यक व्यावसायिक एवं विस्तार के क्षेत्रों में युवा-पीढ़ी के कौशल को तराशना व दक्षता प्रदान करना।
- युवाओं में आत्म-विश्वास का संचार, व्यक्तित्व-विकास, अनुसंधानात्मक प्रवृत्तियों, समानता की भावना तथा राष्ट्र-प्रेम की भावना प्रस्फुटित करने हेतु वातावरण प्रदान करना।
- ज्ञानपूर्ण एवं कल्याणकारी समाज के सतत उन्नयन के लिये शिक्षा के सदुपयोग से मुख्य भूमिका का निर्वहन करना।
- महाविद्यालय के सभी शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कार्यक्रमों की दिशा विद्यार्थियों को समाज के नव निर्माण, समानता के अधिकार एवं गरिमामय व्यक्तित्व की सीख देने की ओर केन्द्रित होगी ताकि समुचित शिक्षा के आलोक से विद्यार्थी एक सुसंस्कृत, उत्तरदायी, संवेदनशील व्यक्ति तथा देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सके। ❑❑

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
प्राचार्य के उद्‌गार...	10
संपादकीय...	11
महाविद्यालय एक नजर में...	12
संस्था का ध्येय	14
प्रतिवेदन संदर्भ	
पुस्तकालय	17
राष्ट्रीय छात्र सेना(एन.सी.सी.)	22
राष्ट्रीय सेवा योजना(एन.एस.एस.)	23
क्रीड़ा विभाग	24
स्वामी विवेकानंद कॅरिअर...	27
व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ	30
महाविद्यालय में संचालित योजनाएं	31
समिति प्रतिवेदन	
आई.क्यू.ए.सी. समिति	35
साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति	36
वनस्पतिशास्त्र विभाग	37
प्राणीशास्त्र विभाग	38
रसायनशास्त्र विभाग	40
भौतिकशास्त्र विभाग	41
गणित विभाग	42
वाणिज्य विभाग	43
गृह विज्ञान विभाग	44
अर्थशास्त्र विभाग	44
इतिहास विभाग	45
भूगोल विभाग	45
राजनीतिशास्त्र विभाग	46
समाजशास्त्र विभाग	47
हिन्दी विभाग	48
अंग्रेजी विभाग	49
सफलता की कहानी	
वंदना रमनानी	52
फातिमा अहमद	53
शिवम लोटस्वे	54
रचना संदर्भ	
मेरी माँ	56
मेरी अभिलाषा	56
बंद करो वृक्षों की कटाई	57
पेड़	58
नन्ही परी	58
अनमोल बेटियाँ	59
नशा नाश है	59
रूको नहीं बढ़े चलो	60

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
बचपन	60
नवोन्मेष	61
परीक्षा पास	62
तुम कौन	63
घर जाना है	64
The Idea of Love	65
AlPHABET OF LIFE MORAL	66
पुरजन जी	67
जो मोबाईल में खो गया है	69
हमें कभी उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिये	70
गाँधी विचार और समसामयिक	71
मौलाना अबुल कलाम	74
कोरोना का समाज पर प्रभाव	75
रानी अवंति बाई लोधी	76
सबसे अच्छा	77
जनभागीदारी और महाविद्यालय.....	78
विकास की अवधारणाः एक विमर्श	79
बच्चों के मानसिक विकास में.....	80
मानसिक स्वास्थ्य	81
इस तरह समझा गाँधी को.....	83
लघु प्रसंग	85
नेहरू ओर धर्म निरपेक्षता	86
अपने विद्यार्थियों को योग्य.....	87
स्वामी विवेकानंद का युवाओं को संदेश	88
महाविद्यालय परिसर में खेलों के प्रति.....	89
स्वाधीनता संघर्ष में वनराजों की.....	91
कोरोना वैक्सीन के संबंध में.....	92
Traditional knowledge for…	93
आज भी खरे हैं तालाब....	94
Elysia chlorotica the photosynthetic…	95
क्या आप जानते है?	96
Plagiarism	97
My 90 Years old mother…	99
Self Reliance	102
सिंगल यूज प्लास्टिक	103
Important Issue in Abolition of….	105
Education is the key to women….	107
नवाचार	
छत पर बागवानी	109
एक भारत श्रेष्ठ भारत	111
महाविद्यालय की छलकियाँ	123

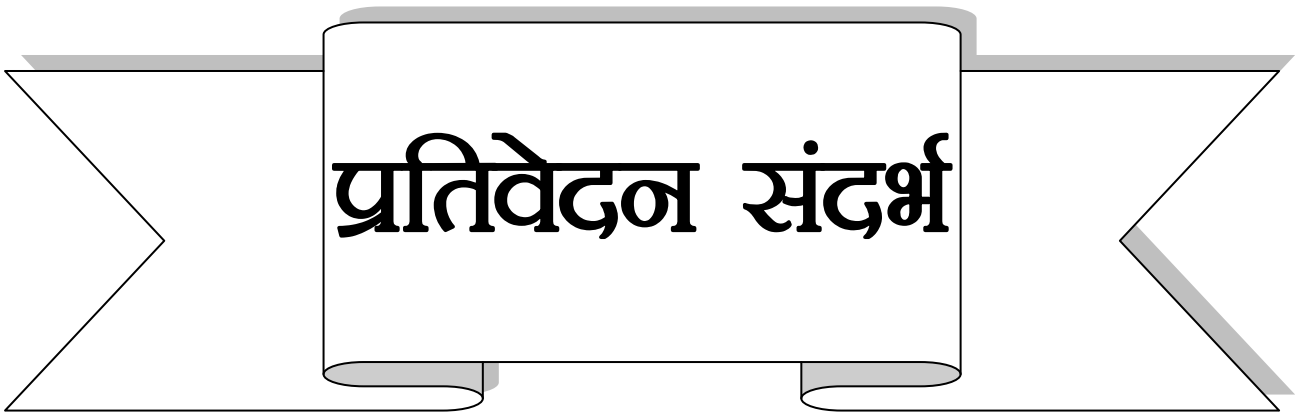
प्रतिवेदन संदर्भ

पुस्तकालय प्रतिवेदन

■ के.एल. खांडपा
पुस्तकालयाध्यक्ष

आधुनिक सूचना क्रांति उद्योग एवं सार्वभौमिक ज्ञान जगत के इस युग में किसी भी शिक्षण संस्था में उसके अपने पुस्तकालय की अहम् एवं महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए पुस्तकालयों को **''हृदय स्थल''** या प्रमुख सूचना केन्द्र या सूचना तंत्र के नेटवर्क का केन्द्र भी कहा जाता है।

पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था होने के साथ–साथ निरन्तर उत्तरोत्तर ज्ञानवर्धनशील संस्था है। इसी कड़ी में हमारा अपने शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर (पुराना बेनजीर) महाविद्यालय, भोपाल का पुस्तकालय भी उच्च शिक्षा में गुणवत्ता प्रबंधन–वृद्धि–विस्तार में निरन्तर विकास की ओर अग्रसर होकर **''बेनजीर''** है ।

वर्तमान में लगभग 25887/– पुस्तकों का विशाल संग्रह पुस्तकालय में संग्रहित है जिसमें यू.जी.सी., बुक बैंक, सामान्य योजनान्तर्गत एवं जनभागीदारी मद से क्रय की गई पुस्तकें शामिल हैं। उपर्युक्त योजनाओं में छात्रहित में सेमेस्टर आधारित पाठ्य पुस्तकें एवं मौलिक विषयों के संदर्भ ग्रन्थ जिसमें भारतीय संस्कृति, भारतीय–संविधान, विवेकानन्द साहित्य, कैरियर विषयों की रोजगारोन्मुखी जानकारी विषयक पुस्तकें, भारतीय त्यौहार, महापुरूषों की जीवनियाँ, स्वतंत्रता संबंधित एवं भारतीय इतिहास, धर्म आदि की पुस्तकें क्रय की गई। सत्र 2020–21 में महाविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संख्या लगभग 3000 हैं। इन सभी 3000 विद्यार्थियों का 3500 + 8167 (अनुसूचित जाति, जनजाति सहित) पुस्तकें प्रदाय एवं वापसी कार्य किये गये। पुस्तकें प्रदाय वापसी कार्य निरन्तर जारी रहता है। सत्र 2020–21 में पुस्तकालय में नंबर ऑफ रीडर्स की संख्या 7570 लगभग रही। पुस्तकालय से विद्यार्थियों को Library cum Identity card – 1400 जारी किये गये।

महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणी शास्त्र, गणित, वाणिज्य, कम्प्यूटर साइंस/एप्लीकेशन्स, बॉयोटेक्नोलॉजी, गृह विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल तथा **स्नातकोत्तर स्तर** पर गणित, रसायनशास्त्र, वाणिज्य, प्राणीशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास विषय संचालित है। सभी विषय की नवीनतम् वार्षिक पद्धति एवं सेमेस्टर–वाइज, संदर्भ–ग्रन्थ/मौलिक पुस्तकें आवश्यकतानुसार पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। **पुस्तकालय में विद्यार्थियों को नवीनतम् समसामयिक एवं अद्यतन ज्ञान, जानकारी प्राप्त हो, इसके लिए 8 दैनिक समाचार पत्र (हिन्दी एवं अंग्रेजी) आ रहे हैं** :– 1. दैनिक भास्कर, 2. दैनिक जागरण, 3. राज एक्सप्रेस, 4. पत्रिका, 5. नवदुनिया, 6. पीपुल्स समाचार, 7. टाइम्स ऑफ इण्डिया, 8. हरि–भूमि

ज्ञानवर्धन और प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं की तैयारी हेतु तथा रोजगारोन्मुखी जानकारी हेतु पुस्तकालय में निम्नलिखित सामयिकी पत्रिकाएँ आ रही हैं जिसमें :– 1. रोजगार और निर्माण, 2. रोजगार–समाचार, 3. प्रतियोगिता दर्पण, 4. कम्पीटिशन सक्सेस रिव्यू, 5. इण्डिया टुडे, 6. कुरुक्षेत्र, 7. योजना, 8. काम्पटीशन इन फोकस, 9. रीडर्स–डायजेस्ट, 10. मध्यप्रदेश संदेश, 11 रचना, 12. कॅरियर्स 360, 13. अहा–जिंदगी आदि शामिल हैं।

विद्यार्थियों को उनके अपने विषयों की मौलिक एवं गहनतम् जानकारी प्राप्त हो तथा उन्हें अपने शोध कार्यों में रचनात्मक / सहयोग मिले इस दृष्टिकोण से विषय प्रमुखों की अनुशंसा **अनुसार पुस्तकालय में निम्नलिखित जर्नल्स् सत्रः 2013–14 से निरन्तर आ रहे हैं।**

JOURNALS :

1. Indian Journal of Chemistry Section A
2. Indian Journal of Chemistry Section B
3. Indian Journal of Experimental Biology
4. Indian Journal of Pure & Applied Physics
5. Indian Journal of Chemical Technology

6. Indian Journal of Biochemistry & Biophysics
7. Indian Journal of Biotechnology
8. Indian Journal of Natural Products& Resources
9. The Indian journals of Commerce
10. Pramana journal of Physics
11. Indian Journal of Bio-Sciences
12. Journal of Genetics
13. Proceedings (Mathematical Science)
14. Journal of Chemical Sciences
15. Current Science

प्रारंभ से आज तक पुस्तकालय में क्रय की जाने वाली पुस्तकों की संख्या :–

1.	यू.जी.सी. मद	–	11175
2.	शासकीय मद	–	9908
3.	बुक बैंक	–	4566
4.	जनभागीदारी मद	–	3387
	कुल पुस्तकें		**29036**

इन 29036 पुस्तकों में से प्रारंभ से आज दिनांक तक अपलेखन की गयी पुस्तकों की संख्या 6073 है, अतः वर्तमान में 22963 पुस्तकें पुस्तकालय में उपलब्ध है।

सत्र 2020–21 में अजा/अजजा के विद्यार्थियों को निःशुल्क पुस्तकें 15521 क्रय की गई एवं वितरित की गयी जो कि वापस नहीं होना है, जिसका विवरण निम्नानुसार :–

क्र.	वर्ग	छात्र	छात्राएं	कुल	स्टेशनरी राशि	पुस्तकें राशि	कुल राशि	कुल वितरित की गई पुस्तके
1.	अ.जा. (SC)	539	160	699	अप्राप्त	662706	862706	9815
2.	अजजा (ST)	248	52	300	अप्राप्त	449421	449421	5706
कुल योग		639	787	212	999	अप्राप्त	1312127	15521

विभिन्न समितियों में सौंपे गए उत्तरदायित्वों का विवरण

क्र.	सत्र	समितियों के नाम	समिति के पद
01	2020–21	1. पुस्तकालय समिति	सदस्य
		2. अपलेखन समिति	सदस्य
		3. जनभागीदारी समिति	सदस्य
		4. क्रय समिति	सदस्य

पुस्तकालय परिसर में Wi-Fi की सुविधा

शासन के आदेशानुसार पुस्तकालय परिसर में दिनांक 26/06/2014 से Wi-Fi की सुविधा उपलब्ध है। इससे महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थीगण एवं स्टॉफ कॅरियर से संबंधित/प्रतियोगिता परीक्षाओं एवं विभिन्न विभागों में रिक्त पदों आदि की अद्यतन जानकारियाँ प्राप्त कर लाभान्वित हो रहे हैं।

पुस्तकालय ऑटोमेशन

कार्यालय, आयुक्त, उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार महाविद्यालय पुस्तकालय को पूर्ण रूप से कम्प्यूटरीकृत किया जा रहा है। विगत सत्र में लगभग 15–16 हजार पुस्तकों को कम्प्यूटरीकृत किया जा चुका है। शेष बची सभी आवश्यकतानुसार उपयोग में आने वाली पुस्तकें का भी SOUL-2.0 में सॉफ्टवेयर में कम्प्यूटरीकृत किया जाएगा। पुस्तकों की डेटा–एन्ट्री, बारकोडिंग, विद्यार्थियों की मेम्बरशिप, स्टॉफ की मेम्बरशिप आदि सभी स्वचालन प्रक्रिया की समस्त कार्यवाही वर्तमान सत्र 2020–21 में संबंधित कार्यवाही जारी है। आगामी दिनों में पुस्तकालय स्वचालन संबंधित सभी कार्य पूर्ण करके पुस्तकों का प्रदाय वापसी कार्य कम्पयूटर के माध्यम से किया जावेगा।

पुस्तकालय अध्यक्ष की सत्र् 2018–19 से 2020–21 तक की अकादमिक उपलब्धियाँः–

पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री के.एल. खांडपा की Seminar/Workshop/Training में सहभागिता निम्नानुसार रहीः–

1. शासकीय महाविद्यालय थांदला (जिला झाबुआ) द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी–(दिनांक 08.–09 फरवरी 2019) मध्यप्रदेश की जनजातियों के अर्थिक विकास में शासकीय योजनाओं की भूमिका'' में शामिल होकर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।
2. NIFT भोपाल में दिनांक 11 अगस्त 2019 को MPLA भोपाल द्वारा आयोजित Transformation Of the Library Resource and services in digital Era (TLRSD -2019) में सहभागिता की।
3. MPLA एवं McGraw Hill द्वारा आयोजित एक दिवसीय वेबीनार "Demystifying E-Resources" दिनांक 07.06.2020 में सहभागिता की।
4. शासकीय पी.जी. महाविद्यालय, नरसिंहगढ़ जिला राजगढ़ (म.प्र.) द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार "How to use open Access e-Resources" organized by Department of Library:- में सहभागिता की।
5. UPLA with RFI & EYF उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित International Virtual Conferences "Role of Library Professional during Covid-19: Issues and Challenges" दिनांक 21–22 जून, 2020 में सहभागिता की।
6. IEHE, भोपाल द्वारा आयोजित एक दिवसीय e-Seminar "Open Access Electronic Resources for Academic & Research" दिनांक 30 जून, 2020 में सहभागिता की।
7. शासकीय कन्या पी.जी. महाविद्यालय, उज्जैन द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबीनार Envioronment Around us" दिनांक 20.07.2020 में सहभागिता की।
8. शासकीय नर्मदा महाविद्यालय, होशंगाबाद (म.प्र.) द्वारा आयोजित "One week online faculty development program" दिनांक 20.07.2020 से 31.07.2020 में सहभागिता की।
9. किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान स्वशासी महाविद्यालय, रायगढ़ (छत्तीसगढ़) द्वारा द्वि–दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वेबीनार ''छायावाद के सौ वर्ष एवं पद्मश्री पं. मुकुटधर पाण्डेय'' दिनांक 28–29 जुलाई, 2020 में प्रतिभागी के रूप में सहभागिता की तथा ''पं. मुकुटधर पाण्डेय एक अध्ययन'' शोध–पत्र प्रस्तुत किया।
10. शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय भोपाल द्वारा आयोजित ''इतिहास में दर्ज वैश्विक महामारी का विश्व– राजनीति, अर्थव्यवस्था व संस्कृति पर प्रभाव'' दिनांक 05.08.2020 में सहभागिता की।
11. LISPAB एवं Baruipur College (W.B.) एवं SSCE (W.B.) द्वारा आयोजित दो–दिवसीय वेबीनार – "Virtual Education & Role of Libraries" दिनांक 8–9 अगस्त, 2020 में प्रतिभागी के रूप में सहभागिता की।

12. NDLI- MHRD भारत सरकार द्वारा आयोजित "NDLI User Awareness Webinar" दिनांक 17.08.2020 में सहभागिता।
13. शासकीय कन्या पी.जी. महाविद्यालय, उज्जैन एवं MANIT भोपाल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबीनार ''हमारी संस्कृति हमारे संस्कार'' दिनांक 25 अगस्त, 2020 में सहभागिता।
14. RILIS, पटना द्वारा आयोजित दस दिवसीय online training of library Automation Software (KOHA)" दिनांक 21.11.2020 से 30.11.2020 में सहभागिता की।
15. शासकीय स्वशासी कन्या पी.जी. एक्सीलेंस महाविद्यालय, सागर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबीनार'' भारतीय संविधान और डॉ. भीमराव अम्बेडकर'' दिनांक 28.11.2020 में सहभागिता की।
16. शासकीय पी.जी. महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.) द्वारा आयोजित नेशनल वेबीनार "E-Resources and its use" दिनांक 19.12.2020 में सहभागिता की।

दिनांक 16.02.2021 को महाविद्यालय में पुस्तकालय विभाग द्वारा एक दिवसीय बेवीनार का आयोजन किया गया। जिसका विषय ''21 वीं सदी में पुस्तकालयों का रूपांतरण एवं लाईब्रेरियन की भूमिका'' था। जिसमें डॉ. संजय कटारिया, लाइब्रेरियन, वेनिट वि.वि., ग्रेटर नोयडा, डॉ. संदीप कुमार पाठक, डिप्टी लाइब्रेरियन आयशर, भोपाल, डॉ. प्रभात कुमार पाण्डे, लाइब्रेरियन, शासकीय नूतन कॉलेज, भोपाल ने अलग–अलग विषयों पर ऑनलाईन व्याख्यान दिये जिससे सभी लाभान्वित हुए। लगभग 250 प्रतिभागियों को E-Certificate जारी किये गये।

<u>पुस्तकालय अध्यक्ष की अन्य उपलब्धियाँ</u> :–

1. सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंध परिषद्, एस.आर.एफ. रिसर्च फाउण्डेशन, रेडियंट ऑफ इंस्टीट्यूशन, जबलपुर (म.प्र.) भारत द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ''भारतीय साहित्य की विकास यात्रा'' दिनांक 25 अप्रेल, 2021 में सहभागिता की।
2. सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंध परिषद्, जबलपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कांफ्रेस ''युवा भारत विकास और चुनौतियों'' दिनांक 29–30 मई, 2021 में सहभागिता की तथा ''भारतीय संस्कृति और आज की युवा पीढ़ी'' शोध पत्र प्रस्तुत किया, जो A monthly Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2394-3580, Vol. 8, No. 7, May, 2021 जर्नल में प्रकाशित हुआ।
3. सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंध परिषद्, जबलपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कांफ्रेस "Tribal Development in India Policies & Program" दिनांक 01 मई, 2021 में सहभागिता की एवं ''जनजातियों में शिक्षा का विकास एक अध्ययनः विशेष रूप से झाबुआ जिले के सन्दर्भ में।'' शोध पत्र प्रस्तुत किया जिसका A monthly journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2394-3580, Vol. 8, No. 7, May, 2021 जर्नल में प्रकाशन हुआ।
4. सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंध परिषद् जबलपुर द्वारा आयोजित International Conference on Economic Development and Environment दिनांक 06 जून, 2021 में सहभागिता की एवं जिसमें ''झाबुआ जिले की भील जनजाति का कृषि जीविकोपार्जन एवं आर्थिक, सामाजिक विकास एक अध्ययनः विशेष रूप से थांदला तहसील के संदर्भ में– शोध पत्र प्रस्तुत किया जिसका प्रकाशन "Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research Journal. ISSN: 2581-8872, Vol. 3, No. 5 5 जून, 2021 में हुआ।
5. शासकीय ऑटोनोमस पी.जी. कॉलेज, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) द्वारा आयोजित "National Webinar on Influence of Information Technology in Libraries" दिनांक 05.01.2021 में सहभागिता की।

6. Rangnathan Institute of Library & Information Science पटना द्वारा आयोजित दस दिवसीय Online training of Library Automation Software (Koha) दिनांक 11–20 जनवरी, 2021 में शामिल हुआ।
7. शासकीय डिग्री कॉलेज जावरनगर,सीहोर (म.प्र.) द्वारा आयोजित एक दिवसीय वेबीनार "Awareness and use of E-Resources in Academic Libraries" दिनांक 24.01.2021 में सहभागिता की।
8. शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार– Transformation of Libraries and Librarionship 21st Century" दिनांक 16 फरवरी, 2021 में सहभागिता की।
9. शासकीय महाविद्यालय शाहपुर जिला बैतूल (म.प्र.) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबीनार "Role of E-Resources and its usage for Students" दिनांक 20.02.2021 में सहभागिता की।
10. उपरोक्त के अतिरिक्त भी पुस्तकालय विज्ञान से संबंधित लगभग 50 अन्य राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय वेबीनारों एवं E-Quiz में सहभागिता की।

म.प्र.शासन की योजना अंतर्गत एस.सी./एस.टी. विद्यार्थियों को निःशुल्क राशि 1500/– रूपये की पुस्तकें वितरित करते हुए पुस्तकालय अध्यक्ष एवं पुस्तकालय अध्ययन कक्ष।

"राष्ट्रीय छात्र सेना (एन.सी.सी.)"

■ डॉ. देवेन्द्र पटेल
एन.सी.सी. प्रभारी

महाविद्यालय में वर्ष 2000 से एन.सी.सी., आर्मी विंग सीनियर डिवीजन की प्लाटून एसोसिएट एन.सी.सी. ऑफिसर मेजर संजय तेलंग के मार्गदर्शन में कार्यरत है। जिसमें छात्र छात्राओं हेतु सीटों की निर्धारित संख्या 53 है।

सत्र् 2018–19 व 2019–20 में कैडेट्स नें कुल 20 रविवार शा. मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय, भोपाल के मैदान पर (जहां 4 म.प्र. बटालियन एन.सी.सी., भोपाल स्थित है) पाठ्यक्रमानुसार एन.सी.सी. का नियमित प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके अलावा कैडेट्स नें फायरिंग रेंज पर अलग से ''फायरिग'' का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया, साथ ही साथ कैडेट्स नें विभिन्न प्रकार के शिविरों जैसे–संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर, राष्ट्रीय एकता शिविर व आर्मी अटेचमेंट शिविर आदि में भी भागीदारी की। महाविद्यालय के चयनित कैडेट्स ने स्वाधीनता दिवस व गणतंत्र दिवस के सुअवसरों पर लाल परेड मैदान पर तथा भोपाल मे होने वाली जिला स्तरीय परेड में भी भागीदारी की। कैडेट्स के द्वारा एन.सी.सी. दिवस पर आयोजित गतिविधियों व कार्यक्रमों में उत्साहवर्धक रूप से भाग लिया। सत्र् 2019–20 मे स्वाधीनता दिवस व गणतंत्र दिवस पर महाविद्यालय परिसर में कैडेट्स के द्वारा ड्रिल व देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया गया। वृक्षारोपण, रक्तदान, एड्स जागरूकता, स्वास्थ्य जागरूकता, कौमी एकता, मरीजों व वृद्धों को सहायता आदि में कैडेट्स ने अपना सक्रिय योगदान दिया। इसके साथ ही सत्र के दौरान स्वच्छता अभियान व पर्यावरण जागरूकता अभियान इकाई द्वारा विशेष रूप से चलाया गया। कैडेट्स के द्वारा नशे की बुराईयों से भी लोगों को जागरूक किया गया। दिनांक 11 जनवरी से 17 जनवरी तक ''यातायात सुरक्षा सप्ताह'' भी मनाया गया।

सत्र् 2018–19 में अंडर आफिसर रवि चन्द्रवंशी को प्लाटून का सर्वश्रेष्ठ कैडेट तथा सत्र् 2019–20 हेतु अंडर आफिसर प्रद्युम्न उदयनिया को सर्वश्रेष्ठ कैडेट चुना गया। सत्र् 2020–21 में कैडेट्, पंकज पाण्डे एन.सी.सी. दल का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

दिनांक 10 मार्च 2020 को मेजर संजय तेलंग का NCC- ANO का कार्यकाल समाप्त हो गया। इसके उपरांत डॉ. देवेन्द्र सिह पटेल, सहा. प्राध्यापक, बॉटनी को NCC का प्रभार दिनांक 18 मार्च 2020 को सौंपा गया।

सत्र् 2020–21 में एन.सी.सी. कैडेट्स ने विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों में हिस्सेदारी की। कोरोना महामारी के दौर में वॉलन्टीयर सेवाओं में कैडेट्स ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। 21 जून 2020 को अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस पर सभी कैडेट्स ने हिस्सेदारी की। 08 जुलाई से 15 जुलाई तक वृक्षारोपण पखवाड़ा मनाया एवं कैडेट्स ने अनेक पौधे रोपे। बेवीनार के माध्यम से विद्यार्थियों को उद्यमिता, रोजगार, एन.सी.सी. में कॅरिअर, एन.जी.ओ. के संगठन आदि से परिचित कराया गया। महाविद्यालय परिसर में एवं बाहर रैली निकालकर नशा–मुक्ति का संदेश दिया गया। 2021 में भी कैडेट्स ने पूर्व वर्ष की भांति 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस व 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। एन.सी.सी. प्रभारी डॉ. देवन्द्र सिंह पटेल PRCN कोर्स में चयन उपरांत वर्तमान में 26 जुलाई से 23 अक्टूबर 2021 तक के लिए नागपुर, ओ.टी.ए. (ऑफीसर्स ट्रेनिंग अकेडमी) में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, जिसके उपरांत उनको ए.एन.ओ. का दर्जा मिल जाएगा। साथ ही लेफ्टिनेंट के रूप में कमीशन्ड हो जाएंगे। महाविद्यालय के कुछ चयनित कैडेट्स अन्य महाविद्यालयों की एयरविंग व नेवल विंग की एन.सी.सी. की सबयुनिट्स से सम्बद्ध होकर एन.सी.सी. का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

''राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)''

- डॉ. राकेश सक्सेना
- डॉ. मुकेश नापित
- डॉ. हेमलता वर्मा

(कार्यक्रम अधिकारी)

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की पुरूष एवं महिला इकाई कार्यरत है। **डॉ. राकेश सक्सेना** एवं **डॉ. मुकेश नापित**, पुरूष इकाई के तथा **डॉ. हेमलता वर्मा**, महिला इकाई के कार्यक्रम अधिकारी हैं। **पुरूष इकाई में 100 छात्र** एवं **महिला इकाई में 100 छात्राएं** पंजीकृत हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत तीनों इकाईयों में सम्मिलित रूप से वर्ष के दौरान ऐच्छिक एवं अनिवार्य गतिविधियों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें मुख्य रूप से वृक्षारोपण, पर्यावरण स्वच्छता संबंधी कार्य, विशेष दिवस– विश्व योग दिवस, सद्भावना दिवस, रक्तदान दिवस, नशा मुक्ति दिवस, एड्स दिवस इत्यादि से संबंधित कार्यक्रम किये गये। विभिन्न महत्वपूर्ण गतिविधियों में रैली, पोस्टर, स्लोगन, परिचर्चा, प्रश्नमंच आदि के माध्यम से जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया गया। इसके अतिरिक्त स्वयंसेवकों द्वारा कार्यक्रम अधिकारियों के निर्देशन में जहांगीराबाद बस्ती क्षेत्र के शाला त्यागी बच्चों का सर्वेक्षण किया गया एवं संबंधित क्षेत्र में गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों का सर्वेक्षण कर उन्हें शासन द्वारा संचालित जनहित योजनाओं से अवगत कराया।

सत्र 2018–19 में सात दिवसीय विशेष शिविर का **ग्राम–पंचायत आयुषग्राम, रातीबड़, भोपाल** में **दिनांक 16.03.19 से 22.03.19** तक आयोजन किया गया।

सत्र 2019–20 में रा.से.योजना **महिला इकाई** द्वारा **ग्राम– मेण्डोरा भोपाल** में व **पुरूष इकाई** द्वारा **ग्राम– बरखेड़ी, रातीबड़** में **दिनांक 02 से 08 मार्च 2020** तक पृथक–पृथक विशेष शिविर का आयोजन किया गया।

रवि चौहान ने नागपुर में आयोजित भारत सरकार के राष्ट्रीय शिविर में भागीदारी की (2018–19)। राष्ट्रीय सेवा योजना गणतंत्र दिवस परेड हेतु महाविद्यालय के छात्र ऋषभ शर्मा का चयन पहले विश्वविद्यालय स्तर पर, फिर म.प्र. स्तर पर हुआ। कोरोना काल में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने कोराना पीड़ितों की मदद के लिए समय–समय पर कार्य किया।

क्रीड़ा विभाग

■ डॉ. सतीश कुमार

क्रीड़ा अधिकारी

क्रीड़ा विभाग का उददे्श्य है कि महाविद्यालय के ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी खेल गतिविधियों में सहभागिता कर सकें। खेल ही एक ऐसा माध्यम है जिससे किसी भी इंसान का शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं भावनात्मक विकास होता है। इंसान को सफल होने के लिए असफल होना ही पड़ता है लेकिन असफल होने के बाद भी जब कोई लगातार मेहनत करता है तभी सफल होता है। खेल ही एक ऐसा माध्यम है जहाँ इंसान रोज हारता और जीतता हैं।

सत्र् 2018–19 में महाविद्यालय की खेल गतिविधियाँ मध्य प्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग एवं बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल के खेल कैलेण्डर के अनुसार संचालित की गईं। विभिन्न खेल विधाओं में महाविद्यालय के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

1. **जिला स्तरीय प्रतियोगिता –** क्रिकेट , फुटबॉल , व्हॉलीबॉल , खो–खो, कबड्डी, टेबिल–टेनिस, शतरंज, बैडमिंटन।
2. **संभाग स्तर/अंतर–महाविद्यालयीन प्रतियोगिता –** एथेलेटिक्स, बॉक्सिंग, हैण्डबॉल, बेसबॉल, बॉल बैडमिंटन, खो–खो, क्रॉस कंट्री।
3. **महाविद्यालय की टीम जिला स्तर पर बैडमिंटन प्रतियोगिता में उपविजेता रही।**
4. **बॉल बैडमिंटन –** अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालयीन बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्रा अंशिका ठाकुर ने बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल के बॉल बैडमिंटन दल का प्रतिनिधित्व करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।
5. **बेसबॉल –** महाविद्यालय के छात्र श्री गौरव शाक्य ने अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालयीन बेसबॉल प्रतियोगिता में बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल का प्रतिनिधित्व करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।
6. **हैण्डबॉल –** पश्चिम क्षेत्रीय अंतर विश्वविद्यालयीन हैण्डबॉल प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्रा– 'रंजना पटेल' ने बरकतउल्ला विश्वविद्यालय हैण्डबॉल दल का प्रतिनिधित्व करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।
7. **ड्रॉप रोबॉल –** अखिल भारतीय ड्रॉप रोबॉल प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्र 'श्री अमन बामोरिया' ने **रजत पदक** प्राप्त किया।
8. **बॉक्सिंग –** राज्य स्तरीय बॉक्सिंग प्रतियोगिता में महाविद्यालय में छात्र श्री रजनीश कुमार ने **रजत पदक** प्राप्त किया।
9. महाविद्यालय के शिक्षकों ने म.प्र.शासन उच्च शिक्षा विभाग द्वारा संचालित शिक्षक/कर्मचारी प्रतियोगिता में उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन किया –
    - डॉ. संजय तेलंग– राज्य स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता में विजेता दल के सदस्य।
    - डॉ. हरनीत चीमा– राज्य स्तरीय बैडमिंटन प्रतियोगिता मे विजेता दल की सदस्य।
    - डॉ.. हर्षा जालोरी– राज्य स्तरीय बैडमिंटन प्रतियोगिता में विजेता दल की सदस्य।
    - डॉ. राकेश सक्सेना– राज्य स्तरीय टेनिस प्रतियोगिता में सहभागिता।
    - डॉ. सतीश कुमार– राज्य स्तरीय टेनिस प्रतियोगिता में सहभागिता।
10. महाविद्यालयीन खो–खो दल हेतु 10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन।
11. भोपाल जिला खो–खो दल हेतु प्रशिक्षण शिविर का आयोजन।
12. भोपाल जिला खो–खो दल का व्यवस्थापक।
13. जिला स्तरीय खो–खो प्रतियोगिता का आयोजन।
14. जिला स्तरीय खो–खो प्रतियोगिता का आयोजन सचिव।
15. संभाग स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता के चयन समिति का सदस्य।
16. जिला स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता के चयन समिति का सदस्य।

17. क्रीड़ा अधिकारी डॉ. सतीश कुमार महाविद्यालयीन निम्नलिखित समितियों के सदस्य हैं–

1. **क्रय समिति 2. क्रीड़ा समिति 3. स्वच्छता समिति 4. अनुशासन समिति**
5. **छात्र संघ समिति**

18. बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल की क्रय समिति का सदस्य।

19. अखिल भारतीय शारीरिक शिक्षा परिषद् का सदस्य।

20. रेड क्रॉस सोसाइटी का आजीवन सदस्य।

सत्र् 2019–20 में महाविद्यालय की खेल गतिविधियाँ मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग एवं बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय के खेल कैलेण्डर के अनुसार संचालित की गयी। खेल गतिविधियों में महाविद्यालय के विद्यार्थियों का प्रदर्शन बहुत ही सराहनीय रहा।

जिला स्तर– कुश्ती, बैडमिंटन, कबड्डी, फुटबॉल, शंतरंज, टेबल–टेनिस एवंम् क्रिकेट।

संभाग स्तर/अंतरमहाविद्यालयीन स्तर– क्रॉस कंट्री, साफ्टॅबॉल, तैराकी, हैण्डबॉल, बॉक्सिंग, बॉल बैडमिंटन, एथलेटिक्स, क्याकिंग एवं केनोईंग एवं कराटे।

राज्य स्तर–टेबल टेनिस, कुश्ती एवं बॉक्सिंग उपलब्धियाँ–

पैसा पोलो–

महाविद्यालय के छात्र श्री गौरव शाक्य ने वर्ल्ड कप पैसा पोलो प्रतिसोगिता में उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन किया।

कराटे–

महाविद्यालय के छात्र श्री आशुतोष पांडे ने अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालयीन कराटे प्रतियोगिता में बरकतउललाह विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

बॉक्सिंग–

राज्य स्तरीय बॉक्सिंग, प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्र श्री रजनीश सिंह ने रजत पदक प्राप्त किया।

टेबल–टेनिस–

राज्य स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्रा मोहनी गुप्ता ने रजत पदक प्राप्त किया।

साफ्टबॉल–

महाविद्यालय के छात्र श्री राकेश अहिरवार एवं दुर्गेश उइके ने अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालयीन साफ्ट बॉल प्रतियोगिता में बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

केनोइंग–

महाविद्यालय के छात्र श्री निखिल सेन एवं राजेन्द्र ने अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालयीन केनोइंग प्रतियोगिता में बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

हैण्डबॉल–

महाविद्यालय के छात्र श्री राजपाल लोधी ने पश्चिम क्षेत्र अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

कुश्ती–

राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्र श्री विजय कनर्जी, कांस्य पदक विजेता रहे।

आयोजन–

महाविद्यालय के क्रीड़ा विभाग द्वारा जिला स्तरीय जूडो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

राज्य स्तरीय शिक्षक/कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता में सहभागिता–जबलपुर में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षक/कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता में महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. संजय तेलंग, डॉ. हर्षा जालौरी एवं क्रीड़ा अधिकारी, डॉ. सतीश कुमार ने भोपाल नर्मदापुरम संभाग दल का प्रतिनिधित्व किया।

सत्र 2020–21 में कोविड के कारण मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग एवं बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय का खेल कैलेण्डर जारी न होने के कारण प्रतियोगिताओं का आयोजन नहीं किया जा सका।

स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना

(म.प्र. शासन, उच्च शिक्षा विभाग की महत्वपूर्ण योजना)

हर सुबह एक नयी उम्मीद की किरण है,
हर सुबह एक नई जंग है,
जीतता वही है, जिसके दम में दम है।

▪ **डॉ. आशा वर्मा**
प्राध्यापक रसायनशास्त्र एवं प्रकोष्ठ प्रभारी

उच्च शिक्षा विभाग म.प्र. की एक बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना "**स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ**" के अंतर्गत महाविद्यालय में विद्यार्थियों के कॅरियर एवं भविष्य को दृष्टिगत रखते हुये कैलेन्डर के अनुसार समय–समय पर सेमीनार, वर्कशॉप, अल्पावधि रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया साथ ही अन्य महाविद्यालय में आयोजित कॅरियर अवसर मेलों एवं कैम्पस में भागीदारी हेतु प्रोत्साहित किया गया।

2018.19 में प्रकोष्ठ द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियॉ एवं कैम्पस ड्राईव आदि निम्नानुसार है।

कॅरियर फेयर– दिनांक 29.01.19 एवं 30.01.19 को उत्कृष्टता संस्थान में आयोजित कॅरियर अवसर मेले में विद्यार्थियों ने सहभागिता दी।

नियमित गतिविधियाँ / व्याख्यान / वर्कशाप –

26.02.19– Excellence Tally Bhopal द्वारा महाविद्यालय में VI Semester के विद्यार्थियों का **Tally Commerce Aptitude Test** लिया गया जिसमें 40 विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता दी।

25.02.19 एवं 26.02.19– रोजगार विभाग द्वारा प्रायोजित एवं महाविद्यालय द्वारा आयोजित कॅरियर प्रर्दशनी का आयोजन किया गया जिसमें श्री अतुल शर्मा द्वारा विद्यार्थियों को National Career Scheme के बारे में पूर्ण जानकारी एवं मार्गदर्शन देकर Portal पर पंजीयन के बारे में बताया गया।

22.11.18– Unique Academy Nagpur की Indore Branch द्वारा MPPSC Test Series द्वारा विद्यार्थियों की तैयारी का आकलन किया गया। जिसमें 50 विद्यार्थियों द्वारा सहभागिता दी गई Unique Academic द्वारा महाविद्यालय को UPSC के प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा की तैयारी हेतु किताबों का set भी प्रदान किया गया।

अल्पावधि रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम

1. **29.08.18 –20.09.18**– महाविद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों हेतु व्यक्तित्व विकास एवं संवाद कौशल पर 21 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया प्रशिक्षण प्रदाता कंपनी **AIIT** के सहयोग से किये गये प्रशिक्षण में 49 विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता दी।
2. **04.09.18–23.09.18**– **Choco Culture Bhopal** के प्रशिक्षक दीपिका पटेल द्वारा महाविद्यालय में **Food Crafts & Bakery Items** पर प्रशिक्षण दिया गया 95 छात्राओं ने सहभागिता दी।
3. **01.02.19–26.02.19** – **Perfect Institute Bhopal** द्वारा **"MPPSC प्रारंभिक परीक्षा की तैयारी "** विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। 36 विद्यार्थियों ने सहभागिता की।
4. **13.02.19–06.03.19– Tally /ERP-9** पर प्रशिक्षण **AIIT** के विशेषज्ञों द्वारा दिया गया। 25 विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

कैम्पस ड्राईव –

1. **28.02.19**– Kalka IAS Academy Bhopal द्वारा Academy Coordinator पद हेतु कैम्पस ड्राईव का आयोजन किया गया। 12 विद्यार्थियों की सहभागिता रही एवं 03 Short List किये गये।
2. **08.04.19** – Future General Insurance Company Vadodara से H.R. Shri Rakesh Savjani द्वारा विभिन्न चरणों में Asstt. Sales Manager Post हेतु प्रकिया पूर्ण की गई।
3. **15.04.19** – IIBM Bangalore से HR श्री मनीष शर्मा ने प्लेसमेंट प्रकिया को संचालित किया HR Market Post के लिये 12 विद्यार्थी ड्राईव में बैठे।
4. **11.05.19**– T.Tech Company Gujarat द्वारा INTL Chat Support के पद हेतु 13 विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

सत्र् 2019–20 में प्रकोष्ठ द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियाँ निम्नानुसार संचालित की गई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम –

1. स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना के अंतर्गत **रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम** का आयोजन **सेडमेप उद्यमिता विकास केन्द्र भोपाल** के सहयोग से किया गया।
2. **23.09.2019–23.10.2019**– ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण इस कार्यक्रम की विषय विशेषज्ञ श्रीमती आशा ठाकुर के द्वारा कुल 26 छात्राओं को प्रशिक्षित किया गया।
3. **23.09.2019–23.10.2019**– **इको फ्रेंडली बैग मेकिंग** पर कुल 25 विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया गया, जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार के तकरीबन 50 बैग बनाये गये, इस कार्यक्रम की ट्रेनर सुश्री मेघा चंद्रवंशी थीं।
4. **03.02.2020–15.03.2020**– **(Mandna Painting & Mural Art)** उक्त क्राफ्ट का प्रशिक्षण दिनांक 03.02.2020 से 15.03.2020 तक दिया गया। इस कार्यक्रम में 31 छात्राओं ने अपनी सहभागिता की। कार्यक्रम की प्रशिक्षक सुश्री प्रीति (कला संकाय) ने मांडना एवं रेशम जूलरी बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।
5. **03.02.2020–15.03.2020**– **Tally 9 ERP** पर कुल 30 विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। उक्त प्रशिक्षण विषय विशेषज्ञ सुश्री झलक जैन एवं संजय अग्रवाल ने दिया।
6. **12.06.2021**– Direll Pvt. Ltd. के द्वारा online mode पर एक orientation program एवं online campus drive का आयोजन किया गया, जिसमें 06 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

सत्र् 2020–21 में प्रकोष्ठ द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियाँ निम्नानुसार संचालित की गई।

1. **18.12.2021**– स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन योजना के तत्वावधान में सी.वी. मेकिंग पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को Sistech के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसमें विषय–विशेषज्ञ सुश्री प्रो. अलीशा हाशमी ने मार्गदर्शन दिया, कार्यक्रम में डॉ. इला जैन, प्रो. अमित आहूजा एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे। संचालन डॉ. आशा वर्मा एवं आभार डॉ. इला जैन ने किया।
2. **12.01.2021**– महाविद्यालय के **''व्यक्तित्व विकास समिति एवं स्वामी विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी मध्य प्रांत''** के संयुक्त तत्वावधान में **'राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया गया'**, जिसमें विषय विशेषज्ञ सुश्री रचना जानी जी ने स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशा वर्मा एवं आभार प्रदर्शन डॉ. इला जैन ने किया।
3. **17.12.2021**– प्रकोष्ठ द्वारा आत्मनिर्भर,भारत पर एक online वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम Aspire Academy के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य प्रवक्ता श्री मनोज सन्दल ने आत्मनिर्भर भारत के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

बढ़ी संख्या में विद्यार्थियों ने सहभागिता दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशा वर्मा एवं आभार प्रदर्शन डॉ. इला जैन ने किया।

4. **29.06.2021 व 30.06.2021– दो दिवसीय अल्पावधि रोजगारोन्नमुखी प्रशिक्षण**, विद्यार्थियों को रोजगार के सुअवसर प्रदान करने एवं उनके निर्दिष्ट मंजिल तक पहुँचाने हेतु प्रकोष्ठ कृत–संकल्पित रहता है। इसी भावना को साकार करते हुए प्रकोष्ठ ने "Professional Career Options for Students" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें विषय विशेषज्ञ सुश्री रितु श्रीवास्तव एवं श्री अनुराग प्रसाद जी (Aspire Training Academy Bhopal) ने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया।
5. **23.03.2021– "आजादी का अमृत महोत्सव"** इसके अंतर्गत दिनांक 23.03.2021 को महाविद्यालय में **दांडी मार्च एवं महात्मा गांधी** विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उपरोक्त प्रतियोगिता विश्वविद्यालयीन स्तर पर दिनांक 21.03.2021 को आयोजित हुई है। जिसमें महाविद्यालय की छात्रा कु. स्नेहा नामदेव (B.Sc. III year Maths) को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।
6. **03.07.2021– "युवा वर्ग तनाव कारण और निदान"** विषय पर online counselling आयोजित कर विद्यार्थियों में बढ़ रही अवसाद की समस्याओं का समाधान किया गया। कार्यक्रम विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. रूची सोनी ने मार्गदर्शन दिया।
7. **02.08.2021–** Academy of Data Science के सहयोग से विद्यार्थियों की रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाते हुए Career Paths in Data Science विषय पर एक दिवसीय विषय पर वेबीनार का Virtual Platform पर आयोजन किया गया। जिसमें विषय विशेषज्ञ Data Scientist श्री विजय सिंह ने विद्यार्थियों को Data Science के विभिन्न शाखाओं में career opportunity पर विस्तृत रूप से जानकारी दी।

सत्र् 2020–21 में स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा निम्नलिखित फर्म एवं कम्पनियों से **एम.ओ.यू.** किया गया।

1- Aspire Training Academy Bhopal.
2- NITDP, Bhopal.
3- Advance Institute of Information Technology, Bhopal.

व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ

▪ डॉ. आशा वर्मा
प्राध्यापक रसायनशास्त्र एवं प्रकोष्ठ प्रभारी

यूं ही नहीं मिलती मंजिलें,
एक जुनून सा दिल में जगाना होता है,
पूछो चिड़िया से कैसे बनाया आशियाना,
बोली भरनी पड़ती है उड़ान बार–बार,
तिनका–तिनका उठाना होता है।

मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग ने प्रदेश के युवाओं की सृजनशील क्षमताओं के सम्पूर्ण विकास को ध्यान में रखकर कर्मठ और गतिशील युवा की परिकल्पना को साकार करने की भावना एवं राष्ट्रशक्ति के रुप में छात्रशक्ति को विकसित करने हेतु भारतीय संस्कृति और परम्परा की आधारशिला पर उनके व्यक्तित्व की संरचना के लिये इस प्रकोष्ठ "व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ" का गठन किया गया। इस प्रकोष्ठ का मूल मंत्र है महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सृजनात्मक प्रेरणा हेतु प्रेरित करना।

संक्षेपतः इसका उद्देश्य निम्नवत है–

- युवाओं में भारतीयता का भाव–जागृत करना
- भारतीय संस्कृति और परम्परा का सम्यक बोध विकसित करना
- भारतीय नैतिक मूल्यों का परिपालन एवं संवर्धन करना
- व्यक्तित्व निर्माण एवं उसका अनवरत विकास करना
- व्यक्तित्व विकास के विभन्न आयामों की प्रविधियों पर संवाद करना
- राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत समर्थ नागरिक का निर्माण करना
- मनोविकारों से मुक्त स्वस्थ मानस का निर्माण करना

सत्र 2018–19 व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ संचालित की गई।

- दिनांक 27.07.18 गुरूवे नमः कार्यक्रम–उच्च शिक्षा विभाग म.प्र. शासन के निर्देशानुसार दिनांक 27.07.18 को गुरूवे नमः कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालयीन स्टॉफ का सम्मान श्रीफल एवं शाल देकर महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने किया।
- दिनांक 29.08.2018 "एक भारत श्रेष्ठ भारत" AIIT की संचालक सुश्री साजिदा सज्जाद द्वारा व्याख्यान दिया गया।
- दिनांक 18.09.2018 "नैतिक मूल्य एवं शिक्षा" के महत्व को समझाते हुये शिक्षा में इसके विस्तार पर दीपिका पटेल द्वारा एक व्याख्यान दिया गया।
- दिनांक 15.10.2018 "प्रजातंत्र का आधार मतदान" पर श्री अमित चक्रवती ने व्याख्यान दिया।
- दिनांक 22.11.2018 "स्वच्छ रहो स्वस्थ रहो" पर जयेश वाध ने व्याख्यान दिया।
- दिनांक 11.03.2019 "सामाजिक समरसता" एवं "भारत की सांस्कृतिक विरासत" पर विषय विशेषज्ञ के रुप में डॉ. वी.पी.एस. गौर, प्राध्यापक ने व्याख्यान दिया।

महाविद्यालय में संचालित हितग्राही योजनाएं एवं उनका प्रभार
सत्र् 2020–21

क्र.	योजनाओं के नाम	प्रभारी का नाम
01	अनुसूचित जाति/जनजाति छात्रवृत्ति	डॉ. दीप्ति वैश्य
02	पिछड़ा वर्ग छात्रवृत्ति	डॉ. शाहीना परवीन
03	गाँव की बेटी/प्रतिभा किरण योजना	डॉ. मीनू चतुर्वेदी
04	अल्पसंख्यक एवं सेन्ट्रल सेक्टर छात्रवृत्ति/लालिमा/दिव्यांग छात्रवृत्ति	डॉ. रफत फातिमा
05	अनुसूचित जाति/जनजाति विद्यार्थी आवास योजना	डॉ. जी.पी.यादव
06	मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना/ मुख्यमंत्री जनकल्याण योजना	डॉ. हर्षा जालौरी

मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना में सत्र् 2018–19 में 299, सत्र् 2019–20 में 419 तथा सत्र् 2020–21 में 350 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

मुख्यमंत्री जन कल्याण योजना में 2018–19 में 2018–19 में 54, 2019–20 में 20 तथा 2020–21 में 16 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में सत्र् 2018–19 में 21 विद्यार्थी एवं 01 शोधार्थी लाभान्वित हुए। सत्र् 2019–20 एवं 2020–21 में क्रमशः 37 व 17 स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

दिव्यांग छात्रवृत्ति के अंतर्गत सत्र् 2018–19, 2019–20 एवं 2020–21 में प्रत्येक सत्र् में एक–एक विद्यार्थी लाभान्वित हुआ।

महाविद्यालय में संचालित योजनाओं की जानकारी

महाविद्यालय में संचालित योजनाओं की जानकारी सत्र 2018–19		
क्र	योजना का नाम	लाभार्थियों की संख्या
1.	अनुसूचित जाति	**255**
2.	अनुसूचित जनजाति	**55**
3.	पिछडा वर्ग	**361**
4.	अनुसूचित जाति आवास	**103**
5.	अनुसूचित जनजाति आवास	**12**
6.	गांव की बेटी योजना	**16**
7.	प्रतिभा किरण योजना	**07**
8.	विक्रमादित्य योजना	**07**

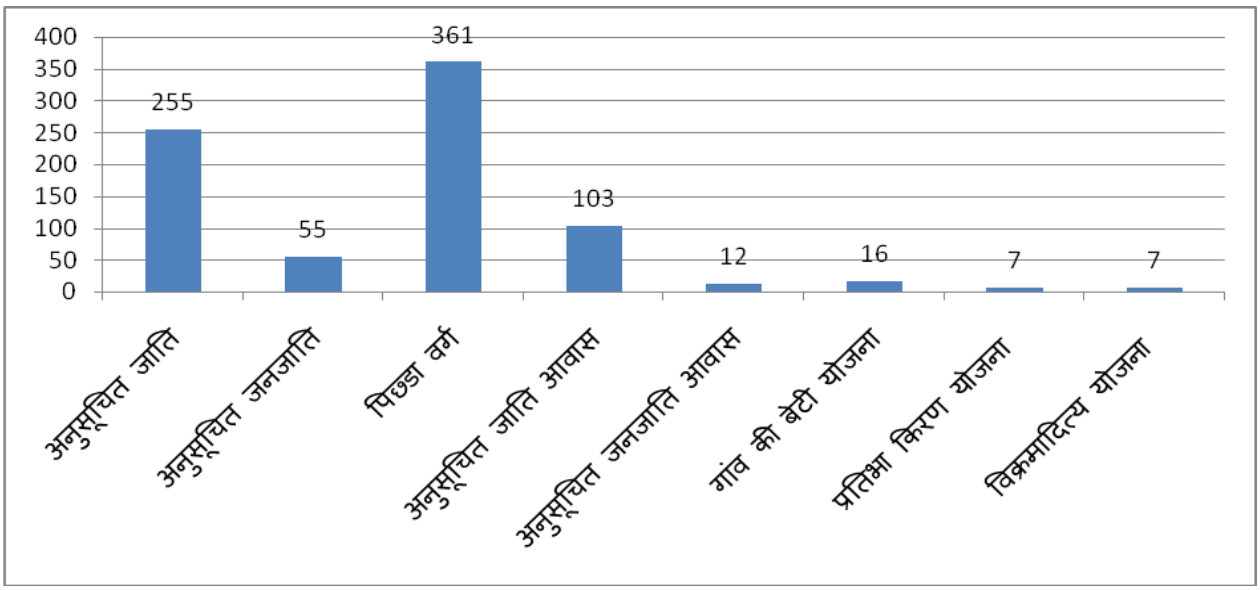

महाविद्यालय में संचालित योजनाओं की जानकारी सत्र 2019–20		
क्र	योजना का नाम	लाभार्थियों की संख्या
1.	अनुसूचित जाति	**363**
2.	अनुसूचित जनजाति	**91**
3.	पिछडा वर्ग	**534**
4.	अनुसूचित जाति आवास	**177**
5.	अनुसूचित जनजाति आवास	**12**
6.	गांव की बेटी योजना	**21**
7.	प्रतिभा किरण योजना	**08**
8.	विक्रमादित्य योजना	**03**

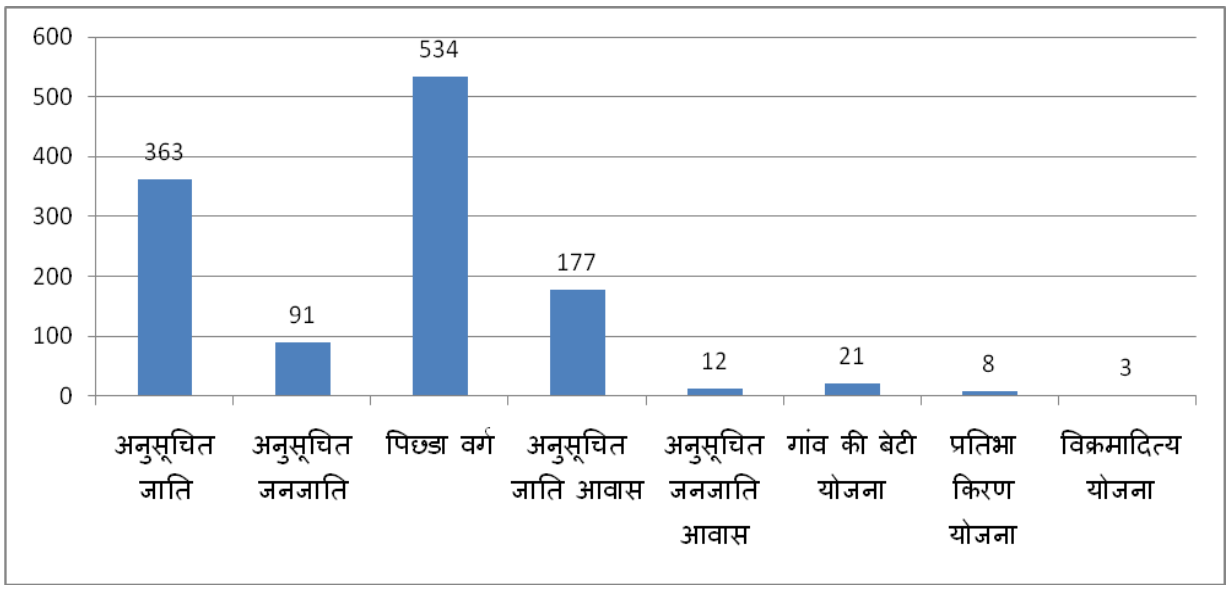

महाविद्यालय में संचालित योजनाओं की जानकारी सत्र 2020–21		
क्र	योजना का नाम	लाभार्थियों की संख्या
1.	अनुसूचित जाति	**468**
2.	अनुसूचित जनजाति	**103**
3.	पिछडा वर्ग	**681**
4.	अनुसूचित जाति आवास	**83**
5.	अनुसूचित जनजाति आवास	**0**
6.	गांव की बेटी योजना	**26**
7.	प्रतिभा किरण योजना	**9**
8.	विक्रमादित्य योजना	**0**

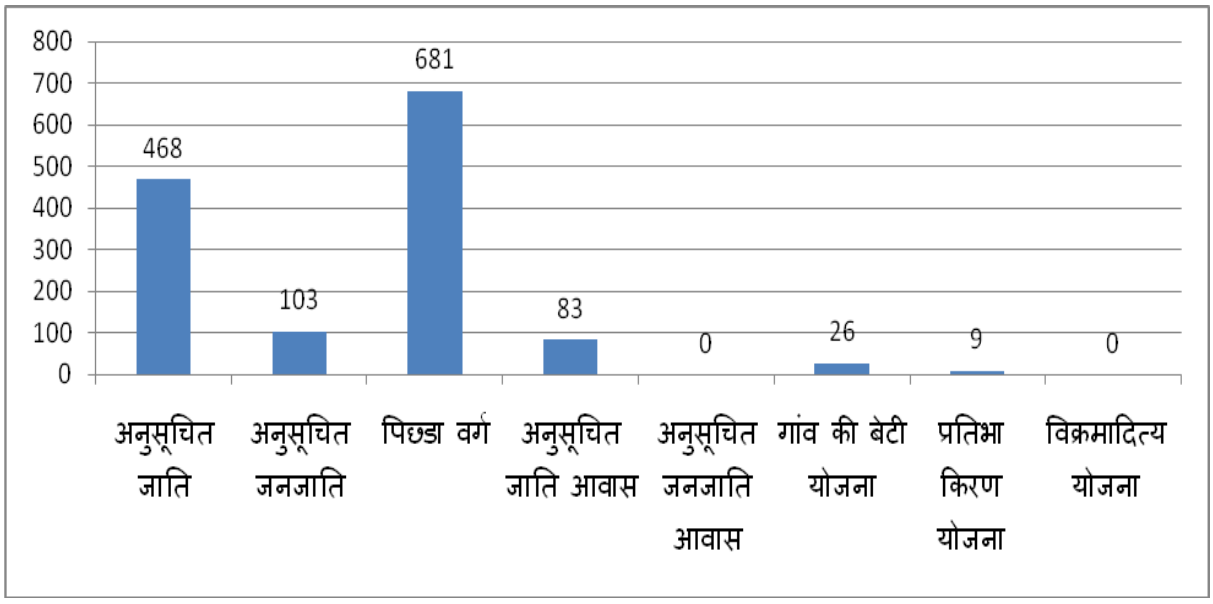

साहित्यिक एवम् सांस्कृतिक समिति–प्रतिवेदन

▪ डॉ. संगीता गुप्ता
संयोजक

महाविद्यालय की साहित्यिक व सांस्कृतिक समिति द्वारा शासन द्वारा निर्देशित विभिन्न विधाएँ आयोजित की जाती रही हैं। सत्र् 2019–20 को शासन द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार भारत रत्न स्व. राजीव गांधी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर **'युवा संकल्प वर्ष'** के रूप में मनाया गया, जिसके अंतर्गत सद्भावना गीत प्रतियोगिता, 'आतंकवादः समस्या और समाधान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता, 'राजीव गांधी का सपना आई. टी. कम्प्यूटर में अग्रणी हो देश अपना–विषय पर परिचर्चा प्रतियोगिता, विज्ञान एवम् प्रौद्योगिकी पर केन्द्रित प्रश्नमंच प्रतियोगिता, **'राजीव गांधी के सपनों का भारत'** विषय पर भाषण प्रतियोगिता तथा राष्ट्रनिर्माण, देशभक्ति तथा सद्भावना पर आधारित स्वरचित काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन शासन द्वारा निर्धारित तिथियों में किया गया। साथ ही दिनांक 14.09.19 को **'हिन्दी दिवस'** पर हिन्दी व अंग्रेजी विभाग द्वारा विद्यार्थियों के लिए एक गतिविधि का आयोजन किया गया। दिनांक 11.11.19 को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस तथा 19.11.19 को राष्ट्रीय अखंडता दिवस का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस के उपलक्ष्य में दिसम्बर 19 में वाद विवाद, निबंध, चित्रकला व स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

गांधी जी के 150वीं जन्मशती के उपलक्ष्य में दिनांक 26.09.2019 को गांधी जी की जीवन यात्रा पर चित्र प्रदर्शनी का आयोजन गांधी भवन, भोपाल की सहायता से किया गया। 02.10.19 को गांधी जंयती के उपलक्ष्य में गांधी साहित्य का वाचन विद्यार्थियों एवम् शिक्षकों द्वारा किया गया। शहीद दिवस पर 'गांधी तुम्हें नमन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

आतंरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ

▪ डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी
संयोजक

महाविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के द्वारा महाविद्यालय में विभिन्न गतिविधियाँ समय–समय पर आयोजित की जाती रही हैं। सत्र् 2019–20 में प्रमुख गतिविधियों में जुलाई में अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन नव प्रवेशित छात्रों के लिए उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार किया गया, जिसमें उच्च शिक्षा विभाग/शासन की समस्त हितग्राही योजनाओं की जानकारी एवम् युवा उत्सव, क्रीड़ा गतिविधियां तथा एन.सी.सी./एन.एस.एस. आदि की जानकारी देकर विद्यार्थियों का दिशादर्शन किया गया।

साथ ही 14 नवम्बर 2019 को शासन के निर्देशानुसार **'नेहरू और आधुनिक भारत का निर्माणः उच्च शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में'** विषय पर राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय के प्राध्यापकगण डॉ. माधवीलता दुबे तथा डॉ. व्ही.पी.एस. गौर ने प्रथम सत्र् में पं. नेहरू के जीवन दर्शन तथा उनके जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला।

डॉ. प्रज्ञा रावत ने अपने उद्बोधन में बताया कि नेहरू जी को किस तरह स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के साथ कई बार जेल में रहना पड़ा। Discovery of India तथा Glimpses of World History लिखकर इस बात से निजात दिलवाई कि भारत एक कमतर देश है तथा इस बात की पहचान करवाई कि हम सांस्कृतिक व अन्य क्षेत्रों में अंग्रेजो से सम्पन्न हैं।

द्वितीय समापन सत्र् में मुख्य वक्ता प्रसिद्ध नेहरूवादी चिंतक नेहरूजी के समकालीन वेदरत्न उर्दू साहित्य के विश्व विख्यात विद्वान पद्मश्री आनंद मोहन जुत्शी गुलजार देलहवी जी ने नेहरू जी के समय तथा नेहरूजी का बच्चों के प्रति प्रेम को याद करते हुए कहा कि अपनी मासूमियत व बचपन को कभी खत्म नहीं होने देना चाहिए। मुख्य अतिथि के रूप में भोपाल मध्य विधानसभा से माननीय विधायक श्री आरिफ मसूद जी उपस्थित थे।

2 अक्टूबर 2019 को **'गांधी ग्लोबल सोलर यात्रा–वर्कशाप'** का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त प्राध्यापकों ने Solar Lamp के विभिन्न भागों को Assemble कर Solar Lamp को बनाना सीखा। यह वर्कशाप आई.आई.टी. मुम्बई तथा मैनिट भोपाल के द्वारा प्रायोजित की गयी थी।

दिसम्बर 2019 में एक व्याख्यान माला का आयोजन भी किया गया। इसके अतिरिक्त दिनांक 18.01.2020 से 21.01.2020 तक **'एक भारत श्रेष्ठ भारत'** कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें पूर्वोततर राज्य असम के विद्यार्थियों ने भी भागीदारी की।

बाल संरक्षण एवम् साईबर सुरक्षा वर्कशाप 24 दिसम्बर 2019 को आयोजित कर विभिन्न साइबर क्राइम्स की जानकारी प्रतिभागियों को दी गयी।

कोरोना के मद्देनजर सत्र् 2019–20 में प्रमुख गतिविधियों में ऑनलाईन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन, दिसम्बर 2020 में व्याख्यानमाला, स्पेक्ट्रोस्कोपिक टेक्निक्स पर 29 जनवरी 2021 को ऑनलाईन वेबीनार तथा ''सम्मान'' कार्यक्रम ''संगिनी संस्थान भोपाल'' के सहयोग से 16 जनवरी 2021 को आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त एनालिटिकल टेक्निक्स एवम् एप्लीकेशन्स विषय पर वेबीनार का आयोजन दिनांक 26.03.2021 को किया गया।

वनस्पतिशास्त्र विभाग

डॉ. कीर्ति जैन
विभागाध्यक्ष

महाविद्यालय के वनस्पतिशास्त्र विभाग में वर्तमान में कुल 06 प्राध्यापक तथा 01 प्रयोगशाला सहायक कार्यरत हैं। सभी सदस्य आपसी सद्भाव से विभाग के सभी शैक्षणिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हैं।

विभाग में स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाएँ संचालित होती हैं तथा इसके अलावा शोध कार्य में भी विभाग के सदस्य सक्रिय रूप से संलग्न हैं। विभाग की प्राध्यापक डॉ. कीर्ति जैन के मार्गदर्शन में इस सत्र में कुल 03 शोध ग्रंथ उपाधि हेतु विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किये गये हैं तथा वर्तमान में कुल 03 शोधार्थी शोध कार्य कर रहे हैं, तथा 04 शोधार्थियों को उपाधि प्राप्त हुई है। डॉ. अरूणा जैन के मार्गदर्शन में 03 ने शोध कार्य पूर्ण किया है तथा 01 शोधार्थी अभी शोध कार्य कर रही हैं। शोध पत्रों का प्रकाशन राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका में होता रहता है।

वनस्पति विभाग द्वारा माह मार्च 2019 में Applied aspects of Biological science विषय पर एक Faculty Development Program का आयोजन किया गया । विभाग में स्नातकोत्तर कक्षा के 14 विद्यार्थियों ने Scan Research Laboratory से परियोजना कार्य किया।

विभाग के एक सदस्य डॉ. देवेन्द्र पटेल, एन.सी.सी. प्रभारी के रूप में भी महाविद्यालय में अपनी सेवायें दे रहे हैं, इसके अलावा वो शासन के उच्च शिक्षा विभाग में प्रयोगशाला उन्नयन एवं एक भारत श्रेष्ठ भारत जैसे समितियों में भी अपना योगदान देते हैं।

इस सत्र में डॉ. सिंह ने भी विभाग में ज्वाईन किया है वे भी काफी अनुभवी प्राध्यापक हैं और उनका शोध कार्य का भी लंबा अनुभव है, निश्चित रूप से विभाग को इसका लाभ मिलेगा।

कोविड–19 पीरियड में शासन द्वारा स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए Virtual Lectures का आयोजन किया गया था, उसकी Validation Committee में डॉ. कीर्ति जैन शामिल हैं।

विभाग के सभी सदस्य अपनी विभागीय जिम्मेदारियों के अलावा प्राचार्य द्वारा दिये गये सभी दायित्वों का पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वहन करते हैं। प्रवेश प्रक्रिया, परीक्षा संचालन, विभिन्न छात्रवृत्तियों, शोध समिति, पुस्तकालय समिति आदि दायित्वों का भार विभाग के सदस्यों पर है। इसके अलावा प्राचार्य द्वारा निर्देशित किये जाने पर अन्य कार्यों का संपादन भी विभाग के सदस्य पूरी निष्ठा से करते हैं तथा महाविद्यालय के समुचित विकास में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते हैं। महाविद्यालय की उन्नति एवं विकास में अपना योगदान देने के लिए कटिबद्ध है।

गुड इवनिंग

मशरूम फार्मिंग आज स्वरोजगार का बड़ा माध्यम : राजेश पाटिल

प्राणीशास्त्र विभाग

डॉ. संजय तेलंग
विभागाध्यक्ष

वर्ष 1982 में महाविद्यालय की स्थापना के पश्चात् प्रारंभ के कुछ वर्षो तक प्राणीशास्त्र विषय बी.एस.सी. की कक्षाओं तक सीमित था। 1987 में प्राणीशास्त्र की स्नातकोत्तर कक्षाएं प्रारंभ हुई। वर्तमान में प्राणीशास्त्र विभाग में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कुल 04 प्राध्यापक, 02 सह प्राध्यापक, 02 सहायक प्राध्यापक एवं 01 अतिथि विद्वान कार्यरत हैं।

प्राणीशास्त्र विभाग के मार्गदर्शन में सत्र् 2007–2008 से बी.एस.सी. की कक्षाओं में जैव–प्रौद्योगिकी विषय रोजगारोन्मुखी स्ववित्तीय पाठ्यक्रम के रूप में सफलता पूर्वक चलाया जा रहा है यह पाठ्यक्रम महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति के अंतर्गत संचालित है जैव–प्रौद्योगिकी विषय हेतु 01 अतिथि विद्वान कार्यरत है। जैव प्रौद्योगिकी विषय में वर्तमान में कु. नेहा शर्मा कार्यरत है। प्राणीशास्त्र विभाग के प्राध्यापक शैक्षणिक दायित्वों व शोधकार्य के अतिरिक्त महाविद्यालय की विभिन्न समितियों, अकादमिक व अन्य गैर शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन एवं संचालन में सक्रीय भूमिका निभा रहें है। डॉ. संजय तेलंग ने गीतांजली कन्या महाविद्यालय में प्राणीशास्त्र विषय के विषय– विशेषज्ञ के रूप में (01.12.2014 से 21.11.2017 तक) अध्ययन मंडल में कार्य किया।

दिनांक 26.11.2020 से डॉ. संजय तेलंग बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल की प्राणीशास्त्र की बोर्ड ऑफ स्टडीज में चेयरमेन के रूप में कार्य कर रहे हैं। डॉ. संजय तेलंग बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल की रिसर्च एडवाइजरी कमिटी प्राणीशास्त्र के सदस्य के रूप में दिनांक 15.11.2019 से कार्यरत है। डॉ. संजय तेलंग के द्वारा सरोजनी नायडू कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय भोपाल में दिनांक 26.07.2017 से दिनांक 25.07.2019 व दिनांक 19.04.2017 से दिनांक 25.11.2017 तक बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल के प्राणीशास्त्र की बोर्ड ऑफ स्टडीज के सदस्य के रूप में कार्य किया। डॉ. संजय तेलंग ने आयुक्त महोदय उच्च शिक्षा के आदेशानुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत जैव–प्रौद्योगिकी के नए पाठ्यक्रम के गठन हेतु गठित समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया है। डॉ. संजय तेलंग के शोध निर्देशन में शकील अहमद भट ने दिनांक 17.11.2020 को पीएच.डी. प्राप्त की। रिवाज अहमद ने डॉ. संजय तेलंग के निर्देशन में पीएच.डी. प्राप्ति हेतु थीसिस दिनांक 04.07.2019 को जमा की। डॉ. संजय तेलंग ने उच्च शिक्षा विभाग की राज्य स्तरीय शिक्षक व कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता में 2018–2019 में टेबल–टेनिस में भोपाल संभाग का प्रतिनिधित्व किया, जिसमें 2018 में विजेता व 2019 में वे उपविजेता रहे। इसी प्रकार डॉ. मुकेश दीक्षित 2019 में उपविजेता रहे। डॉ. संजय तेलंग ने रूसा उच्च शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 18.01.2021 से 23.01.2021 तक कॉलेज मैनेजमेंट एंड एडमिनिसट्रेटिव विषय पर आयोजित ऑनलाईन ट्रेनिंग में भाग लिया।

आयुक्त उच्च शिक्षा म.प्र. के आदेशानुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत डॉ. के के मिश्रा प्राध्यापक प्राणिशास्त्र द्वारा आधार पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम को तैयार किया गया। फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम जो उच्च शिक्षा विभाग म.प्र.शासन द्वारा संचालित किया गया, उसमें एक सप्ताह का प्रशिक्षण डॉ. के.के.मिश्रा द्वारा लिया गया, जिसके आधार पर पाठ्यक्रम की सामग्री ऑनलाईन के लिए तैयार किया जायेगा। म.प्र. भोज मुक्त विश्वविद्यालय के साथ हमारे महाविद्यालय द्वारा एम.ओ.यू. हस्ताक्षर किया गया है, जिसके तहत विश्वविद्यालय के छात्रों का प्रवेश, अध्यापन कार्य एवं परीक्षा की प्रक्रिया महाविद्यालय स्तर पर की जाती है। इसके संयोजक के रूप में विभाग के डॉ. के.के.मिश्रा को नियुक्त किया गया हैं, छात्रों को आई.आई.टी.

बाम्बे एवं मैनिट भोपाल की सहायता से सोलर लैंप तैयार करने की प्रक्रिया को डॉ. के.के.मिश्रा के द्वारा संपन्न करवाया गया। डॉ. के.के.मिश्रा द्वारा म.प्र. भोज मु.वि.वि. के पाठ्यक्रम पर आधारित वीडियों व्याख्यान भी दूरदर्शन पर दिए गए।

प्राणीशास्त्र विभाग में इस समय डॉ. के.के.मिश्रा, डॉ. शाहीना परवीन एवं डॉ. माहिरा परवीन, प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं, वहीं डॉ. दीप्ती वैश एवं डॉ. आई.ए.दुर्रानी, सह–प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। डॉ. हेमलता वर्मा एवं डॉ. मुकेश नापित, सहायक प्राध्यापक के रूप में अध्ययन एवं अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। डॉ. संतोष कुशवाहा, अतिथि विद्वान के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

डॉ. मुकेश दीक्षित, प्राध्यापक के रूप में विभाग में सत्र् 2020–21 में सराहनीय भूमिका निभाने के पश्चात् शासकीय सरोजनी नायडू महाविद्यालय स्थानान्तरित हो गए हैं। विभाग में डॉ. तनवीर खान, प्रयोगशाला तकनीशियन एवं श्री सुशील मातुरकर, प्रयोगशाला परिचारक के रूप में कार्य कर रहे हैं। विभाग की सहायक प्राध्यापक, डॉ. हेमलता वर्मा, प्रशिक्षित कार्यक्रम अधिकारी (रा.से. यो.) के रूप मे उल्लेखनीय योगदान दे रही है। अतिथि विद्वान श्रीमती सुमन अहिरवार के द्वारा कुछ माह शैक्षणिक कार्य किया गया। प्राणीशास्त्र विभाग की होनहार वरिष्ठ व कर्मठ प्राध्यापक डॉ. रजनी रैना वाग्नू दिनांक 31.01.2020 को सेवानिवृत्त हुई।

रसायनशास्त्र विभाग

डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी
विभागाध्यक्ष

स्थापना वर्ष 1982 से ही रसायनशास्त्र विभाग में स्नातक एवं 1997 से स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्यापन एवं पठन–पाठन हेतु 05 प्राध्यापकों के पद स्वीकृत हैं, जिन पर डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी (विभागाध्यक्ष), डॉ. आशा वर्मा, डॉ. इला जैन, डॉ. नीतूप्रिया लचौरिया एवं डॉ. स्मिता वर्मा वर्तमान में कार्यरत है। रसायनशास्त्र प्रयोगशाला में 01 प्रयोगशाला तकनीशियन श्री हेमराज महेड़िया तथा 01 प्रयोगशाला परिचारक श्रीमती सुमन बाथम वर्तमान में कार्यरत हैं।

विभाग में स्नातक तथा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों हेतु अलग–अलग प्रयोगशाला कक्ष उपलब्ध हैं। स्नातकोत्तर तथा शोधार्थियों हेतु विभाग में एक इन्सट्रूमेन्टेशन लैब भी है जिसमें पूर्व से उपलब्ध उपकरणों के साथ–साथ 2020 में विश्व बैंक द्वारा MPHEQIP के अंतर्गत विभाग को Atomic Absorbtion Spectrophotometer, Magnetic Stirrer, Heating Mantle, Single Pan Balance प्राप्त हुए। सत्र् 2020–21 से विभाग में पठन–पाठन हेतु एक स्मार्ट क्लास भी उपलब्ध है। उच्च शिक्षा विभाग के शिक्षा नीति के निर्देशों के अनुरुप एवं बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल के शैक्षणिक वार्षिक कैलेन्डर का अनुपालन करते हुये सत्र् 2018–19 से 2020–21 तक विभाग द्वारा ई–प्रवेश–प्रक्रिया का निष्पादन समय–सीमा में पूर्ण किया गया। शैक्षणिक–शैक्षणेत्तर गतिविधियों के साथ ही युवा उत्सव एवं परीक्षा संचालन का महत्वपूर्ण कार्य भी संपादित किया गया। विभाग द्वारा संपन्न विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के द्वारा विद्यार्थियों में नवाचार के सफल प्रयास किए गए, जिससे अधिकाधिक विद्यार्थी लाभान्वित हुये। पठन–पाठन हेतु सभी नवाचार एवं आधुनिक विधियों का उपयोग किया गया। विभिन्न ICT tools, इन्टरएक्टिव बोर्ड, काउन्सिलिंग मॉडूयल का उपयोग कर सार्थक प्रयास किये गये जिसके परिणाम वार्षिक परिक्षाओं में सफलता के रुप में फलीभूत हो सके। विभाग द्वारा सत्र् 2018–19 से 2020–21 तक विभिन्न गतिविधियाँ सफलतापूर्वक संचालित की गई। जिनमें प्रमुख हैंः– गाँधी ग्लोबल सोलर यात्रा के अंतर्गत एक दिवसीय सोलर लैंप बनाने की कार्यशाला (02/10/2019), FTIR एवं Microwave Synthesis पर एक दिवसीय कार्यशाला (दिसम्बर 2019), बाल संरक्षण एवं साइबर सुरक्षा सत्र् (24/10/2019), International Year of Periodic Table के अंतर्गत सात दिवसीय व्याख्यान माला का आयोजन किया गया (दिसम्बर 2019)। विभाग द्वारा "Chemistry in Daily Life" विषय पर Online Quiz भी कराया गया। माह जनवरी में पुनः व्याख्यान माला तथा 26 मार्च 2021 को "Analytical Techniques and Applications" विषय पर वेबीनार आयोजित किया गया।

महाविद्यालय तथा विभाग के लिए गौरव का विषय रहा, जब विभागाध्यक्ष डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी को "द ग्लोरियस आरगेनाइजेशन फॉर एक्लेरेटेड टू लिटरसी (GOAL)" New Delhi द्वारा "INDIAN INCONIC PERSONALITY AWARD" द्वारा सम्मानित किया गया (30.06.19)

विभाग के 04 नियमित प्रोफेसर बरकतउल्ला विश्वविद्यालय में पंजीकृत शोध निर्देशक हैं। विगत तीन सत्रों में डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी के निर्देशन में 05 शोधार्थियों ने तथा डॉ. आशा वर्मा के निर्देशन में 04 शोधार्थियों ने शोध उपाधि प्राप्त की एवं इनके शोध पत्र भी विभिन्न नेशनल तथा इन्टर नेशनल जर्नल्स में प्रकाशित हुए। डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी के 03 रिसर्च पेपर, डॉ. आशा वर्मा के 06 रिसर्च पेपर तथा डॉ. स्मिता वर्मा के 03 रिसर्च पेपर इन्टर नेशनल जर्नल्स में प्रकाशित हुए।

विभाग के सभी प्राध्यापकों द्वारा, विभिन्न कार्यशाला, ऑनलाईन वेबीनार, क्विज, ट्रेनिंग, FDP आदि में सहभागिता की गई। सभी प्राध्यापकों ने विषय विशेषज्ञ के रूप में राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार/लेक्चर सीरिज में व्याख्यान दिए।

सभी प्राध्यापक महाविद्यालय की विभिन्न महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य हैं, तथा महाविद्यालय के कार्यो के संपादन में पूर्ण सहयोग प्रदान करते है।

भौतिकशास्त्र विभाग

डॉ. रागिनी तिवारी
विभागाध्यक्ष

वर्तमान में महाविद्यालय में भौतिक शास्त्र विभाग की स्नातक कक्षाएं सुचारू रूप से संचालित की जा रही हैं। विभाग में 04 प्राध्यापक कार्यरत हैं। डॉ. रागिनी तिवारी विभागाध्यक्ष हैं। डॉ. राकेश सक्सेना, डॉ. हर्षा जालौरी एवं डॉ. ममता पाण्डेय, प्राध्यापक के पद पर एवं श्री मणिकांत भिडे प्रयोगशाला तकनीशियन के पद पर कार्यरत है। विभाग में भौतिकी की दो एवं कम्प्यूटर की एक प्रयोगशाला है। PMCs पाठ्यक्रम महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति के अर्न्तगत संचालित है। कम्प्यूटर विभाग में विपिन कुमार अतिथि विद्वान के रूप में कार्यरत हैं।

डॉ. रागिनी तिवारी ने जनवरी 2019 से जून 2019 तक प्राचार्य का कार्यभार संभाला। डॉ. रागिनी तिवारी सत्र् 2019–20 में प्रवेश समिति में संयोजक रहीं। डॉ. रागिनी तिवारी UGC Cell में सदस्य एवं महिला उत्पीड़न एवं निवारण में संयोजक के रूप में कार्य कर रही हैं। डॉ. रागिनी तिवारी ने वर्ष 2020–21 में प्राचार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया। एवं समय–समय पर प्राचार्य पद का निर्वहन किया।

डॉ. राकेश सक्सेना राष्ट्रीय सेवा योजना में कार्यक्रम अधिकारी हैं एवं इकाई से संबंधित गतिविधियों को पूर्ण कर रहे हैं। सत्र् 2019–20 में बरखेडी, नीलबड़ भोपाल में NSS का एक सप्ताह का शिविर लगाया गया था। सत्र् 2019–20 में डॉ. हर्षा जालोरी ने विक्रमादित्य छात्रवृत्ति योजना का कार्य किया। डॉ. ममता पाण्डेय, गाँव की बेटी योजना का कार्य संपादित कर रही हैं। विभाग द्वारा अध्यापन के साथ–साथ उच्च स्तर का शोध कार्य भी किया जाता है। विभाग के सभी सदस्य प्राचार्य के द्वारा दिये गये सभी कार्यों को पूर्ण निष्ठा से करते हैं। डॉ. हर्षा जालोरी के निर्देशन में दो शोधार्थी पीएच.डी के लिये पंजीकृत हैं।

सत्र् 2019–20 मे डॉ. हर्षा जालोरी विजेता बेडमिटन टीम (राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता शिक्षक अधिकारी एवं कर्मचारी) की सदस्य रही हैं एवं सत्र् 2020 में उपविजेता, शतंरज टीम की सदस्य रही हैं। डॉ. रागिनी तिवारी, डॉ. हर्षा जालोरी एवं डॉ. ममता पाण्डे ने प्रवेश समिति, गर्ल्स कॉमन रूम, आईटी सेल, अपलेखन समिति, बी.एड का सत्यापन एवं प्रवेश जैसी समितियों में महत्वपूर्ण दायित्वों को निभाते हुये अपनी विशिष्ट कार्यक्षमता का परिचय दिया है। डॉ. हर्षा जालोरी खेल समिति की भी सदस्य रही हैं। डॉ. हर्षा जालोरी मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना व मुख्यमंत्री जनकल्याण योजना की प्रभारी हैं। सत्र् 2019–20 में विभाग के सभी प्राध्यापकों ने विवेकानन्द केन्द्र द्वारा आयोजित 21 दिवसीय योग प्रशिक्षण में भाग लिया।

डॉ. हर्षा जालोरी ने बी.एससी कम्प्यूटर सांइस (I,II,III,IVth) का नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत पाठ्यक्रम बनाने में facilitator का कार्य किया। डॉ. हर्षा जालोरी ने Integrated IT Portal के अन्तर्गत College CMS वेबसाइट बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. हर्षा जालोरी का राष्ट्रीय शोध पत्र में एक पेपर प्रकाशित हुआ है एवं आठ सेमिनार में रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए हैं। डॉ. हर्षा जालोरी ने 06, एक सप्ताह के फेकल्टी डेवलपमेन्ट प्रोग्राम एवं 01 अंतर्राष्ट्रीय वर्कशाप में प्रशिक्षण प्राप्त किया। डॉ. हर्षा जालोरी ने केन्द्रीय विद्यालय के द्वारा आयोजित अक्टूबर 2019 में प्रोजक्ट प्रतियोगिता में निर्णायक का कार्य किया।

डॉ. ममता पाण्डेय ने आयुक्त उच्च शिक्षा के आदेशानुसार शासकीय महाविद्यालयों में सत्र 2019–20 में सेमीनार आयोजन हेतु प्राप्त प्रस्तावों के परीक्षण एवं आवंटन की अनुशंसा के लिए समिति में विषय विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया। सत्र् 2019–20 एवं 2020–21 में UGC Listed Journals में 6 शोध–पत्र प्रकाशित हुए एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल 07 पेपर प्रस्तुत किये। सत्र् 2020–21 में 02 अन्तर्राष्ट्रीय वेबीनार में एवं 10 राष्ट्रीय वेबीनार में भाग लिया। डॉ. ममता पाण्डेय ने एक–एक सप्ताह के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला (01) एवं FDP (01) मे भाग लिया। उच्चशिक्षा मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित E-Content for Post-Graduate classes, M.Sc. Semester–I के लिए दो Audio-Video Lectures तैयार करके उच्च शिक्षा द्वारा बनाई गई समिति को दिया। विभाग के द्वारा भौतिकी में स्नातकोतर कक्षायें प्रारम्भ करने का प्रस्ताव उच्चशिक्षा विभाग को भेजा जा चुका हैं।

गणित विभाग

डॉ. राजेश श्रीवास्तव
विभागाध्यक्ष

महाविद्यालय के गणित विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर की कक्षाऐं सुचारु रुप से संचालित की जा रही हैं। वर्तमान में विभाग में 02 प्राध्यापक, 02 सह प्राध्यापक एवं 01 सहायक प्राध्यापक पदस्थ हैं। डॉ. राजेश श्रीवास्तव के निर्देशन में सत्र् 2018–19 व 2019–20 में क्रमशः 02 शोधार्थियों (विपिन कुमार शर्मा एवं शोधार्थी मीना विजयवर्गीय) को पीएच.डी. उपाधि प्राप्त हुई। 01 शोधार्थी अमित कुमार गुप्ता का शोधग्रंथ पीएच.डी. उपाधि के लिए विश्वविद्यालय में जमा किया गया है एवं 04 शोधार्थी वर्तमान में शोधरत है। डॉ. श्रीवास्तव के 15 शोधपत्र वर्ष 2018–19 में, वर्ष 2019–20 में 07 शोधपत्र एवं वर्ष 2020–21 में 02 शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जनरल में प्रकाशित हुए है तथा आप 02 सेमिनार में सहभागी भी रहे। डॉ. श्रीवास्तव बी.एस.एस. एस. एवं गीतांजली महाविद्यालय की बोर्ड आफ स्टडीज के सदस्य भी हैं। डॉ. श्रीवास्तव रवीन्द्रनाथ टेगौर विश्वविद्यालय भोपाल के प्रबन्धन बोर्ड में शासकीय निकाय के सदस्य है। निजी वि.वि. नियामक आयोग द्वारा 02 निजी विश्वविद्यालय में अध्यादेश निर्माण हेतु गठित समिति के सदस्य हैं। डॉ. नवल सिंह के निर्देशन में सत्र् 2018–19 में 03 शोधार्थी के शोधग्रंथ, पी.एच.डी. अवार्ड हेतु विश्वविद्यालय में जमा किये गये। सत्र् 2019–20 में 02 शोधार्थी को पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई साथ ही 04 रिसर्च पेपर अन्तर्राष्ट्रीय जनरल में प्रकाशित हुए हैं। डॉ. नवल सिंह लोकसभा चुनाव में मास्टर ट्रेनर भी रहे हैं। डॉ. नवल सिंह के सत्र् 2019–20 में 02 शोध–पत्र एवं 2020–21 में 02 शोधपत्र अन्तर्राष्ट्रीय जनरल में प्रकाशित हुए है। डॉ. अनीता मंडलोई के सत्र् 2018–19 में 02 रिसर्च पेपर सत्र् 2019–20 में 01 एवं सत्र् 2020–21 में 01 अन्तर्राष्ट्रीय जनरल में प्रकाशित हो चुके हैं एवं 04 सेमिनार में सहभागिता भी की है। साथ ही 01 अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में भी शोधपत्र भी प्रस्तुत किया है। डॉ. अनीता मंडलोई बी.एस.एस.एस. महाविद्यालय में बोर्ड ऑफ स्टडीज की सदस्य भी है। डॉ. एस.के.मल्होत्रा ने 03 राष्ट्रीय सेमिनार में सहभागिता भी की एवं 05 रिसर्च पेपर अन्तर्राष्ट्रीय जनरल में भी प्रकाशित हुए है। सत्र् 2019–20 में डॉ. मल्होत्रा के मार्गदर्शन में शोधार्थी प्रदीप भार्गव को पीएच.डी. उपाधि प्राप्त हुई है। सत्र् 2019–20 में 05 शोधपत्र एवं सत्र् 2020–21 में 04 शोधपत्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जनरल में प्रकाशित हुए है। सत्र् 2019–20 में 02 शोधग्रंथ पीएच.डी. उपाधि के लिए विश्वविद्यालय में जमा किये गये। सत्र् 2020–21 में डॉ. एस.के.मल्होत्रा ने 05 व्याख्यान अतिथि वक्ता के रूप में दिये। डॉ. मल्होत्रा साधु वासवानी महाविद्यालय में बोर्ड ऑफ स्टडीज के सदस्य भी हैं इसके अतिरिक्त डॉ.एस.के.मल्होत्रा लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव में मास्टर ट्रेनर भी रहे हैं। डॉ. नवल सिंह एवं डॉ. मल्होत्रा लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित सहायक प्राध्यापकों के प्रमाणपत्र परीक्षण समिति में सदस्य रहे एवं सातवें वेतनमान निर्धारण समिति के अंतर्गत महाविद्यालय में वेतन निर्धारण में उल्लेखनीय कार्य किया। डॉ. ज्योति पंथी, सहायक प्राध्यापक के 02 रिसर्च पेपर राष्ट्रीय जनरल में प्रकाशित हुए है, साथ ही फेकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत MPCON के द्वारा आयोजित 15 दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया। म.प्र. उच्च शिक्षा विभाग द्वारा NCTE पाठ्यक्रमों की प्रवेश प्रक्रिया समिति में सदस्य के रुप में संचालनालय उच्च शिक्षा विभाग में कार्य किया। डॉ. पंथी द्वारा विधान सभा चुनाव में टेबुलेशन अधिकारी के रुप में कार्य किया गया। विभाग के सभी सदस्यों द्वारा स्वामी विवेकानंद केन्द्र, कन्याकुमारी शाखा–भोपाल द्वारा महाविद्यालय में आयोजित 21 दिवसीय योग कार्यक्रम में भाग लिया। इसके साथ ही वनस्पति विभाग द्वारा आयोजित FDP में भी भाग लिया। रसायन शास्त्र विभाग द्वारा आयोजित FT-IR & Microwave Synthesis वर्कशाप में भी विभाग के सभी सदस्यों ने सहभागिता की। डॉ. नवल सिंह एवं डॉ. एस.के.मल्होत्रा द्वारा इंडियन हिस्ट्री कॉग्रेस में भाग लिया गया।

गणित विभाग के 02 विद्यार्थी श्वेता साहू एवं आलोक कुमार सिंह उच्च माध्यमिक पात्रता परीक्षा में सफलता प्राप्त कर व्याख्याता (गणित) के रुप में चयनित हुए है। सत्र 2018–19 में अंकित तिवारी ने स्नातकोत्तर (गणित) में महाविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। गणित विभाग द्वारा सत्र् 2019–20 में कोविड–19 के संदर्भ में विद्यार्थियों को जागरूक करने हेतु Online

Quiz का आयोजन किया। सत्र् 2020–21 में विभाग द्वारा "Pure & Applied Mathematics" पर वेबिनार आयोजित किया गया।

विभाग द्वारा कक्षाओं के नियमित संचालन के साथ ही महाविद्यालयीन प्रशासन द्वारा समय–समय पर दिये गये उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक संचालन किया गया।

वाणिज्य विभाग

डॉ. एम.के.गुप्ता
विभागाध्यक्ष

वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं विभिन्न कक्षाओं के परीक्षा परिणामों के आधार पर यह सुनिश्चित हो चुका हैं कि वर्तमान समय में वाणिज्य शिक्षा का महत्व व रूझान बढ़ता जा रहा है। इंजीनियरिंग एवं मेडिकल को शिक्षा के साथ–साथ वाणिज्य शिक्षा, आधुनिक विपणन, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त क्षेत्र में बहुत ही–उपयोग है। वाणिज्य विषय के विद्यार्थी न केवल बैकिंग व वित्तीय संस्थाओं में रोजगार पा सकते हैं बल्कि व्यापार विपणन एवं प्रबंधन के क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर सुगमता से पा सकते हैं।

महाविद्यालय में वाणिज्य की शिक्षा वर्ष 1982–83 से की जा रही है। वर्तमान में महाविद्यालय में बी.कॉम. एवं एम.कॉम की कक्षाएँ संचालित है। बी.कॉम एवं एम.कॉम की कक्षाओं में विद्यार्थियों की संख्य :–

क्र.	सत्र्	विद्यार्थियों की संख्या		योग
		बी.कॉम.	एम.कॉम	
01	2019–20	636	78	714
02	2020–21	731	117	848

वर्तमान में महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग में स्नातक–बी.कॉम, बी.कॉम. कम्प्यूटर एवं स्नातकोत्तर–एम.कॉम स्तर पर कक्षाएं सुचारू रूप से संचालित की जा रही हैं। वर्तमान में विभाग में चार सदस्य है, जिसमे से 3 प्राध्यापक एवं 1 सहायक प्राध्यापक कार्यरत हैं। डॉ. एम.के.गुप्ता प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हैं। डॉ. जी.पी.यादव–प्राध्यापक, डॉ. असद अली–प्राध्यापक एवं डॉ. शिवाली शाक्य–सहायक प्राध्यापक के रूप में पदस्थ हैं विभाग के सभी सदस्य पूर्ण निष्ठा से अध्यापन कार्य संपन्न करा रहे हैं तथा साथ ही साथ अन्य विभागीय जिम्मेदारी का भी निष्ठा से निर्वाहन कर रहे हैं, श्रीमती विभा श्रीवास्तव, बी.कॉम., बी.कॉम. कम्प्यूटर एप्लीकेशन की फैकल्टी के रूप में कार्यरत हैं जो समय समय पर विद्यार्थियों को निर्देशित भी करती रहती हैं वर्ष 2020–21 में लॉकाडाउन के दौरान विद्यार्थियों को ऑनलाईन कक्षाओं के द्वारा अध्यापन कार्य कराया गया है विभाग के सदस्य प्रवेश कार्य, परीक्षा कार्य एवं विभाग के सभी कार्य पूर्ण जिम्मेदारी से कर रहे हैं। डॉ. असद अली महाविद्यालय आयकर का कार्य पूर्ण जिम्मदोरी से करते हैं। वर्ष 2021 में श्रीमती शिफा अब्बासी ने पीएच.डी. उपाधि, डॉ.एम.के.गुप्ता के निर्देशन मे प्राप्त की है। वर्ष 2021 में बी.कॉम. तृतीय वर्ष का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा है।

गृह विज्ञान विभाग

डॉ. सविता खरे
विभागाध्यक्ष

शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय पुराना बेनजीर भोपाल में गृह विज्ञान संकाय का प्रारंभ सत्र् 2018–19 में हुआ। विभाग में प्रारंभ में मूलभूत सुविधाओं के अभाव में भी परीक्षा परिणाम शत–प्रतिशत रहा। नवीन सत्र् 2019–20 में गत वर्ष की तुलना में छात्र–छात्राओं के प्रवेश में लगभग चार गुना बढ़ोतरी हुई है। जिससे अब सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कक्षायें सीमित साधनों एवं स्थान में भी सफलता पूर्वक संचालित होती हैं।

गृह विज्ञान संकाय में 2020–21 सत्र् में डॉ. सविता खरे, प्राध्यापक एवं डॉ. रूचि सोनी, डॉ. भारती गोस्वामी, डॉ. निशा यादव, सहायक प्राध्यापक के रूप में पदस्थ हैं।

प्रदेश में केवल एक मात्र यही महाविद्यालय है जहां इस संकाय में छात्राओं के साथ ही छात्र भी स्वेच्छा से अध्ययनरत हैं। अभी तक छात्र–छात्राओं की यह भ्रान्ति थी कि गृहविज्ञान विषय में केवल खाना पकाना व व्यंजन सिखाये जाते हैं। परन्तु विद्यार्थियों को प्रवेश के उपरान्त उनका यह भ्रम दूर हो गया। यह विषय वैज्ञानिक है तथा आगे अध्ययन उपरान्त अच्छे–अच्छे व्यवसाय व नौकरियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।

इस संकाय में पाठ्यक्रम के अतिरिक्त Eco-friendly गणेशजी, Clay modelling, रंगोली, अल्पना एवं गृह निर्माण हेतु नक्शे एवं Colour scheme द्वारा Interior decoration का प्रशिक्षण दिया जाता है। विद्यार्थियों ने महाविद्यालय में होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर सराहनीय स्थान प्राप्त किया जैसे– रंगोली, पोस्टर एवं कविता पाठ इत्यादि।

बी.एच.एस.सी. प्रथम वर्ष की छात्राओं द्वारा महाविद्यालय में **एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम** के तहत दिनांक 18/01/2020 को एक समूह नृत्य प्रस्तुत किया। गृह विज्ञान विभाग द्वारा दिनांक 05/06/2020 को "Corona Immunity & Mental Health Quiz" पर एक Free Online Quiz करवाया। दिनांक 03/02/2021 को 01 Webinar करवाया, जिसका Topic "Importance of Home Science in modern era".

विभाग में पदस्थ डॉ. सविता खरे, प्राध्यापक के निम्न Paper publish हुए–

- International publication in "Journal of Research Granthaalayah" ISSN (0)-235005308 ISSN (P)-23943629 Topic- Environmental Policies, Issue & execution.
- IGNOU (Vikram University, Ujjain) में Nutrition and Dietetics Diploma में Counsellor.

अर्थशास्त्र विभाग

डॉ. सरोज श्रीवास्तव
विभागाध्यक्ष

वर्तमान में कला संकाय में स्नातक स्तर पर अर्थशास्त्र विषय की स्वीकृति शासन द्वारा शिक्षण सत्र् 2018–19 में प्रदान की गई। अर्थशास्त्र विषय की प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाएं वर्तमान में संचालित है। वर्ष 2019–20 में छात्र–छात्राओं ने, महाविद्यालय में संचालित कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी दी। युवाउत्सव एवं वार्षिक उत्सव में उत्साह पूर्वक भाग लिया तथा सौंपी गई जिम्मेदारी को पूर्ण किया। वर्ष 2020–21 में कोविड 19 के कारण ऑनलाईन कक्षाएँ संचालित की गई।

विभाग में वर्तमान में 02 प्राध्यापक कार्यरत है– डॉ. सरोज श्रीवास्तव एवं डॉ. फिरोजा बी खान। डॉ. सरोज श्रीवास्तव महाविद्यालय की प्रभारी प्राचार्य भी हैं। प्राचार्य के रूप में डॉ. सरोज श्रीवास्तव के निर्देशन में महाविद्यालय में अनेक अकादमिक, फेकल्टी डेवल्पमेंट कार्यक्रम, रेमेडियल कक्षाएँ, वेबीनार एवं एक भारत श्रेष्ठ भारत का कार्यक्रम भी महाविद्यालय में करवाया। सभी प्रशासनिक जिम्मेदारियों के साथ–साथ, विद्यार्थियों के अध्ययन, अध्यापन में भी पूर्ण सहयोग किया, उनके निर्देशन में 03 छात्राओं को वर्ष 2017, 2018 में पीएच.डी. अवार्ड (बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय से) हुई है। 02 छात्राएँ अभी शोध अध्ययनरत है। नये भवन में विद्यार्थियों को पूर्ण सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा रही हैं जैसे– पुस्तकालय संबंधी, खेल, छात्रवृत्ति आदि। प्रति वर्ष कौशल विकास की ट्रेनिंग में भी विद्यार्थी भाग ले रहे हैं।

इतिहास विभाग

डॉ. मधुसूदन प्रकाश
विभागाध्यक्ष

महाविद्यालय में इतिहास विभाग की स्थापना वर्ष 2018 में हुई। विभाग में स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं का संचालन सुचारू रूप से किया जा रहा है। वर्तमान में इतिहास विषय मे बी.ए. प्रथम वर्ष में 147 तथा बी.ए. द्वितीय वर्ष में 186 विद्यार्थी एवं बी.ए. तृतीय वर्ष में 113 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं और स्नातकोत्तर एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर में 42 विद्यार्थी एवं एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर में 36 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। विभाग में कुल 524 विद्यार्थी पंजीकृत हैं।

विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों हेतु एक दिवसीय वेबीनार दिनांक 22 मार्च 2021 को ''भारतीय पुनर्जागरण सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन'' विषय पर एवं 05 फरवरी 2021 को "भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम'' विषय पर online परिचर्चा हेतु विषय विशेषज्ञ को आमंत्रित किया गया।

विभागीय पुस्तकालय में लगभग 75 पुस्तकें है। जो विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु रखी गयी है। विद्यार्थियों को समय–समय पर लाभ प्राप्त हो रहा है।

वर्तमान में इतिहास विभाग में 03 सहायक प्राध्यापक, डॉ. मधुसूदन प्रकाश, डॉ. एकता पाल एवं श्रीमती पुष्पा देवी साहू कार्यरत हैं। वर्ष 2020 में 'कोरोना वायरस का प्राणी जगत में प्रभाव' विषय में प्रकाशित शोध पुस्तिका में डॉ. मधुसूदन प्रकाश का एक लेख 'कोविड–19 के सामाजिक प्रभाव' एवं एक लेख अंतर्राष्ट्रीय जर्नल में ''सन् 1937 से 1947 तक भारत में संवैधानिक सुधारों का विवेचनात्मक अध्ययन'' विषय पर प्रकाशित है। मार्च 2020 में राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी छिंदवाड़ा से शोध पत्रों का संकलन '' क्षेत्रीय इतिहास के विविध आयाम'' में डॉ. एकता पाल का 01 लेख "Prehistoric Art in Pachmarhi Hills" पर प्रकाशित है।

सत्र् 2018–19 से 2019–20 में डॉ. सूर्यकांत शर्मा व डॉ. ज्योति आचार्य (अतिथि विद्वान) द्वारा अध्यापन कार्य किया गया।

भूगोल विभाग

डॉ. पूनम वासनिक
विभागाध्यक्ष

भूगोल एक अंतरअनुशासनिक विषय है, जिसका संबंध सभी वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय विषयों से है। इसी आवश्यकता की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय भोपाल के बी.ए. स्नातक पाठ्यक्रम में वर्ष 2018 से भूगोल विषय को सम्मिलित किया गया। वर्तमान में बी.ए. प्रथम वर्ष भूगोल में 69 विद्यार्थी, बी.ए. द्वितीय वर्ष में 79 विद्यार्थी तथा बी.ए. तृतीय वर्ष में 51 विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए। महाविद्यालय में डॉ. ललित किशोरी तिवारी (अतिथि विद्वान) द्वारा सत्र् 2018–2021 तक अध्यापन कार्य किया गया तत्पश्चात् जुलाई 2021 से पूनम वासनिक, सहायक प्राध्यापक, भूगोल द्वारा कार्यभार ग्रहण किया गया हैं। भूगोल विषय में स्नातक डिग्री का प्रथम बैच 2021 में उत्तीर्ण हुआ है, जो समस्त महाविद्यालय के लिए अत्यंत गौरव एवं हर्ष का विषय है।

राजनीतिशास्त्र विभाग

डॉ. व्ही.पी.एस.गौर
विभागाध्यक्ष

कला संकाय के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर राजनीति शास्त्र विषय की स्वीकृति शासन द्वारा शिक्षण सत्र् 2018–19 में प्रदान की गई। राजनीति शास्त्र विषय में बी.ए. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाएँ वर्तमान में संचालित हैं उपरोक्त कक्षाओं में सत्र् 20–21 में क्रमशः 146, 169 एवं 85 छात्रा/छात्राएँ अध्ययनरत हैं।

सत्र् 2019–20 में विभाग द्वारा साहित्यिक–सांस्कृतिक समिति के सहयोग से राष्ट्रपिता महात्मागांधी की 150वीं जंयती के उपलक्ष्य में उनके जीवन पर आधारित प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। चयनित महाविद्यालयीन दल ने जिला स्तर एवं विश्वविद्यालयीन स्तर पर आयोजित प्रश्न मंच प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है।

सत्र् 2020–21 में कोविड–19 संक्रमण एवं तदजनित त्रासदी के चलते विभाग की अकादमिक गतिविधियों पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। उक्त चुनौतियों का सामना करने के लिए शासन के निर्देशानुसार विभाग द्वारा अकादमिक पाठ्यक्रम को online कक्षाओं के माध्यम से सम्पन्न किया गया। इसका सुखद पहलू यह रहा कि छात्र एवं शिक्षक online कक्षाओं की तकनीकी से परिचित हुए।

विभाग द्वारा विश्व बैंक परियोजना के अंतर्गत रेमेडियल कक्षाओं का निर्देशानुसार आयोजन किया गया, जिसमें अन्य वक्ताओं के साथ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रोफेसर.टी.पी. सिंह द्वारा ''पर्यावरणवाद'' विषय पर online जुड़कर छात्रों का प्रबोधन किया गया।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर शासन के निर्देशानुसार online माध्यम से विद्यार्थियों से संवैधानिक मूल्यों के प्रति संवेदनशील एंव भारतीय लोकतंत्र में एक जिम्मदोर नागरिक के रूप में उन्हें अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया गया।

विभाग मे वर्तमान में एक प्राध्यापक एवं एक सहायक प्राध्यापक कार्यरत है जो अकादमिक गतिविधियों– फैकेल्टी डेवलपमेंट कार्यक्रम, वेबिनार में भागीदारी सुनिश्चित कर अपने शिक्षकीय कौशल वृद्धि हेतु प्रसायरत रहते हैं। महाविद्यालय प्रशासन द्वारा सौंपी गयी जिम्मेदारी तथा छात्रों हेतु विभिन्न हितग्राही योजनाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन कर विभाग महाविद्यालयीन विकास में अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

Departmental of Sociology

Dr. Madhvilata Dubey
Head of the Department

The Department of Socioloy was established in the college in the academic session 2018-19 and has both P.G. and U.G. Classes. In the starting year, there were only four students in PG 1st year but the strength in PG has increased to 38 students M.A. (Previous) and 35 students in M.A. (Final) in the year 2020-21. The strength of students in UG, during the session 20-21 is 400.

In order to make the subject interesting, regular discussions on current sociological topics and social events are held with students as we, as teachers feel that "Sociology" should not be limited just to the study of topics included in the syllabus.

To motivate students and build up their confidence, especially verbal communication, they are encouraged to talk on different social issues, along with presentations of topics in the syllabus. The discussions and communication between teachers and students have helped in boosting the confidence and verbal communication skills to a great extent.

To help "All Students" of the college, (not just students of sociology) an open forum of discussion on contemporary social issues and topics related to competitive exams "MANTHAN" was organized every Saturday till 2019-20 by Dr. Madhvilata Dubey, associate with Dr. Mukesh Dixit, Professor-Zoology and Dr. V.P.S. Gour, Professor-Political Science.

The Department of Sociology has also organized a lecture on Research Methodology for PG students under the MPHEQIP, World Bank. The lecture was delivered by Dr. S.C. Rai, Professor-Sociology, Govt. College Satna, M.P.

During the years 2018 to 2021, three Ph.D. degrees have been awarded and one Ph.D. thesis has been submitted under the guidance of Dr. Madhvilata Dubey. She has also been invited as a resource person in different platforms, such as refreshers courses, faculty development programmes, webinars, seminars etc. She has also delivered a number of lectures on different topics of sociology (both audio and video). Many of her lectures videos are available on youtube.

Dr. Harneet Chima has also represented Barkatuulah University in the "State Level Teachers and Employees Tournament" in badminton and chess, held in Jiwaji University (Gwalior) in which the Badminton Team (female players) was declared winner at the state level. **She has also taken an initiative during the lockdown period and distributed the essential food items to the poor and the needy specially to those who lost their jobs during the pendemic with the help of our college professors.**

Apart from Academic activities, the teachers of the department also contribute significantly to the college as members of different committees.

Dr. Madhavilata Dubey (HOD)

- Convener- Student Grievance Cell
- Nodal officer- Scholarship (2018-19 & 2019-20)
- Nodal officer- Admisison (B.A. 1st Year) 2019-20
- Member of Janbhagidari Committee
- Member of IQAC

- Board of Studies- Member of Central Board of Study Committee, Excellence College, Bhoj Open University.

Dr. Harneet Chima

- Convener- Tutor Guardian Committee (2018-19)
- Convener- Alumni Meet (2018-19)
- Convener- Student Tracking and Alumni
- Member- Literary and Cultural Committee
- Member- Sports Committee
- Member- Women Grievance Cell Committee
- Member- Tutor Guardian Committee (2019 onwords)
- Member- Discipline and Anti- Ragging Committee (2018 onwords)
- Member- Purchase Committee

Mrs. Neelima Chatterji

- Session 20-21- Nodal Officer (Admission)
- Observer in State Level Slogan Competition
- Admission Committee- M.A. Sociology 2020-21
- Examination form Committee, Member- B.A.
- Write off committee- Convener
- Library Committee- Convener
- Board of Studies – Subject Expert (Govt. Geetanjali College-Bhopal)

Dr. Alok Kumar Nigam

- In session 2019-20 Dr. Alok Kumar Nigam was working as Associate Professor in the Department of Sociology. He also worked as the Convenor, Janbhagidari Samiti, Govt. Dr. Shyama Prasad Mukharjee Science & Commerce College, Bhopal. At present, he is providing his services at the office of Honourable Minister, Higher Education, Govt. of M.P. on deputation.

हिन्दी विभाग

डॉ. संगीता गुप्ता
विभागाध्यक्ष

राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के लिए मातृभाषा अनिवार्य रहती है। इसी के तहत् महाविद्यालय में आधार पाठ्यक्रम–हिन्दी भाषा का अध्यापन कार्य कराया जा रहा है। रोजगारोन्मुखी हिन्दी विविध आयाम के अन्तर्गत तथा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कराया जाता है।

महाविद्यालय में हिन्दी विभाग में 02 प्राध्यापक कार्यरत हैं–डॉ. संगीता गुप्ता, डॉ. मीनू चतुर्वेदी। डॉ. मीनू चतुर्वेदी स्वतंत्र लेखन कार्य से जुड़ी हैं। इनकी एक पुस्तक 'हिन्दी के प्रतिनिधि कवि' प्रकाशित हो चुकी है। विभाग द्वारा विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के साथ–साथ नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा उनके व्यक्तित्व विकास को बढ़ाने हेतु सतत् प्रयास किये जाते हैं। समय–समय पर उन्हें भाषा से संबंधित विभिन्न विधाएं एवं वक्तृता कला द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है।

Department of English

Dr. Pragya Rawat
Head of the Dept.

The department of English has been an integral part of the college since its inception in the year 1982, and has contributed towards building prestige of the institute. English language acquires the strange phenomenon of being foreign as well as compulsory part of the curriculum in our country. In a Hindi speaking area like Bhopal, it is taught mainly by the bilingual method. From the outset, meanings are conveyed bilingually.

We try to develop reading, writing, speaking and listening skills of our students in order to facilitate their communicative competence in an anthentic context.

The department also conducts English foundation course in the Biotechnology classes. Presently there are two members in the department. Dr. Pragya Rawat and Mrs. Asha Wadhwani, who are simultaneously conducted Cambridge Assesment English Training Programme.

Directorate of Higher Education had started an important and ambitious project, CAE, training program to enhance Englsih language skills of the students in our state, inorder to increase their employability ratio. They had identified over 116 English teachers from eleven districts of Madhya Pradesh, as their first batch of trainers for this project.

Dr. Pragya Rawat was the coordinator cum trainer and Mrs. Asha Wadhwani was the trainer of the project. They both conducted the CAE, training programme in our college.

Dr. Pragya Rawat, Head of the Department

- Coordinator and Trainer Cambridge Assessment English Training Programme.
- Attended CAE training programme at RCVP Naronha Academy of Administration.
- Member Central Board of Studies, Barkatullah University, Bhopal
- University Nominee -Board of Studies, BSSS College, Bhopal
- Conducted: Induction Programme session related with literary and cultural activities of Higher Education.
- Speaker, National Seminar on Jawaharlal Nehru's 130th Birth Anniverssary celebration.
- Speaker, Mahatma Gandhi's 150th Birth Anniverssary programmes.
- Conducted Yuva Sankalp Varsh Programme on 20th August 2019 to celebrate former Prime Minister's Rajiv Gandhi's Birth Anniversary.
- Yuva Utsav Samiti:-
  Convenor- 2018-19
  Member- 2019-20
- Literary and Cultural Committee
  Member- 2018-19
  Member- 2019-20
- BA I Admission Committee- 2018-19
- Speaker: Vivekanand Jayanti celebrated in college.
- Speaker: At the release of Poetry Collection of Mrs.Pallavi Trivedi.

- PG Admission Committee- 2019-20
- Identify Card Attestation Committee Member- 2019-20
- Member Semester Cell 2019-20

Published Work:

- Poems published in different literary magazine.

Felicitation:

- Dr. Sushma Tiwari Samman by Dushyant kumar Smarak Pandulipi Sangrahalaya on 29th December 2019.
- Progressive writers Association- Vice President- Bhopal Unit
- IPTA- vice president Bhopal Unit

Webinars:

- CAETP-02
- Govt. MLB Girls College, Bhopal-01

Workshop:

Cyber Crime & Ethical Hacking

Mrs. Asha Wadhwani

Besides working as a member in the various committees of the college, Mrs. Asha Wadhwani has been a resource person at Nirvachan Sadan for the State Assembly Elections and Parliamentary elections in 2018-19

She was a trainer for Cambridge Assessment English Programme Training.

बढ़ते कदम...
सफलता की कहानी

Success Story...

VANDANA RAMNANI

I have completed my M.Sc in chemistry in 2017 with First position in the university. Then I got enrolled in Ph.D., under the guidance of Dr. Asha Verma Ma'am and completed course work again with top position in the Barkatullah University. During this period, I worked as project fellow at MPPCB Bhopal and completed 6 projects. But this was not enough for me. My dreams and ambitions are quite higher and different from others. So I quit the job and Ph.D. and decided to work independently. Doing Ph.D is not the process of gaining success and stability. So I have decided to complete my Research work in future. My research work was also published in the journals which are as follows:

1. **Bioassay Study of Biomedical Liquid Waste (treated Effluent) of Bhopal City, Madhya Pradesh, India**---- published in International Journal of Research and Review Vol.7; Issue: 1; January 2020
2. **Bioassay study on treated effluent of basic drug industries of Mandideep industrial area of Madhya Pradesh, India**---- published in Biodiversity International Journal

With ups and downs, I gained much experience from following Ed.Tech companies:

1) **Toppr.com** here I worked as chemistry expert to provide solution, clearing doubts of IIT-JEE & NEET level during live chat process, also done Quality check for other SME's also
2) **Meritnation.com** here I joined as chemistry SME i.e. subject matter expert.
3) Done video project for **Brainly** and **Unacademy** by using pentab and explained everything on portal.
4) Completed various text projects during lockdown to deliver highly concise material to the students of JEE Mains and other exams also.

Now I have gained stability by working at very reputed organization i.e. **Arihant Publication**, and **Unique Publisers**. Here my role is to provide solutions for IIT-JEE exams that are recently conducted, and solutions for many other state exams. Now I am preparing study material for M.Sc. 'chemistry' to provide solutions of questions that were asked in the entrance exams of different Top Universities like BHU, IIT-JAM, GATE, Delhi University and Kerala University etc.

For all this success I am obliged to parents, teachers and family for their constant support and encouragement.

फातिमा अहमद

मैं फातिमा अहमद महाविद्यालय में बी.एससी. मैथ्स की छात्रा रही हूं। महाविद्यालय में विवेकानंद करियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा समय–समय पर आयोजित होने वाले रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में रूचि पूर्वक भाग लेती रही हूं इस दौरान मैंने कई हुनर सीखे जैसे माडना, रेशम के धागों से ज्वेलरी बनाना, क्ले से सामान बनाना, पेपर मेसी से सजावट की चीजें बनाना इत्यादि। इस कार्यक्रम के प्रशिक्षक–श्रीमती प्रीति लाल (कला संगम की संचालक) एवं प्रशिक्षण की संयोजक–डॉ. आशा वर्मा थी।

लॉकडाउन में मैंने प्रशिक्षण में सीखे अभ्यास को दोहराया और सोशल मीडिया पर अपनी तैयार सामग्री का प्रदर्शन किया। इंस्टाग्राम पर मेरे द्वारा तैयार सामग्री की बिक्री हेतु ऑनलाईन बुकिंग संभव हो पाई यद्यपि अभी तक बहुत आय प्राप्त नहीं हुई लेकिन मेरे हुनर को पंसद बहुत किया जा रहा है जो मुझे बहुत खुशी प्रदान करता है इसके साथ ही मैंने जो सीखा अब उसमें भी कुछ नया करने लगी हूं। तात्पर्य यह है कि अगर आप में किसी कार्य को करने की लगन है तो उस दिशा में अभ्यास करते रहिए यही सफलता की कुंजी है।

Instagramlink:-
http://www.instagram.com/p/CRmF3sGjjlq/?utm_medium=copy_link

आत्मनिर्भरता के लिए वह किया जो मेरा मन कहता था.....

शिवम लोटस्वे

कभी भी एकल आय पर निर्भर न रहें
दूसरी आय बनाने के लिए निवेश करें

'बारेन बफेट'

बुवन बाम, कैरी मिनाटी और आशिष चंचलानी जैसे बड़े युटूबर्स नामों के बीच अगर आपको शिवम लोटस्वे का नाम पढ़ने के लिए मिलता है तो आश्चर्य मत कीजियेगा, क्योंकि यह नाम आपके ही महाविद्यालय से पढ़े हुए एक विद्यार्थी का है।

मैं शिवम लोटस्वे बी.ए. तृतीय वर्ष (समाजशास्त्र, इतिहास, राजनीतिक शास्त्र) इसी महाविद्यालय का विद्यार्थी हूँ। मेरी रूचि बचपन से ही पढ़ने के साथ–साथ कुछ अलग और रचनात्मक कार्य करने में रही है। स्कूल में रहते हुए मैंने कई प्रतियोगिताएँ जैसेः– वाद–विवाद प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता और ड्रामा आदि में भाग लेकर पुरूस्कार जीते। इसी तारतम्य में मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल व मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री जी द्वारा अवार्ड प्राप्त करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ।

आज मेरे युट्ब चैनल पर 16500 से भी ज्यादा सब्सक्राईबर एवं 16 लाख से भी अधिक व्यूज हैं जो निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। मेरे चैनल में मुख्यतः शिक्षा पर आधारित कंटेट है जो कि स्कूल और महाविद्यालय के विद्यार्थी के बीच लोकप्रिय है। यूट्यूब चैनल के माध्यम से मुझे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का अवसर प्राप्त हुआ है, जो कि वर्तमान परिस्थितियों में भीड़ से अलग करने और अपना नाम अपनी ही रूचि के क्षेत्र में बनाने का मौका मिला। खासकर कोविड जैसी वैश्विक महामारी दौरान जिसमें कई लोगों को अपने व्यापार एवं नौकरियाँ गवानी पड़ीं, वहीं इस तरह की आर्थिक गतिविधियों को अपनाकर भी कोविड जैसी महामारी में भी अपनी आजीविका चलाई जा सकती है। यह केवल एक सांकेतिक आय का स्त्रोत है, इसी तरह की अन्य गतिविधियों जैसे फ्रीलांसर (वे जो अपनी कार्य दक्षता और अपने समय अनुसार कार्य करके पैसा कमाते है), सोशल मीडिया इनफ्लूएंजर जो कि फेसबुक, इंस्टाग्राम और वाट्सएप के माध्यम से कमाई करते हैं, हमसे सब भी इस तरह के कार्यो को करके, लीग से हटकर कुछ नया और बेहतरीन कर सकतें हैं।

मेरा मानना है कि किसी भी बड़ी उपलब्धि के लिए बहुत सर्व–सुविधा युक्त चीजों की आवश्यकता नहीं है। बल्कि बहुत कम संसाधनों में भी बड़े से बड़े मुकाम हासिल किए जा सकते हैं, जरूरत है तो सिर्फ खुद पर विश्वास रखने की, आप सब भी ऊपर सुझाय गए कदमों पर चलकर आत्मनिर्भरता व आत्मनिर्भर भारत के प्रति कदम बढ़ा सकते हैं।

चैनल लिंकः– https://www.youtube.com/c/shivamlotusway

रचना संदर्भ...

मेरी माँ

एक–एक पल की याद आती है।
'माँ' याद तुम्हारी पल–पल सताती है ।।
मैं रोज तुम्हारी तस्वीर बनाता हूँ।
उसे देख–देखकर 'माँ' मै कविता गाता हूँ ।।
कभी तस्वीर धुँधली दिखाई देती है ।
वह कल्पना में कविताएँ लेती है, ।।
कविता मैं तुझ पर ही लिखता हूँ माँ ।
नजरों में तुम्हारी मैं सिर्फ बेटा ही दिखता हूँ ।।
मुझे कुछ कहने करने की शक्ति तुम भर दो ।
मै कुछ अच्छा करूँ ऐसा चमत्कार कर दो ।।
बता दो मुझे 'माँ' तुम्हारी याद क्यूँ आती है ।
'माँ' क्या तुम्हें भी मेरी इसी तरह याद आती है ।।

नीतीश पंसोरिया
बी.काम. द्वितीय वर्ष

मेरी अभिलाषा

धूमिल तुषार चाहे कितना भी हो,
भयावह तिमिर चाहे कितना भी हो।
आशा की प्रभा कभी खत्म होती नहीं,
चाहे तूफानों से उसका सामना हो।।
किसी पंथ की न उपेक्षा हो,
किसी धर्म में न प्रताड़ना हो।
धर्मांधता को त्याग हम मनुष्य,
मनुष्यता के लिए पनाह हो।।
भ्रांतियों को चाहे तोड़ना हो,
या रूढ़ियों को बदलना हो।
रहना होगा हमेशा इसके लिए अटल,
चाहे कितनी भी आलोचना हो।।
साहचर्य की हम में भावना हो,
अभिनव और प्रोत्साहक हमारी कल्पना हो।
है यही मुराद मेरे हृदय में,
काश ! पूर्ण यह मेरी अभिलाषा हो।।
चाहे जनश्रुति को बदलना हो,
या मानसिकता को बदलना हो।
लक्ष्य है अंतिम, मेरे जीवन का,
अविरल मेरा संघर्ष रहेगा,
स्त्री–पुरूष समानता हो।।

पूजा बघेल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

बंद करो वृक्षों की कटाई

हे मानव तुझे, तनिक भी लज्जा नहीं आई।
कृत्यों को तेरे देख, मानवता भी शरमाई।
हे मानव तुझे, तनिक भी लज्जा नहीं आई।
करके वृक्षों का सर्वनाश, करते हो स्वयं का विकास।
देकर वृक्षों को मृत्यु, क्यों बन रहे खुद के शत्रु।
जला पखेरूओं का ठिकाना, बना रहे अपना आशियाना।
उनका हनन कर करके, तेरा जीवन पार नहीं।
वो भी इसी जगत के प्राणी, क्या जीने का अधिकार नहीं।
पृथ्वी माँ कर रही गुहार, वृक्ष हैं उसका श्रृंगार।
बंद करो इन पर प्रहार, पेड़ लगाओ बारम्बार।
तेरे कुकर्मों के कारण, पृथ्वी माँ भी गुस्साई।
हे मानव तुझे, तनिक भी लज्जा नहीं आई।
कुपित होकर धरती माँ ने, जब हुंकार भरी।
तब दुनियां पर छाया संकंट, जिदंगी मौत से जूझ रही।
कोरोना कोई बीमारी नहीं, तेरी करनी का फल है।
कब समझोगे वृक्षों से ही, तुम्हारा आज और कल है।
आइसोलेशन से हुई परेशानी, मास्क लॉकडाउन की, अलग कहानी।
ऑक्सीजन की कमी ने किये, कई जीवन खत्म।
चहूँ ओर छा गया, घोर मातम।
क्या समझते हो तुम, दर्द उन्हें भी होता है।
मत काटो, मुझे जीना है, कहकर वृक्ष भी रोता है।
दर्द अनुभव किया होगा, जब अपनों के जाने की चोट खाई।
हे मानव तुझे, तनिक भी लज्जा नहीं आई।
काट रहे हो तुम वृक्षों को, कुछ भी नहीं विचार किया।
वृक्षों ने जो कुछ भी पाया, सब हम पर ही वार दिया।
सभी लगाएँ, मिलकर वृक्ष।
जिससे हो पर्यावरण स्वच्छ।

शान्ति चौरसिया
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

पेड़

आप को सुनाता हूँ एक पेड़ की कहानी
अपनी जुबानी।
एक पेड़ एक जिंदगी प्रदान करता है,
एक पेड़ बेघर को आशियां प्रदान करता है।
भूखे के लिये यह भोजन है
राहगीर के लिये आसरा है।
पक्षियों का यह हितैषी
व्यापारियों का यह है व्यापार।
माटी में इसके जीवन का सार,
बीमारों का यह है इलाज।
फिर भी हर पल क्यों अब जंगलों में आग है।।
इक जलते पेड़ कि यह पुकार है,
उद्योगों के धुएँ में मेरा अस्तित्व अब खो रहा।
जीवन में हर पल अब अंधकार है
इक जलते पेड़ कि यह पुकार है।
बचाओ बचाओ, मुझे बचाओ।।

शिवम कुमार लोटस्वे
बी.ए. द्वितीय वर्ष

नन्हीं परी

वह एक नन्हीं परी जब वह जन्म लेती है।
तो लोग उसे मारने की कोशिश करते है।
जब वह इस संसार में कदम रखती है
तो लोग उसे डराने की कोशिश करते हैं।
जब वह कुछ बड़ी होती है तो,
माँ से पूछकर काम करो।
जब उसका भाई आता है तो,
उसकी देखभाल करो।
जब वह किसी की पत्नि बने तो,
उसके परिवार की देखभाल करो।
जब वह एक माँ बने तो,
अपने बच्चों का संसार रचो।
जब वह बूढ़ी हो जाए तो,
बच्चों की हाँ में हाँ करो।
आखिर उसने कभी अपने लिए तो जिया ही नहीं ?
अपने हक के लिए कभी लड़ा ही नहीं ?
क्या उसके अपने कुछ सपने नहीं होते ?
उसका सारा जीवन एक अच्छी माँ, बहन,
बेटी, पत्नी, बहू बनकर ही सिमट गया।
उसका जो सपना था वो उसी की आँखो में,
कही बिखरकर टूट गया।

शिवानी अग्रवाल
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

अनमोल बेटियाँ

शौर्य, वीरता और साहस की, निशान हैं, ये बेटियाँ।।
आज हमारे नव भारत की, शान हैं, ये बेटियाँ।।
तुम बेटा बेटी क्या करते हो, तोड़ दो सारे बंधन ।।
बेटा अगर हल्की हवा है, तो तूफान हैं, ये बेटियाँ।।
इनका कोई मोल नहीं, अनमोल हैं, ये बेटियाँ।।
आज हमारे नव भारत की शान हैं, ये बेटियाँ।।
शौर्य, वीरता और साहस की पहचान हैं, ये बेटियाँ।।

अमित
बी.ए. द्वितीय वर्ष

नशा नाश हैं

नशा जीवन का नाश है।
समाज का विनाश है।
नशा उन्नति में बाधा है।
समाज में इसकी पकड़ ज्यादा है।
उजाड़ा नशे ने घरों को।
बिगाड़ा नशे ने मासूमों को।
कितनों को बेघर किया।
युवाओं को बर्बाद किया।
नशा जीवन का नाश है।
समाज का विनाश है।
आओ मिलकर प्रण लें।
मन में दृढ़ संकल्प लें।
नशा मुक्ति अभियान चलायें।
देश को आगे बढ़ाये।
यही है मेरा संदेश,
नशा मुक्त हो भारत देश।

रेशमा चौरे
बी.एस.सी.बायो तृतीय वर्ष

रूको नहीं, बढ़े चलो

तुम ज्ञान हो, तुम ज्योत हो, तुम जीत का आधार हो।
मैं चल रहा जिस राह पे, साथ तुम भी चल पड़ो।
रूको नहीं थको नहीं, साथ तुम भी चल पड़ो।
ये जीत है उत्साह की, यूं हार के खड़े न हो।
जो चल पड़े हो साथ तुम, तुम्हारा भी सम्मान हो।
जिस राह पर खड़े हो तुम, वो राह है ज्ञान की।
रूके हुए कदम से तुम, ज्ञान को प्रवाह दो।
तुम जीत हो आज की, कल का तुम आधार हो।
ये भूत भविष्य हो तुम्हीं, आगे बढ़ों बढ़े चलो।
आगे बढ़ो बढ़े चलो।
तुम ज्ञान हो तुम ज्योत हो, तुम जीत का आधार हो।
रूको नहीं, बढ़े चलो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

विवेक शर्मा
बी.ए. प्रथम वर्ष

बचपन

कागज की कश्ती थी
पानी का किनारा था।
खेलने की मस्ती थी
ये दिल आवारा था।
कहाँ आ गए हम इस समझदारी के दलदल मे
ओ नादान बचपन कितना प्यारा था।
चील उड़ी.... कौआ उड़ा...
उनके साथ ही बचपन कहीं उड़ ही गया।
राजा, मंत्री, चोर, सिपाही जैसा खेल खेलते थे
और आज PUBG, TIC-TOK से फुरसत कहाँ।
स्कूल की एक याद आती है
कि सर जब सबका Homework चेक करते थे।
हमारी भगवान से यही प्रार्थना होती थी
हे भगवान! घंटी जल्दी बज जाए।
घंटी बजते ही मानो ऐसा लगता था
कि जेल जाने से बचे।
Miss You, My School Life.....

शिवम मिश्रा
बी.एस.सी.प्रथम वर्ष

नवोन्मेष

शक हरदम मुझको है रहता
अब नये दौर में परंपराओ को छोड़ कर,
मै हर निर्णय स्वविवेक से हूँ लेता।
इसलिए जग प्रपंच के निंदा रस में,
मिठास स्वरूप मैं ही हूँ घुल जाता
क्योंकि इन मजबूरियों के भी समुंदर में,
मैं अफसोस को नहीं तैरते देख सकता
मैं कर्तव्यों की दरिया में कर्मों की पतवार बनाकर,
स्वविवेक की नाव को हूं तैराता
हाँ, पावन पावस जल से इस सहज कर्मपथ पर,
अकसर आती है बाधा !
बाधा ऐसी,
जैसे बनकर आए तूफान, बवंडर
अंधड और चक्रवात।
इनको तो बहला–फुसलाकर मना लेता हूँ
देकर अपने कर्मों की सौगात
पर वे उद्‌गार मेरे दिल के जिनका
कर्तव्यों की परिपाटी में हो जाता है प्रतिकार।
और कर्मों की बलिवेदी पर उनका
हो जाता है संहार
तब चूर चूर बेजान दिल को भी मैं
अपने मजबूत इरादों की जंजीरों से हूँ कस देता।
क्योंकि 'मंजिल' रूपी सुंदरी से ही तो है
मेरा मनमोहक नाता।

रवि चौहान
एम.ए. उत्तरार्द्ध
समाजशास्त्र

परीक्षा पास

सम्हालों तो सम्हल जाओगे, उठो तो जग जाओगे
मन को मार तृष्णा भगा, अंतःकरण में सरस्वती जगाओ
इस वर्ष ऐसा आदर्श ला दो, कि पढ़ने में लगन लगा दो
अपने को खुश रख खुशियां ला दो, परीक्षाएँ अपनी सरल बना दो
तुम पढ़ते रहो पढ़ जाओगे, लिखते रहो लिख जाओगे
लिख पढ़ एक दिन अमन, जन जागरण जगाओगे
करो प्रतिज्ञा आज, न चिंता घर झंझट की
करो तपस्या आज, न व्यापे बाधा घर की
करो त्याग पाउच खाना, पढ़ना, बढ़ना इच्छाओं की
एकमात्र विद्या अध्ययन है, अमन चैन जीवन की
इस पर गर तुम चलते जाना
अमन का वरदान ये पाना
कम्प्यूटर न फेल करेगा, लिखना दृढ़ विश्वास जगाना
सरल काम विद्या अध्ययन है, एकाग्रता से पेपर पढ़ना
प्रश्नों को पहले समझना, पूछा जो हो वही लिखना
नहीं समझना परीक्षा कठिन है, प्रश्नों के उत्तर दिल में है
बस उत्तर तुम वही है लिखना, सरल हो जाये प्रश्नोत्तर लिखना
इस तरह पेपर हर देना, हर प्रश्नों का उत्तर लिखना
पासिंग मार्क आ जायेंगे, पर समय से पहले न आना
पेपर देकर घर तुम आना, मनन करोगे मार्किंग करना
होगा विश्वास पास होने का, फिर अगले पेपर की तैयारी करना
इसी तरह तैयारी कर कर, हर पेपर को सरल है करना
पूर्ण परीक्षा पास करे मां विद्याधन बस खर्च है करना

मयंक चौरसिया
एम.एस. वनस्पतिशास्त्र तृतीय सेम

तुम कौन

अरूणोदय की लाली बिखरी,
सूर्योदय की किरण, सुनहरी,
भोर हुई चल उठ पगली,
अलसाई, अँगड़ाई लेकर,
ओढ़ सवि की आभा ऊर्जा,
भर उजास घर आँगन देहरी।

आज तनिक में देर से जागी,
झटपट रसोई की ओर भागी,
लटें समेट, ले सांसें गहरी,
सबकी फरमाइशों पर खरी उतरी।
महकाया घर का हर कोना,
भूल गई मैं दिन दोपहरी।

ऊहापोह प्रश्नों में उलझी,
अचानक आईने के सामने से गुजरी
कौन हो तुम, तुम हो कौन?
मैं खड़ी थी स्तब्ध बिल्कुल मौन,
अपेक्षाओं से उपेक्षाओं तक,
आलोचनाओं से उलाहनाओं तक,
न तरूणाई मुरझाई,
न मुस्कान कुम्हलाई
न टूटी, न बिखरी
सुनो तुम कैसी स्त्री?

डॉ. एकता पाल
सहायक प्राध्यापक, इतिहास

घर जाना है....

धरती के इस छोर से
फिर शुरू कर दिया है चलना
सभ्यताओं के विकसित जंगल से,
बाहर हांके जा रहे ये चीटियों के
झुण्ड नहीं इंसानों के हुजूम हैं
जिन्हें सभ्य भाषा में
कामगार माना जाता है
इन्हें घर जाना है!

जिनके पास नहीं इस छोर से
उस छोर तक कोई घर
उन्हें घर जाना है
जो पोटलियों में पैदा होते गए
जनानी के बच्चे से आदमकद जवान तक
जो दफ़्न करते गए दादी नानी
के पीढ़ियों के किस्से इनमें
उन्हें घर जाना है!

जे निन्यानवै से एक सौ निन्यानवै
करें नौ सौ निन्यानवे के रंगीन
कांचों के जश्न में सराबोर मॉल
के तिलिस्म को ताजमहल की
हुनरबंदी सा हमारे लिए तराशते रहे
सदियों से ताकते रहे हर शहर की
तीसरी सड़क से
उस हुजूम को घर जाना है।

इन दिनों जबकि हमें अपने घर
अधिक अच्छे लगने लगे हैं
संसार भर में पृथ्वी पर तारी इंसानों
की मृत्यु का दर्दनाक खौफ़ छाया है
तब ये हुजूम बेदखली का फ़रमान
अपने सीने पर उठाए क्यों निकल
पड़े हैं तपिश में!

जिनका नहीं कोई घर
तो फिर उन्हें घर क्यों जाना है!
क्या उन्हें अपने आदम गाँव की
हवा पर है भरोसा या उस आसमान
के आसपास पहुँचना चाहते हैं जिसकी तनी
अरगनी पर फटीचे हुए कपडे सा टांग
देंगे अपने लुटे जिस्मों को
ये उनके घर पहुँचने की मुहिम का
आखिरी मंज़र होगा!

डॉ. प्रज्ञा रावत
प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग

Poem
The Idea of Love

It is induced into our lives
Its made about roses
About chocolates
About dinner dates and luxurious vacations
But just for a moment
Can we make it about
Hand written letters
And silent stares
About waiting for them at bus stops
About a shy hello
About waiting for one glance of them at the window
About "don't text back; its mom's phone"
About those expensive top up recharges
About exchanging lunch boxes and learning hand written notes behind
About asking them for revision notes
And never actually reading them just for a moment
Can we make it about?
All the simplest things
That we have lost?

Dr. Harsha Jalori
Professor, Physics

ALPHABET OF LIFE MORAL

A- Always have the courage to say sorry.
B- Be Kind, the compassionate.
C- Control your judgements.
D- Don't let yourself get discourged.
E- Every minute is precious-don't waste your time.
F- Find out what is nice in each other.
G- Give until it hurts.
H- Have deep respect for each other.
I- If you really want to love god, love one another.
J- Just do small things with great love.
K- Keep your heart clean.
L- Learn to pray, love to pray and pray often.
M- Make times for each other in your family.
N- Never tell lies.
O- Only believe you are precious to god.
P- Put love in whatever you do.
Q- Quite a lot of people have forgotten what love is…. So begin to give the joy of loving.
R- Refrain from prejudice.
S- Smile at each other.
T- Take the trouble to listen.
U- Use your talents for the glory of god.
V- Very often, we look but don't see, let us look and see.
W- When humiliations come, accept it and offer it.
X- Excuse rather than accuse.
Y- You must learn to forgive.
Z- Zeal is a second name for love, do not lose that zeal!

"God bless u brother!"

"The true purpose of educations is to make minds, not careers."

Ayush jain

पुरजन जी

डॉ. सरोज श्रीवास्तव
प्राध्यापक,अर्थशास्त्र

मैं उन्हीं की भाषा में कुछ कहना चाहती हूँ जो मेरे प्रेरणा स्त्रोत हैं। ''जिसका हम सब उपयोग कर रहे हैं वह शरीर और संसार है'' खूबसूरत हो, लुभावना हो, उम्मीद आशा का दीप जला रहा हो तभी सुख शान्ति और आनन्द अभिव्यक्त होता है। संसार और शरीर का जो उपयोग कर रहा है वह मन है, मन को जो सहयोग दे रहा है वह प्राण है। दुनियाँ का हर तत्व पदार्थ सूक्ष्म से भौतिक की ओर यात्रा करके आया है और आ रहा है फिर क्यों स्वार्थी संसार मूक जानवरों की भाषा न समझ कर उन पर अत्याचार करता रहा है? क्या सारी सृष्टि स्नेह तत्व के अभाव से घिरी यात्रा कर रही है ? हम सब कुछ खोज रहे हैं, वह शायद आत्म बोध है। एक छोटी सी बात आपको बता दूँ जो सत्य है वह है 'प्रेम की भाषा।'

अब मैं उनका सांसारिक परिचय दूँ लोहे के सीकंचों से बना उनका घर तालाब किनारे सबेरे का सूरज प्रकाश की किरणें उन्हीं की दहलीज पर बिखेरता है। कहने को उनका पूरा परिवार आस–पास बसा हुआ है किन्तु उनका अपना घर यही है जो लोहे की सलाखों की तरह उनके आत्मबल को मजबूत बनाये हुये है। सुबह दरवाजे पर गाय खड़ी हो जाती है। तोते, बन्दर, मोर तो जैसे उन्हीं की आवाज से सामने आ खड़े होते हैं। बीमार पशु–पक्षी रात में बसेरा करते हैं अकेले 'पुरजन जी' मानो सबका काम निपटाते–निपटाते थक जाते हैं। कब उनकी ड़्यूटी का समय हो जाता है उन्हें कुछ ध्यान ही नहीं रहता है। पुरजन जी की जिन्दगी इसी तरह इन लोगों के साथ बड़ी मौज मस्ती से कट रही है। मटमैली धोती या कुर्ता पजामा, कभी–कभी थिगड़ा लगा कोट–पेन्ट भी पहन लेते हैं। बहुत पुरानी लम्बे डन्डे की सायकल जिसके ब्रेक नहीं हैं सीट फटी हुई है, सामने बड़ा सा मटमैला थैला हेन्डिल पर टंगा है तथा कैरियर पर बोरी नुमा थैला जिसमें बासी रोटी तथा कई प्रकार के अनाज के दाने भरे हुये हैं रास्ते भर सबकी खैर–खबर पूछते हुये कुत्तों को, गाय को रोटी डालते हुये वे ड्यूटी के लिये रवाना होते हैं।

कभी रास्ते में मिल जाते हैं तो अवश्य ही पूछते हैं और मालिक! सब अच्छा चल रहा है। अरे इन मूक प्राणियों को कुछ दो। यह तो अपनी व्यथा नहीं कह सकते। किन्तु संवेदनशील तो हैं। उनकी निर्दोष हंसी तथा आशीर्वाद का सिलसिला मन को आर्द्र बना देता था। लोगों ने उन्हें जब से जाना है देखा है तब से ही वे जानवरों की सेवा में लगे हैं। हर वर्ष अनेक संस्थाओं से धनिक वर्ग से, यहाँ तक कि कलेक्टर को भी ज्ञापन देने से नहीं चूकते हैं। उनकी सेवा और आग्रह देख कर लगता है कि ममत्व का उससे अच्छा उदाहरण कहीं और नहीं मिल सकता। मैंने कई बार उनसे प्रश्न किया। क्या जिन्दगी एक अभिव्यक्ति है? बहाव अथवा ठहराव है? उनका उत्तर था– प्रकृति के कण–कण में क्रियाशीलता है प्रेम, राग, द्वेष, करूणा, ममता सबकी अपनी–अपनी पहचान है पर मालिक! मुझे यह प्रतीत होता है कि इन सब से ऊपर है अपनेपन का एहसास। जिसने प्रेम किया है उसी ने सब कुछ पा लिया है। यह तर्क उनके गहरेपन को उजागर करता है। मुझे उनके प्रेम की परिभाषा अच्छी लगी। मैंने पूछा कि आपने अपनी गृहस्थी क्यों नहीं बनाई? वे सहजता से इस प्रश्न को टाल गये! अरे! बस भगवान की मर्जी है। बचपन से ही मैने मूक जानवरों की पीड़ा को आत्मसात् कर लिया। यही तो प्रेम है। तुम सबको भी प्रेम करना चाहिए। ये प्राणी इस भाषा को जल्दी पहचानते हैं। यही आत्मा और परमात्मा का रिश्ता है। भला परमात्मा को और कहां ढूंढे और तुम लोग मूक, असहाय प्राणियों से प्रेम करने में क्यों भयभीत हो रहे हो? मैं तुम लोगों को उनकी भाषा समझाना चाहता हूँ। वे बड़ी आसानी से सब समझ जाते हैं। कभी–कभी तो आनन्द विभोर होकर नाच भी उठते हैं। मैंने इनकी पीड़ा को महसूस किया। इनकी चोट पर कोई व्यक्ति मरहम नहीं लगाता। अरे! देखो उड़ते–उड़ते जब इन्हें करंट लग जाता है तो इन्हें कोई नहीं पुचकारता। कभी इनका कोई शिकार करता है, कभी बच्चे पत्थर मार कर इन्हें भगाते हैं। संसार इनके सुख–दुख में कभी शामिल नहीं होता। इस तरह पूरन जी सहसा पूछते, भला इन प्राणियों ने क्या कसूर किया हैं? जीवन में बाढ़ आती है, भूकंप आता है, लावा फूट कर बहने लगता है। इस सबके पीछे कारण विरोध का ही होता हैं। प्रकृति का विरोध भी अतिक्रमण का परिणाम है। प्राणियों का इनके साथ विरोध क्यों ? मेरा जन्म

इन्हीं के लिये हुआ है। सुबह–शाम गलियों में इनकी हाँक सुनाई देती है। मैनें स्वयं उन्हें हर शाम सायकल लेकर भिक्षा मांगते देखा है। जल्दी बची–खुची रोटी दे दो, मैं ले लूंगा। उनकी सायकल के पीछे कुत्ते दौड़ते है। बंदर, मोर उनकी आवाज से परिचित है।

घर आकर कोदो, ज्वार, मक्का, गीला भात, आलू का चोखा जो भी मिल जाता है उसी में नमक मिर्च डाल कर खा लेते हैं। घर में जो बीमार जानवर हैं उन्हें भी यही खाना खिला देते हैं। जानवर वाला भोजन पुरजन जी स्वयं भी करते हैं। हर महीने पगार मिलते ही अनाज खरीदा जाता है। पानी के घोल जैसी सब्जी और मिट्टी के तवे पर रोटियाँ बनाई जाती हैं। सब मिल कर इसी खाने का चटकारा लेते है। कहने को कौन उनका नही है। सगे भाई, भौजाई, बच्चे सभी सभी चोखा खाना और दही खा रहे है। कुछ समय पहले फुसफुसाहट अवश्य हुई थी कि अपना बेगाने सा रूप बनाये हुये भिक्षा मांगते घूमते हैं। हमारी समाज में क्या इज्जत रह गई है। भला! अब हम इन्हें अपना जमीन जायदाद का हिस्सा नही देंगे। फिर सुनने आया कि पास पड़ोसी बार–बार पूँछते है कि देवर की शादी नही की। देखो माँ–बाप नहीं तो भाई–भौजाई साथ नहीं दे रहे हैं। किन्तु यह विवाद ज्यादा समय तक नहीं चला।

एक दिन फिर मैंने पूछा कि आपने आम लोगों की तरह घर क्यों नहीं बसाया? हर समय सबको मालिक कहते रहते हो क्यों? मालिक शब्द अच्छा लगता है। मटमैले कुरते से हाथ पोंछते हुये पानी का गिलास हाथ के ऊपर रखते हुये वे कहते कि मैनें एक–एक करके अनेक मकान बनाये। उन सब में से एक मकान ऐसा बनाया जो दिन भर बनाता था और रात में तोड़ देता था। मन ने कहा कि संसार की दुविधा में मत पड़ो अगर शंका में पड़ जाओगे तो त्रिशंकु की तरह लटक कर ऊपर जाना पड़ेगा। मुझे तो प्रेम और सेवा में तुष्टि मिली है। मैंने कभी अपने नाम और प्रतिष्ठा का सौदा नहीं किया। कभी राजनीतिज्ञ की पंक्ति में नहीं होना चाहा। मैं तो अपने इस शरीर को उनकी सेवा में समर्पित करना चाहता हूँ। आप ही सोचो कितना बोझ होगा उन व्यक्तियों पर जो इनकी हत्या करता है, करवाता है। ये तो मूक प्राणी हैं किन्तु वे क्यों भूल जाते हैं कि कभी उनकी बारी भी आ सकती है। आप सब मिल कर इन जानवरों की रक्षा के लिये कुछ करो। इतना कहते–कहते उनकी आँखें मानो भर आतीं! मुख विवर्ण हो जाता, कभी–कभी तो गुस्से में आ जाते।

कुछ समय बाद मेरा वहां से तबादला हो गया। दस वर्षो का समय तो ऐसे उड़ गया जैसे पक्षियों का झुण्ड उड़ जाता है। पता ही नहीं चला। अचानक मेरा वहाँ जाना हुआ। मैं पुनः उन्हें ढूंढने लगी। पता चला कि वे नौकरी से रिटायर्ड हो चुके हैं। मन नहीं माना। मैं उनके घर तक चली गई। घर में देखा तो स्तब्ध रह गई गढ़ढे में धसी हुई आँखें, शरीर बुखार से तप रहा, उठने बैठने में तकलीफ हो रही थी। नंगे पांव छालों से भर गये थे, कपड़ों पर मैल की परत और गहरी हो गई थी। लग रहा था कि काफी दिनों से शरीर की देख–रेख नहीं हुई है। मेरी आँखे छलक गई, दिल भर आया। झूठा गुस्सा दिखाते हुए मैनें कहा कि नंगे पैर और लाठी टेक–टेक कर सारे शहर में क्या तलाशते रहते हो कि कोई फरिश्ता मिल जावेगा जो तुम्हारे मूक जानवरों की तीमारदारी करेगा। अरे, नहीं मालिक! पुरजन जी ने बोझिल आवाज में कहा ''कल तक तो लगता था कि मुझमें हिम्मत है। मेरे लोहे के घर में प्राणी सुरक्षित हैं। किन्तु अब....मेरा शरीर जवाब दे रहा है....मैं भारी मन से उठी। दरवाजे पर अभी भी जावनर प्रतीक्षा में बैठे हुये थे.....।''

घर जाकर रह–रह कर मुझे उनकी बात याद आने लगी ''व्यक्ति तो पद का सौदा करते हैं। लक्ष्मी को पास बिठाते हैं। मेरे तो जीवन का संकल्प है कि मैं इनकी सेवा करता हुआ मरूँ। मरने के बाद मेरे शरीर को पारितोषक के रूप में जानवरों के लिये खुला छोड़ दिया जावे। मेरी सारी अपेक्षाएं पूर्ण हो जावेंगी।''

कब तक मैं भारी कदमों से बरामदे में चहल कदमी करती रही इसका मुझे पता ही नहीं.....

जो मोबाईल में खो गया है उसका क्या करें

वासु चौरे
एम.ए समाजशास्त्र

अगर कोई सच में खो जाए या घर से बिना वजह कहीं निकल जाए, लापता हो जाए तो, हम उसे खोजने की कोशिश कर सकते हैं, अखबारों में विज्ञापन दे सकते हैं, पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करा सकते हैं, लेकिन कहीं अगर मोबाईल खो गया है तो उसके लिए क्या करें? उसे इस आभासी दुनिया से वास्तविक दुनिया में वापस कैसे लाया जाए? समस्या यही है, हम में से अधिकतर लोग मोबाईल में खो चुके हैं। एक तीन इंच के डिवाइस के अंदर हमारी पूरी दुनिया ही समा गई है। पहले लोग सुबह उठते ही प्रभु के दर्शन करते थे, अब बिस्तर पर ही मोबाईल टटोलते हुए उसका पैटर्न लॉक खोलने की कोशिश करते हैं। सूर्य की किरणों से पहले हमारी आंखों तक फोन का रेडिएशन पहुचंता है और शुरूआत की तरह ही पूरे दिन भर मोबाईल हम से चिपका रहता है। दिन में कई बार आपकी परछाई जरूर आपका साथ छोड़ देती हो लेकिन मोबाईल उस वक्त भी मौजूद रहता है। विश्वास मानिए यह हमारे और आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध हो रहा है, होने वाला है।

जिस तकनीक को हमारी मदद के लिए विकसित किया गया था, हम उसका इतना अति उपभोग करने लगे हैं कि वह अब हमारे लिए मुसीबत बन गई है। सबसे ज्यादा मुसीबत अगर किसी चीज ने बढ़ाई है तो वह है सोशल मीडिया या यूं कहें कि एक आभासी दुनिया जो आपके फोन के अंदर समाई हुई है और बड़े दुर्भाग्य की बात है कि यह मोबाईल की दुनिया असल दुनिया से भी बड़ी हो गई है। मोबाईल में खो चुके लोगों के अंदर से भावनाएं तक खत्म हो रही हैं, हर वर्ग, हर तबका सोशल मीडिया की चपेट में आ चुका है। यह एक ऐसा प्लेटफार्म है जिसने सीमाओं के सारे बंधनों से हमें आजाद कर तो दिया है लेकिन महज तीन इंच के एक डिवाइस में कैद कर दिया है। इसका सीधा असर हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवन पर पड़ने लगा है, मनुष्य को सामाजिक प्राणी की संज्ञा दी जाती है लेकिन सोशल मीडिया नामक आभासी दुनिया ने हमें असामाजिक बना कर छोड़ दिया है। देखा जाए तो इस सोशल मीडिया का सर्वाधिक प्रभाव युवाओं पर पड़ा है, यूं तो भारत दुनिया का सबसे युवा देश है लेकिन हमारे युवा टिक टॉक, फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम पर फोटोज, स्टोरी और मैसेज चैटिंग के मकड़ जाल में फँस कर अपनी क्षमताओं का सर्वनाश कर रहे हैं।

जब फोन नहीं होते थे तो दिवस–त्योहारों, जन्मदिन पर अपनों की भावपूर्ण चिट्ठियाँ हमें मिलती थीं फिर फोन आ गए तो सुबह से लोगों के कॉल का सिलसिला शुरू हो जाता, धीरे धीरे मोबाईल मैसेजिंग और अब सारी भावनाएं व्हाट्सएप की इमोजी तक सिमट कर रह गई है।

कई एकड़ में फैले बच्चों के लंबे चौड़े बड़े खेल के मैदान मोबाईल की छोटी सी स्क्रीन में समा गए हैं। हमारे व्यक्तित्व को विकसित करने वाली मिलनसार प्रवृत्ति को फेसबुक, व्हाट्सएप ने लगभग खत्म कर दिया है, हम आत्मीयपन से दिखावटीपन की तरफ बढ़ रहे हैं। जहाँ एक ओर मोबाईल फोन और सोशल मीडिया ने हमें किताबों से दूर कर दिया है, वहीं हमारे सोचने समझने की क्षमता पर भी इसका काफी बुरा असर पड़ रहा है। यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारे दिन का एक बहुत बड़ा हिस्सा हम इसी मकड़जाल में फंसकर यूं ही जाया कर देते हैं।

हमारी आंखों के नीचे बढ़ रहे काले घेरे, मानसिक तनाव, अनिद्रा की चीख–चीखकर गवाही दे रहे हैं, आप सोचिए क्या इसके लिए आपका फोन जिम्मेदार नहीं है, गर्दन में दर्द और रीढ़ की हड्डी तो मुड़ ही रही है, साथ ही हमारा ब्रेन भी खतरनाक रेडिएशंस का शिकार हो रहा

है। कुल मिलाकर मोबाईल फोन और सोशल मीडिया बैठे–बिठाए वक्त से पहले आपकी उम्र बढ़ा रहा है।

बेहतर कम्युनिकेशन के साथ कम्युनिकेशन के ज्योग्राफिकल बैरियर्स को खत्म करने, सूचनाओं का आदान–प्रदान करने शिक्षा के लिए ईजाद किए गए इंटरनेट और सोशल मीडिया का उपयोग अब ऑनलाईन फ्रॉड जैसे गंभीर अपराधों को अंजाम देने के लिए किया जा रहा है। यहां दिखता कुछ है और बिकता कुछ है, आप ऑनलाईन फोन बुलवाते हैं और आपको मिलती है साबुन की बट्टी। आप अपने किसी परिचित के खातें में कुछ पैसे ऑनलाईन ट्रांसफर करते हैं, जो आपके अकाउंट से तो कट जाते हैं लेकिन सामने वाले के अकाउंट तक पहुंचते ही नहीं। कभी आपके फोन में मैसेज आता है कि आपके अकाउंट से बहुत सारा पैसा उड़ा लिया गया है, साथ ही इससे आपकी निजता को भी बड़ा खतरा है।

21वीं सदी में हम सभी आधुनिकता की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, लेकिन हमें इस बात को समझना बेहद जरूरी है कि किसी भी चीज का हम इतना अधिक उपभोग ना करें कि हम उस में बंध कर रह जाएं, हम उस में ही कहीं खो जाएं और हमारी मदद के लिए बनी चीज हमारे लिए मुसीबत बन जाए। हमें इस माया जाल से बाहर आने की जरूरत है, ताकि हम अपनी क्षमताओं का सही उपयोग कर सकें उन्हें खत्म ना करें। हम अपने समाज, प्रदेश और देश के प्रति अपना योगदान वास्तविक दुनिया में दें ना कि एक आभासी दुनिया में। आप व्हाट्सएप पर चैटिंग करते हैं, फेसबुक को स्क्रोल करते हैं, इंस्टाग्राम पर फोटोज देखते हैं, अगर आप इसी इंटरनेट की सहायता से कुछ नई जानकारियां जुटाएंगे, कुछ अच्छा पढ़ने की कोशिश करेंगे तो यह जरूर भविष्य में आपके काम आएगा। सोशल मीडिया और इंटरनेट का इस्तेमाल सिर्फ प्रेम प्रसंग बनाने, दोस्ती और इन तमाम चीजों की गतिविधियों के लिए नहीं है। इसका सही उपयोग ज्ञान इकठठा करने, सूचनाओं का आदान–प्रदान करने के साथ ही दुनिया में चल रही गतिविधियों से जुड़े रहने के लिए होना चाहिए। हमें नशे की तरह इसका आदि होने से खुद को और आने वाली पीढ़ियों को बचाना होगा नहीं तो यह हमारे और देश के विकास में अवरूद्ध बन जायेगा। आपका भी कोई परिचित मोबाईल में खो गया है तो उसे जल्द ही वापस ले आइए।

हमें कभी उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिये

रेशमा चौरे
बी.एससी. बायो तृतीय वर्ष

एक बार एक व्यक्ति, एक हाथी को रस्सी से बांध कर ले जा रहा था। एक दूसरा व्यक्ति इसे देख रहा था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ की इतना बढ़ा जानवर इस हल्की सी रस्सी से बांधा जा रहा है दूसरे व्यक्ति नें हाथी के मालिक से पूछा, यह कैसे संभव है कि इतना बढ़ा जानवर एक हल्की सी रस्सी को नहीं तोड़ पा रहा और तुम्हारे पीछे चल रहा है।

हाथी के मालिक ने बताया जब ये हाथी छोटे होते है तो इन्हें रस्सी से बांध दिया जाता है उस समय यह कोशिश करते हैं रस्सी तोड़ने की पर उसे तोड़ नही पाते तो हाथी सोच लेते हैं की वह इस रस्सी को नही तोड़ पा रहा और तुम्हारे पीछे चल रहा है।

हाथी के मालिक ने बताया जहा ये हाथी छोटे होते हैं तो इन्हें रस्सी से बांध दिया जाता है उस समय यह कोशिश करते हैं रस्सी तोड़ने की पर उसे तोड़ नहीं पाते तो हाथी सोच लेते हैं कि वह इस रस्सी को नहीं तोड़ सकते और बड़े होने पर कोशिश करना ही छोड़ देते है।

(इसी तरह हम भी ऐसी बहुत सी नकारात्मक बातें अपने दिमाग मे बैठा लेते हैं कि हम नहीं कर सकते। हमें कभी उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए।)

गांधी विचार और समसामयिक प्रासंगिकता

नरेन्द्र लोटस्वे
बी.ए. तृतीय वर्ष

'' आपकी मान्यताएँ आपके विचार बन जाते हैं,
आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं,
आपके शब्द आपके कार्य बन जाते हैं,
आपके कार्य आपकी आदत बन जाती हैं,
आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाते हैं,
आपके मूल्य आपकी नियति बन जाती है''।

महात्मा गांधी एक युग पुरूष है। उन्होंने जहाँ एक ओर भारतवासियों में स्वाधीनता की भावना जागृत की वहीं उनके सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया तथा साहित्यकारों के प्रेरणा स्त्रोत भी बने। गांधी कोई दार्शनिक नहीं थे, वो एक सच्चे विचारक एवं संत थे, उनका सारा जीवन कर्ममय था, व्यक्तिगत साधना में उनका विश्वास था। उनके जीवन का लक्ष्य केवल अंग्रेजी सत्ता से छुटकारा दिलाना नहीं था, भारत और सारे विश्व का सत्य, अहिंसा के आदर्शो का निर्माण करना था। गांधी जी ने पहली बार सत्य, अंहिसा ओर शत्रु के प्रति प्रेम के आध्यात्मिक और नैतिक सिद्धांतों का राजनीति के क्षेत्र में इतने विशाल पैमाने पर प्रयोग किया और सफलता प्राप्त की। गांधी ने जहां एक ओर भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाई, वहीं दूसरी ओर संसार को अहिंसा का ऐसा मार्ग दिखाया, जिस पर यकीन करना कठिन तो नहीं, पर अविश्वसनीय जरूर था।

महात्मा गांधी ने राजनीति, अर्थ एवं धर्म के क्षेत्र में आदर्श स्थापित किये व उसी के अनुरूप लक्ष्य प्राप्ति के लिए स्वयं को समर्पित ही नहीं किया बल्कि देश की जनता को भी प्रेरित किया व आशानुरूप परिणाम की प्राप्ति की। उनकी जीवन दृष्टि भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

आज गांधी जी हमारे बीच नहीं हैं। किन्तु एक प्रेरणा और प्रकाश के रूप में लगभग उन सभी मुद्दों पर उनका मार्गदर्शन निरन्तर हमारे साथ है। जिसका सामना किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र को करना पड़ता है। इक्कीसवीं सदी में गांधी की सार्थकता प्रत्येक क्षेत्र में है। गांधी जी के सिद्धांतो के महत्व को समझकर ही संयुक्त राष्ट्र ने 2 अक्टूबर को **'विश्व अहिंसा दिवस'** के रूप में मनाने की घोषणा की है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विश्व जिस विनाश के ज्वालामुखी पर खड़ा है, उससे केवल गांधी जी ही बचा सकते है। उनकी क्षमता से प्रभावित होकर 'लार्ड माउण्टबेटन' ने कहा था **''जो काम 50 हजार हथियार बंद सेना नहीं कर सकी थी, वह गांधी जी ने कर दिया। वे अकेले ही एक पूरी सेना है,''।** आज गांधी न सरल है न जटिल हैं, आस्थाओं का यह युग पुरूष अपने ही देश में तलाशा जा रहा है। आतंक के साये में जी रहे सभी लोग न सत्य, न प्रेम, अहिंसा से सरोकार रखते हैं यही हमारी कमजोरी है, यहीं हमारी विवशता है। श्री मन्नारायण के शब्दो में **''आज के मानव के सभी दुःखों को दूर करने की एकमात्र रामबाण औषधि गाँधीवाद है।''**

''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े राजनीतिक एवं आध्यात्मिक नेता मोहनदास करमचंद गाँधी के आदर्शो, विश्वासों एवं दर्शन से उद्भूत विचारों के संग्रह को गांधीवाद कहा जाता है।''

आज के युग में गांधी जी से हम बहुत प्रभावित है। आज उनकी मृत्यु के 71 साल बाद भी हम उनके विचारों का पालन कर रहे हैं। उनके विचारों की प्रासंगिकता आज के समय से काफी मिलती जुलती है। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं–

स्वच्छताः–

स्वच्छता एवं अस्पृश्यता गांधी दर्शन के केंद्र में है, और इन पर उनके विचार स्पष्ट एवं पूर्ण रूप से केंद्रित है। जनसरोकारों से जुड़े अपने लगभग हर संबोधन में गांधी स्वच्छता के मामले को उठाते थे। उनका मानना था कि नगरपालिका का सबसे महत्वपूर्ण कार्य सफाई रखना है। गाँधी जी के इसी विचार को ध्यान में रखकर हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छता अभियान को शुरू किया और गाँधी जी के सपने को साकार करने का प्रयास किया और गाँधी जी की 150वीं जयंती 2 अक्टूबर 2019 तक **''स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत''** का प्रण लिया था।

पंचायत और ग्रामीण व्यवस्थाः–

इस मुद्दे पर गांधी जी के विचार स्पष्ट थे। उनका कहना था कि यदि हिंदुस्तान के प्रत्येक गाँव में भी पंचायती राज कायम हुआ, तो मैं अपनी इस तस्वीर की सच्चाई साबित कर सकूंगा, जिसमें सबसे पहला और सबसे आखिरी दोनों बराबर होंगे, अर्थात् न कोई पहला होगा और न आखिरी। इस बारे में उनका मानना था कि जब पंचायती राज स्थापित हो जाएगा तब लोकतंत्र ऐसे भी अनेक काम कर दिखाएगा, जो आज तक नहीं हो सके। गांधी भली–भाँति जानते थे कि वास्तविक आत्मा देश के गाँवों मे बसती है। अतः जब तक गाँव विकसित नहीं होंगे, तब तक देश के वास्तविक विकास की कल्पना करना बेमानी है।

धर्मः–

गाँधी जी को समझने के लिए स्पष्टता से समझ लेना होगा कि गांधीवाद के नीचे धर्म की एक ठोस बुनियाद है, जिसके बारे में उनका मानना था कि संस्कार उन्हें अपनी माता से मिले।

''जो दूसरो का दर्द समझे उसे धार्मिक कहते हैं।'' गाँधी ने अपने अखबार 'यंग इंडिया' में लिखा था कि सार्वजनिक जीवन के आंरभ से ही उन्होनें जो कुछ कहा और किया हैं, उसके पीछे एक धार्मिक उद्देश्य और धार्मिक चेतना रही है। वे स्वधर्म के साथ अन्य सभी धर्मो का भी आदर करते थे। उनका कहना था कि मेरा धर्म तो वह है जो मनुष्य के स्वभाव को ही बदल देता हैं। गांधी के अनुसार, धर्म सबसे प्रेम करना सिखाता है। न्याय तथा शांति की स्थापना के लिए खुद को बलिदान की प्रेरणा देता है। उनकी निगाह में धर्म निर्बल का बल तथा सबल का मार्गदर्शक है।

''प्रेम की शक्ति दण्ड की शक्ति से हजार
गुनी प्रभावशील और स्थायी होती है।''

अहिंसाः–

गाँधी के अनुसार नैतिक जीवन जीने का मूलभूत तरीका है। यह सिर्फ आदर्श नहीं, बल्कि यह मानव जाति का प्राकृतिक नियम है। हिंसा का किसी तात्कालिक समस्या का एक पक्षीय समाधान हो सकता है, किंतु स्थायी और सर्वस्वीकृत समाधान सिर्फ अहिंसा से ही संभव है।

''जब भी आपका सामना किसी विरोधी से हो, उसे प्रेम से जीतो।''

गाँधी जी के इसी विचार से प्रभावित होकर भारतीय सरकार ने पाकिस्तान के आक्रमणों का बड़ी सहजता और प्रेम से जवाब दिया।

शिक्षाः–

गाँधी ज्ञान आधारित शिक्षा के स्थान पर आचरण आधारित शिक्षा के समर्थक थे। उनका कहना था कि शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को अच्छे–बुरे का ज्ञान प्रदान कर उसे नैतिक रूप से सबल बनाए। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए उन्होनें **'वर्धा योजना'** में प्रति सात वर्षो की शिक्षा को निःशुल्क एवं अनिवार्य करने की बात कहीं थी। गाँधी का यह भी मानना था कि व्यक्ति अपनी मातृभाषाओं में प्रारंभिक शिक्षा को अधिक रूची तथा सहजता के साथ ग्रहण कर सकता हैं।

अखिल भारतीय स्तर पर भाषायी एकीकरण के लिए वे कक्षा सात तक हिंदी भाषा मे ही शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर थे।

स्वराजः–

गाँधी का कहना था कि स्वराज्य एक पवित्र शब्द है, यह एक वैदिक शब्द है, जिसका अर्थ आत्मसम्मान व आत्मसंयम है। अंग्रेजी शब्द 'इंडिपेंडेस' सब प्रकार की मर्यादाओं से मुक्त निरंकुश आजादी या स्वच्छता का अर्थ देता है, लेकिन स्वराज्य शब्द के अर्थ मे ऐसा नहीं है। गाँधी का स्वराज्य गाँवों में बसता था और वे गाँवों में गृह उद्योगों की दुर्दशा से चिंतित थे। खादी को प्रोत्साहन और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार उनके जीवन के आदर्श थे, जिनको आधार बनाकर उन्होने देशभर के करोड़ो लोगों की आजादी की लड़ाई के साथ जोड़ा। उनका कहना था कि खादी का मुख्य उददे्श्य प्रत्येक गाँव को अपने भोजन एवं कपड़े के मामलें में स्वावलंबी बनाना हैं।

अस्पृश्यताः–

गाँधी जी अस्पृश्यता या छुआछूत के विरूद्ध संघर्ष को साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष से भी कहीं अधिक विकराल मानते थे। इसकी वजह यह थी कि साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष में तो उन्हें बाहरी ताकतो से लड़ना था, लेकिन अस्पृश्यता से संघर्ष मे उनकी लड़ाई अपनो से थी। वे कहते थे कि मेरा जीवन अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए उसी प्रकार समर्पित है, जैसी अन्य बहुत सी बातों के लिए है। गांधी जी ने अस्पृश्यता को समाज का कलंक तथा घातक रोग माना, जो न केवल स्वयं अपितु सम्पूर्ण समाज को नष्ट कर देता है।

'' आप बंद मुठ्ठी से हाथ नहीं मिला सकते।''

उपर्युक्त पंक्ति के माध्यम से मैं यह कहना चाहता हूँ कि नये भारत का निर्माण करने में अस्पृश्यता/छुआछूत, धर्म, जाति आदि अनेक कुरूतियों से ही रूक रहा है।

'' मेरा धर्म सत्य और अंहिसा पर आधारित हैं।
सत्य मेरा भगवान है, अहिंसा उसे पाने का साधन।''
'' हम जो करते हैं और हम जो कर सकते हैं,
इसके बीच का अंतर दुनिया की ज्यादातर
समस्याओं के समाधान के लिए पर्याप्त होगा।''

मौलाना अबुल कलाम

सोनू प्रजापति
बी.एस.सी. कम्प्यूटर सांईस

**"You have to dream before
Your dreams can come true"**

मौलाना अबुल कलाम 'आजाद' का जन्मदिन हर साल 11 नवंबर को भारत में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है। 11 सिंतबर 2008 को मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने यह फैसला किया कि 11 नवंबर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए। मौलाना जी हमारे स्वंतत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री थे। उनके बचपन का नाम अहमद था। उनके पिता उन्हें 'फिराजबख्त' के नाम से पुकारते थे। 'फिराजबख्त' का अर्थ होता है– 'सौभाग्य' अथवा 'आशाओं का हीरा'। ये दोनों नाम उनके बचपन के नाम थे, बाद में उनका नाम 'अबुल कलाम' हो गया। 'आजाद' उनका उपनाम था। इनके पिता मौलाना खैरूद्दीन एक विख्यात लेखक थे। जिन्होंने कई किताबें लिखीं। 'आजाद' जी भारत की आजादी के बाद एक महत्वपूर्ण राजनीतिक पदों पर रहे। वे महात्मा गाँधी के सिद्धांतो का समर्थन करते थे। उन्होनें हिंदू–मुस्लिम एकता के लिए कार्य किया, तथा वे अलग मुस्लिम राष्ट्र (पाकिस्तान) के सिद्धांत का विरोध करने वाले मुस्लिम नेताओं में से थे। खिलाफत आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। 1923 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सबसे कम उम्र के प्रेसीडेंट बने। वे 1940 और 1945 के बीच कांग्रेस के प्रेसीडेंट रहे। आजादी के बाद वे भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के रामपुर जिले से 1952 में सांसद चुने गए और वे भारत के पहले शिक्षा मंत्री बने। स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री के रूप में उन्होंने ग्यारह वर्षो तक राष्ट्र की शिक्षा नीति का मार्गदर्शन किया। मौलाना आजाद को ही 'भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान' अर्थात् आई.आई.टी. और 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' की स्थापना का श्रेय जाता है। उन्होंने शिक्षा और संस्कृति को विकसित करने के लिए उत्कृष्ट संस्थानों की स्थापना की। जैसे–संगीत नाटक अकादमी, साहित्य अकादमी, ललितकला अकादमी। केंद्रीय सलाहकार शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष होने पर सरकार से केंद्र और राज्यों दोनों के अतिरिक्त विश्वविद्यालयों में सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा, 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा, कन्याओं की शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षक, कृषि शिक्षा और तकनीकी शिक्षा जैसे सुधारों की वकालत की। उन्हें वर्ष 1992 में मरणोपरान्त भारत रत्न से सम्मानित किया गया। देश के पहले शिक्षा मंत्री, हिन्दू–मुस्लिम एकता के हिमायती मौलाना अबुल कलाम आजाद। किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। मुझे गर्व है, हमारे देश में ऐसे शिक्षाविद हुए जिन्होंने राष्ट्र की उन्नति के लिए जी–जान से मेहनत की और शिक्षा का महत्व समझाया।

कोरोना का समाज पर प्रभाव

रत्नेश विश्वकर्मा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

एक वैश्विक महामारी के रूप में कोरोना वायरस पूरी दूनिया में तबाही मचा रहा है इसके चलते समाज पर गंभीर प्रभाव देखे जा सकते हैं। इस दौरान समाज में कुछ नए शब्दों ने जगह बना ली है जैसे सोशल डिस्टेंसिंग, सेल्फ क्वारेंटाइन लॉकडाउन इत्यादि। सामाजिक जीवन में सामाजिक संबंधों की प्रगाढ़ता परस्पर दायित्व निर्वाह पर निर्भर करती है लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में आपसी दूरी ने उन सभी आधरों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है जो सहानुभूति के साथ साहचर्य का भाव पैदा करते हैं।

कोविड–19 के प्रभाव से परिवार मे महिलाओं की स्थिति प्रभावित हुई है। राष्ट्रीय महिला आयोग का यह कहना है कि घरेलू हिंसा की शिकायतों में इस दौरान पहले की तुलना में इजाफा हुआ है वैश्विक स्तर पर भी घरेलू हिंसा की घटनाएं बढ़ गई हैं।

सामाजिक जीवन में कोविड–19 के नकारात्मक परिणामों के अलावा यदि हम बारीकी से दूसरे पक्ष की तरफ देखें तो यह एक बड़ा परिवर्तन सामने आया है जब लोगों की जीवन में व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ परिवेश की स्वच्छता को बनाए रखने का तरीका दिन प्रतिदिन की क्रियाओं का हिस्सा बनता जा रहा है यद्यपि अनेक प्रयास स्वच्छता के लिए किए जा रहे हैं सरकारी और गैर सरकारी प्रयत्नों के बावजूद सामाजिक जीवन में स्वच्छता की आदतों को विकसित कर पा रहें हैं इसके अलावा आने वाले समय में हो सकता है सामूहिक क्रियाकलापों में सीमित दायरे में कार्य करने के नए प्रतिमान विकसित हो जाएं और हमारी परंपरागत प्रणाली में परिवर्तन आ जाए जैसे विवाह, मृत्यु भोज जैसे सामूहिक अवसरों पर कुछ लोगों की उपस्थिति की ही स्वीकार्यता निर्धारित हो जाए। वर्तमान समय में तेजी से बढ़ते भौतिकवादी मूल्यों ने जहां एक ओर व्यक्तिवाद को इतना बढ़ा दिया था कि परानुभूति जैसे मूल्य कम होते जा रहे थे वही समाज में उपजी इन नई परिस्थितियों ने एक बार फिर लोगों के नजरिए मैं समाज के कमजोर, अभावग्रस्त लोगों के प्रति संवेदना पैदा हो रही है।

कोविड–19 के आर्थिक जीवन पर जो प्रभाव पड़े हैं उनमें रोजगार का संकट एक बहुत बड़ी चुनौती के रूप में उभरा है भारत जैसे विशाल देश में जहां दुनिया 25 प्रतिशत श्रम शक्ति निवास करती है और देश की आबादी की 400 मिलियन जनसंख्या श्रम के बतौर अपना जीवन जीती है उसके सामने रोजगार का संकट अस्तित्व के संकट के रूप में पैदा हुआ है एक राज्य से दूसरे राज्य मजदूरों का पलायन एक गंभीर चुनौती के रूप में प्रशासन और समाज के लिए चिंता का विषय बन चुका है। भूख और आजादी यह दो मसले आज की परिस्थितियों में मानव अधिकारों को भी कटघरे में ला रहे हैं ऐसे में सुप्रसिद्ध कवि दिनकर की पंक्तियां ध्यान देने योग्य है।

भूख और आजादी में यूं तो कोई मेल नही।

भूख अगर बेताब हो गई आजादी की खैर नहीं।।

रानी अवंतिबाई लोधी

डॉ. सूर्यकांत शर्मा
अतिथि विद्वान, इतिहास

देश के आजादी को 2022 में 75 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। हम वह पीढ़ी हैं जिन्होंने स्वतंत्र भारत में जन्म लिया और स्वतंत्र वातावरण में सांस ले रहे हैं परन्तु जब इस आजादी के पन्नों को पलट कर देखते हैं तो अनगिनत व्यक्तियों का बलिदान, संघर्ष और परतन्त्रता की बेड़ी को उतारकर फेंकने के प्रयास नजर आते हैं।

आज मेरी पीढ़ी के लोग यह सोचते हैं कि आखिर मुठ्ठीभर अंग्रेजों ने आकर भारत पर कैसे अधिकार कर लिया। क्या भारतीयों ने संघर्ष किया? परन्तु जब इतिहास में इस रक्त रंजित स्वरूप को देखते हैं तो पाते हैं कि देश के प्रत्येक कोने में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करने वाले लोग थे जिन्होंने अपने लहु से यह रक्तिम अध्याय लिखा। इस क्रम में जब मध्यप्रदेश के इतिहास पर दृष्टिपात किया तो पाया कि मेरे प्रदेश की तो वीरांगनाएँ भी पूर्णतः अग्रेंजों के विरूद्ध प्राणपण से लड़ी, जिसमें एक प्रमुख थी 'रानी अवन्तिबाई लोधी।

रानी अवंतीबाई ने 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के विरूद्ध अथक संघर्ष किया। रानी अवंतिबाई रामगढ़ की छोटी सी रियासत की रानी थी, जिन्होंने कम संसाधन तथा छोटी रियासत होने के बावजूद अंग्रेजों से लोहा लिया।

रानी अवंतीबाई का जन्म 1831 में सिवनी जिले के ग्राम मनकेड़ी के जमींदार 'राव जुझार सिंह' के यहां हुआ था उनका विवाह रामगढ़ के शासक लक्ष्मण सिंह के पुत्र 'विक्रमजीत सिंह' से हुआ था। 1851 में राजा लक्ष्मण सिंह की मृत्यु के पश्चात विक्रमजीत सिंह शासक बने। उनके और रानी अवंतीबाई के दो पुत्र अमन सिंह और शेर सिंह थे। रानी के पति विक्रमजीत सिंह जी का राज के कार्य में मन नहीं था अतः राज्य की जिम्मेदारी रानी अवंतीबाई निर्वाह करने लगीं।

यह वह काल था जब देश में अंग्रेजी सत्ता पैर जमाने लगी थी तथा लार्ड डलहौजी की विलयनीति लगातार पैर पसार रही थी तथा भारतीय राज्य एक के बाद एक करके ब्रिटिश राज्य का हिस्सा बनते जा रहे थे।

अंग्रेजों ने रामगढ़ रियासत पर भी कु–दृष्टि डाली और उन्होंने राजा विक्रमजीत सिंह की कमजोर मानसिक स्थिति तथा राजकुमार अमन सिंह को नाबालिग मानकर ''कोर्ट्स आफ वार्ड्स'' संरक्षक नियुक्त कर शासन चलाने की नीति का अनुसरण किया, जिसका उद्देश्य रियासत को हड़पना था। सन् 1855 में राजा विक्रमजीत की मृत्यु हो गई तब नाबालिग पुत्र के संरक्षिका के रूप में राज्य का संचालन रानी के हाथ में आ गया। रानी अंग्रेजों की चाल समझ चुकी थी अतः उन्होंने राज्य की रियासत को अंग्रेजों के निर्देश मानने से मना कर दिया । यह कार्य सीधे सीधे अंग्रेजों को चुनौती देने के समान था। अंग्रेज इस समय तक शक्तिशाली हो चुके थे। अंग्रेजों से पार पाना किसी एक रियासत के बस की बात नहीं थी। अतः अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष की रूपरेखा बनाने के उद्देश्य से रामगढ़ में गढ़पुरवा के शासक शंकरशाह की अध्यक्षता में एक सम्मेलन किया गया। जिसमें क्षेत्र की रियासतों को विद्रोह में भाग लेने के लिए तैयार करने का निर्णय लिया गया। 1857 में जबलपुर, अंग्रेज सेना का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। 1857 में देश में क्रांति का आरंभ हो चुका था इस क्रम में जबलपुर में भी सैनिक विद्रोही तेवर दिखाने लगे थे तथा इनसे प्रेरित होकर मण्डला के परगनादार उमराव सिंह ठाकुर ने अंग्रेजों का खुलकर विरोध करना आरंभ कर दिया तथा अन्य क्षेत्रों में भी अंग्रेजों का विरोध होने लगा। अंग्रेजों ने विद्रोह दबाने के उद्देश्य से राजा शंकरशाह और उसके पुत्र रघुनाथ शाह को मृत्यु दण्ड दे दिया। जिसका व्यापक विरोध हुआ, जिसकी प्रथम प्रतिक्रिया रानी अवन्तिबाई की रियासत रामगढ़ में

दिखी। रानी की सेना ने विद्रोह करते हुए भूअबिछिया और घुघरी पर अधिकार कर लिया तथा जबलपुर–मण्डला मार्ग को बंद कर दिया। इस प्रकार रानी के प्रयासों से सिर्फ मण्डला शहर छोड़कर सम्पूर्ण जिले पर स्वाधीनता सेनानियों का अधिकार हो चुका था।

मण्डला के कमिश्नर वाडिंग्टन विद्रोहियों को कुचलने में असमर्थ रहे अतः उन्होंने जबलपुर से मदद मांगी, परन्तु रानी ने उससे पूर्व ही मण्डला पर अधिकार के प्रयास प्रारंभ कर दिये। नवम्बर 1857 में खैरी के युद्ध मे अंग्रेजों को परास्त कर सम्पूर्ण मण्डला पर अधिकार कर लिया था।

वाडिंग्टन के मदद मांगने पर नागपुर से लेफ्टिनेंट वर्टन के नेतृत्व में नागपुर से सेनायें रामगढ़ की ओर बढ़ीं। रानी की सेना ने संसाधन कम होने के पश्चात भी अंग्रेजों से जमकर संघर्ष किया, परन्तु स्थिति कमजोर देखकर रानी ने देवहरगढ़ की पहाड़ियों की तरफ प्रस्थान किया।

देवहरगढ़ की पहाड़ियों पर रानी और अंग्रेजों के मध्य भयंकर संघर्ष हुआ। परन्तु रानी ने निडरता से सामना किया। घायल होने के पश्चात भी वह समर्पण करने को तैयार नहीं हुई और अंततः अपने को घिरा हुआ देखकर रानी ने तलवार से आत्मोत्सर्ग कर लिया।

रानी का यह बलिदान व्यर्थ नहीं गया। यह भीषण संघर्ष आज भी हमारे दिलों में ज्वलंत है और स्वतंत्रता की अहमियत को जागृत किये हुये है।

"सबसे अच्छा"

माँ से बड़ा कोई–वफादार नहीं होता।
जीवन का अनुभव पिता से ज्यादा कोई नहीं दे सकता।।
खुद से अच्छा कोई दोस्त नहीं होता।
अनुभव से अच्छा कोई गुरू नहीं होता।
धैर्य से अच्छा कोई मीठा फल नहीं होता।
व्यवहार से अच्छा कोई जीवन साथी नहीं होता।
अपनों के साथ समझौता करके चलने से अच्छा
कोई सुख नहीं होता है।

नीलिमा चटर्जी
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र

जनभागीदारी और महाविद्यालय का विकास

डॉ. आलोक निगम
सहप्राध्यापक, समाजशास्त्र

विगत वर्षो में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विस्तार हुआ है। उच्च शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके साथ ही उच्च शिक्षा के पारम्परिक स्वरूप में परिवर्तन की संभावनाएँ बढ़ी हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात को स्वीकार किया गया कि उच्च शिक्षा की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने में संसाधनों की कमी एक अवरोधक कारण रहेगा और इसे दूर करने के लिए विविध प्रयास आवश्यक होंगे। इन्हीं प्रयासों में से एक प्रयास उच्च शिक्षा के प्रबंधन में स्थानीय समाज की प्रतिभागिता को माना गया है। मध्यप्रदेश में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं की संख्या विगत वर्षों में काफी बढ़ी है तथा शिक्षा के निजीकरण की नीति के कारण अनेक निजी संस्थाएँ भी इस क्षेत्र में उभरकर सामने आई है। यह एक सुखद संयोग है कि प्रदेश में शासकीय महाविद्यालयों की संख्या अन्य प्रदेशों से काफी अधिक है। शासन के सीमित संसाधनों में इन शासकीय महाविद्यालयों की व्यवस्थाओं को न्यूनतम वांछित स्तर पर लाने में कठिनाई आती है। इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति की परिकल्पना को साकार करने हेतु मध्यप्रदेश शासन ने वर्ष 1996 में जनभागीदारी समिति की परिकल्पना की, और इसके लिए विस्तृत मार्गदर्शी सिद्धांत व नियम बनाए। इस अवधारणा के पीछे संसाधन विहीन महाविद्यालयों को संसाधन सम्पन्न बनाने का मंतव्य छिपा हुआ है। इस अवधारणा के तहत महाविद्यालयों को अपने अकादमिक परिवेश को बदलने की स्वतंत्रता भी निहित है। महाविद्यालय अपने लिए नवीन अकादमिक कार्यक्रम सृजित कर सकें, स्ववित्तीय पाठ्यक्रम चला सकें, अपनी आर्थिक विपन्नता को कुछ हद तक दूर कर सकें तथा सबसे महत्वपूर्ण, क्षेत्र विशेष के महाविद्यालयों के प्रति जनता में एक अपनत्व की भावना का जन्म हो, इस दृष्टि से जनभागीदारी समिति का गठन किया गया है। इस अवधारणा के उददे्श्यों में महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास की संभावनाओं को तलाशा गया है तथा महाविद्यालय प्रबंधन में स्थानीय समाज को अभिन्न अंग के रूप में शामिल किया गया है और महाविद्यालय के संचालन में स्थानीय नागरिकों, अभिभावकों व छात्रों की भूमिका को भी सुनिश्चित किया गया है। समाज के विभिन्न तबकों से आए हुए प्रतिनिधि और जन–प्रतिनिधि मिलकर महाविद्यालय की दिशा और दशा दोनों में परिवर्तन ला सकते हैं। मध्यप्रदेश शासन की यह एक अभिनव योजना है और अधिकतर संस्थाओं में इसके सुखद परिणाम सामने आए हैं।

जनभागीदारी समिति की अवधारणा में समिति को जो अधिकार प्रदान किए गए हैं उसमें संस्था के लिए संसाधन जुटाने का अधिकार बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसके तहत् समिति छात्रों से शुल्क के रूप में और जनता से दान के रूप में राशि स्वीकार कर सकती है, न केवल इतना बल्कि इस राशि के उपयोग के लिए भी समिति को अधिकार सम्पन्न बनाया गया है। अतः इस योजना की अवधारणा एवं इसकी संचालन शैली दोनों ही मध्यप्रदेश जैसे राज्य के संदर्भ में अत्यंत सामयिक प्रतीत होते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु उपलब्ध संसाधनों के बेहतर और सार्थक उपयोग की क्षमता विकसित होती है तो जनभागीदारी समिति अपने उदद्श्यों और प्रयासों में निःसंदेह सफल होती है और यही इसकी अवधारणा के पीछे निहित शक्ति है। इसे लागू करने में समिति के मनोनीत अध्यक्ष और महाविद्यालय के प्राचार्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह सहभागी स्वतंत्र कार्यशैली, हितग्राहियों की नीति निर्धारण में प्रतिभागिता, शिक्षकों का मार्गदर्शन और समाज के विभिन्न तबकों से समिति में मनोनीत सदस्यों की संयुक्त सोच से जनभागीदारी समिति संस्था के हित में बेहतर कार्य करती है, इसमें संदेह नहीं है।

विकास की अवधारणाः एक विमर्श

डॉ. इला जैन
प्राध्यापक, रसायनशास्त्र

विकास की अवधारणा किस आधार पर हो? यह एक प्रश्न है। आज का युग विकास का युग है। हर दिशा में विकास हो रहा है। मनुष्य भी निरंतर विकास करता जा रहा है। विकास के आधार पर हमने पूरे विश्व के राष्ट्रों को तीन भागों में बाँट दिया है– अविकसित राष्ट्र, विकासशील राष्ट्र ओर विकसित राष्ट्र। यह विभाजन क्यों किया गया है? विकास की बात कहने वालों का मानना यह है कि कल–कारखाने है, सुख–सुविधायें है, आर्थिक सुदृढ़ता है तो ये विकसित राष्ट्र हैं, यहाँ अनावश्यक वस्तुएँ अधिक है जिन्हें मनुष्य ने विकास मान लिया है। वे राष्ट्र, जिन्हें विकसित राष्ट्र की परिभाषा में रखा गया है, वह अरबों रूपये के हथियारों की खरीद–फरोख्त करता है, ऐसे भवनों का निर्माण किया है जिनकी आवश्यकता नहीं के बराबर है, वहाँ की नयी पीढ़ी नशे की चपेट में हैं। हमारा देश जो विकासशील देश में आता है वहाँ भी विकास की अवधारणा ने हमारी जीवन की आवश्यकताओं को गौंण कर दिया है। किसी भी महानगर में ऊँची विशाल अट्टालिकाओं के परिपार्श्व में जीर्ण–शीर्ण झोपडियाँ है। यहाँ आदमी कैसे रहता है, कीचड़ और गंदगी के ढेर पर लोगों के जीवन पर देश की अर्थव्यवस्था को हम विकासशील कहते है। विकास की परिभाषा में राष्ट्र नैतिकता, सदाचार, अहिंसा, शांति की अवधारणा होनी चाहिये। जो मनुष्य को मनुष्यता के निकट ले जाये। अर्थशास्त्र की वर्तमान अवधारणाओं को भी बदलना होगा, और मीडिया के सर्वेक्षण भी बदलने चाहिये। इन सर्वेक्षणों से जो मनुष्य में अजीब सी आकांक्षा पैदा होती है, जिसकी पूर्ति में वह अच्छा–बुरा, उचित–अनुचित, नैतिकता–अनैतिकता आदि नहीं देखता है, वहाँ वह येन–केन प्रकारेण उसकी पूर्ति में लग जाता है। यह प्रक्रिया शोषण को बढ़ावा देती है। जब तक राष्ट्र और समाज में व्यक्ति को कम से कम उसके जीवन–निर्वाह की चीज सुलभ न हो, किसी को भी धन–कुबेर बनने का अधिकार नहीं होना चाहिए। चीन के प्रसिद्ध चिंतक कन्फ्यूशियस की अदालत में चोरी का एक मुकदमा आया। चुराई हुयी संपत्ति सहित चोर पकड़ा गया। ढाई हजार वर्ष पूर्व कन्फ्यूशियस ने एक अदभूत फैसला दिया। उसने छः माह की सजा चोर को दी और छः माह की सजा साहूकार को भी दी, जिसके माल की चोरी हुई थी।

साहूकार हैरान हुआ कि मेरी संपत्ति की चोरी हुयी और मुझे ही सजा, उसने पूछा– माननीय न्यायाधीश महोदय! यह कौन सा न्याय है?

कन्फ्यूशियस ने कहा– तुम्हारे पास अकेले इतनी अधिक संपत्ति का इक्ठ्ठा होना चोरी का बुनियादी कारण है। वर्तमान में विकास की अवधारणा में हिंसा है जो कि वर्ग–भेद के कारण बढ़ती जा रही है। हमारी विकास की अवधारणा धर्म, जाति, हिंसा से परे हो। जीवन को अच्छा बनाने का प्रयास जिसमें नैतिकता, अहिंसा, भाईचारा, एकता आदि का समावेश हो।

मनुष्य को समझने का कार्य सबसे कठिन है क्योंकि उसमें बौद्धिक विकास है, उसके इमोशन इतने प्रबल है, व उसके लोभ लालच का कहीं अंत नहीं है। केवल पदार्थ के आधार पर विकास करेंगे तो आदमी दब कर रह जायेगा। मुख्य चीज गौंण हो जायेगी। ठीक वही बात होगी कि घर में आग लगी तो बदहवासी में घर के झाडू तक को तो तत्परता से निकाल लिया गया और कमरे में सो रहे बच्चे की किसी ने सुध भी नहीं ली। आज स्थिति है कि आदमी तो जल रहा है और पदार्थ को निकालने का प्रयत्न हो रहा है। जरूरत है कि दृष्टिकोण बदले, चिंतन बदले। शिक्षा परिवर्तन का सबसे बड़ा माध्यम है। शिक्षा के द्वारा हम ज्यादा से ज्यादा सार्थक व नैतिक विकास की ओर बढ़ें।

बच्चों के मानसिक विकास में पोषक तत्वों की महत्ता

डॉ. (श्रीमती) सविता खरे
प्राध्यापक, गृह विभाग

बच्चे ही देश के भविष्य के निर्माता हैं। बच्चों का सम्पूर्ण शारीरिक व मानसिक विकास होना उनका पूर्ण अधिकार है। बच्चे के अधिकारों की पूर्ति तब तक नहीं की जा सकती जब तक परिवार के सदस्यों खासतौर पर मां को पोषक तत्वों का पूर्ण ज्ञान न हो अन्यथा बच्चे के साथ ही साथ परिवार का विकास भी अवरूद्ध हो जायेगा, और वह परिवार प्रगतिशील भारत का हिस्सेदार बनने से वंचित रह जायेगा।

बच्चें के सामाजिक विकास में वैसे तो सभी पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, वसा, कार्बोज, खनिज लवण, विटामिन व पानी की समुचित व संतुलित मात्रा आवश्यक होती है, परन्तु खासतौर से मानसिक विकास के लिये आयोडीन व आयरन की पर्याप्त मात्रा आवश्यक होती है। आयोडीन की प्राप्ति के लिये समुद्री भोज्य पदार्थो के साथ–साथ आयोडीन नमक आवश्यक होता है। आयोडीन की कमी से बच्चे का मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है। याददाश्त कमजोर हो जाती है, चेहरा ईडियोटिक दिखलाई देता है। इसी प्रकार विभिन्न शोधों के दौरान देखा गया है कि आयरन की कमी से बच्चे की याददाश्त कमजोर हो जाती है।

सेन फ्रांसिस्कों रायटर के अनुसार ''गर्भावस्था के दौरान डायबिटीज की शिकायत शिशु को शुरूआती याददाश्त को कमजोर कर सकती है।'' अमेरिकी शोधार्थियों के मुताबिक गर्भावस्था के दौरान डायबिटीज से शरीर में आयरन व आक्सीजन की कमी हो जाती है, यह कमी भ्रूण की मेमोरी के विकास को प्रभावित करती है। गर्भवती महिला अगर डायबिटीज से पीड़ित है, तो इससे उसका ग्लूकोज स्तर घटेगा–बढ़ेगा, जो शरीर में आयरन को कम कर देता है। इससे रक्त की आक्सीजन ले जाने की क्षमता घट जाती है, वैसे भी गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को आयरन की खुराक बढ़ाने की सलाह दी जाती है, ताकि बच्चे को पर्याप्त मात्रा में आयरन मिल सके।

कई छात्र अपनी ऊर्जा को बरकरार रखने के लिये कॉफी व कोल्ड ड्रिंक्स सेवन करने पर आश्रित हो जाते हैं, जबकि कई छात्र तो कैफीन से सम्बंधित दवाईयाँ तथा अन्य स्मरण शक्तिवर्धक दवाईयों का सेवन करने लगते हैं, इस तरह परीक्षा के तनावपूर्ण समय में पौष्टिक आहार को नकारने से उनकी याद करने की क्षमता और व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह देखा गया है कि ऊर्जा व एकाग्रता के स्तर को बनाये रखने में कैफीन का थोड़ी ही देर के लिये लाभ होता है परंतु जरूरत से ज्यादा कैफीन का सेवन करने से चिड़चिड़ापन बढ़ जाता है। तथा एकाग्रता के स्तर में भी कमी आ जाती है। भोजन, पौष्टिकता, पौष्टिक तत्वों की कमी व मनुष्य की दिमागी अवस्था के बीच एक गहरा संबंध है, तनाव मानव शरीर के बायोकेमिकल संतुलन को बिगाड़ता है अतः तनाव व चिंता, शरीर में प्रोटीन, विटामिन 'ए', 'सी' व 'के' के स्तर को घटाते है।

मानव के स्वास्थ्य व विकास हेतु आहार एवं पोषण विज्ञान की अहम भूमिका है। स्वास्थ्य, पोषक तत्वों व भोज्य पदार्थो की उपयोगिता की जानकारी लड़कों व लड़कियों दोनों के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। गृहविज्ञान में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त फैशन डिजाइनिंग, डायटीशियन, चाइल्ड काउन्सलर, एन्टरप्रेन्योरशिप, मास कम्यूनिकेशन, केटरिंग टेक्नोलॉजी आदि व्यवसाय किये जा सकते हैं। व्यवसाय के अतिरिक्त विभिन्न शासकीय नौकरियों हेतु प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर शासकीय सेवाओं में चयन हो सकता है।

पोषक तत्वों की महत्ता

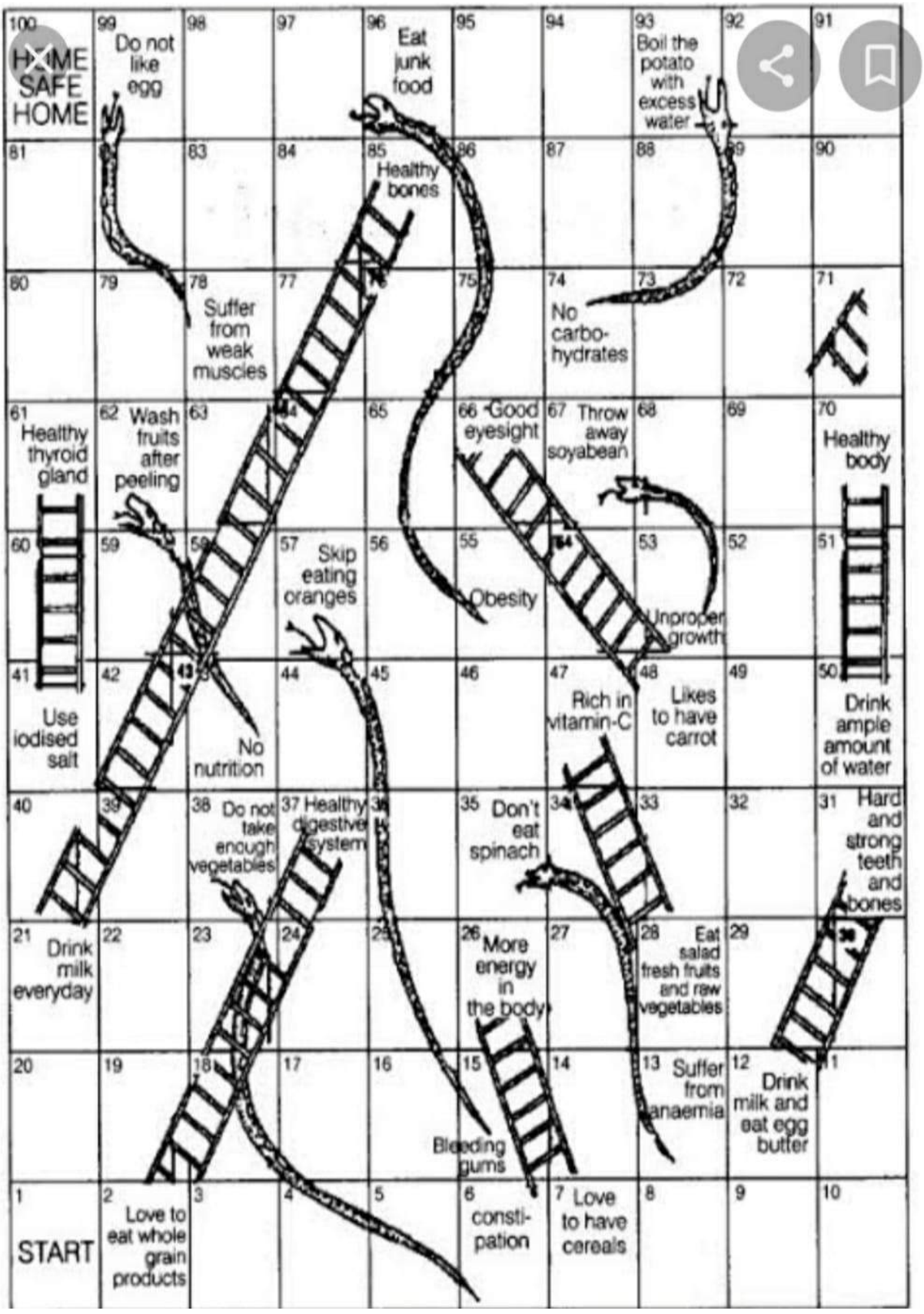

मानसिक स्वास्थ्य

डॉ. रूचि सोनी
सहायक प्राध्यापक
गृह विज्ञान विभाग

आपका जीवन जिस तरह से चलता है, वह निर्भर करता है कि आप कैसा सोचते हैं? आप कैसी प्रतिक्रिया करते हैं? आप अपने विचारों का अनुसरण कैसे करते हैं? आप अतीत, वर्तमान और भविष्य को कैसे देखते हैं? दैनिक जीवन में हम में से बहुत से हमारे शरीर के आकार, रंग, लम्बाई, व्यक्तित्व, विशेष पोशाक में केसे दिखते हैं?, हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन के बारे में विचार, वजन के पैमाने, व्यवहार प्रतिक्रिया यह सब हमारे मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते है। ये सामान्य बातें ही मानव के जीवन मे डिप्रेशन का कारण बनती हैं।

आईये जानते है कौन डिप्रेस्ड है?

- कर्ज में फँसे किसान डिप्रेस्ड हैं।
- घरेलू हिंसा झेलती लाखों महिलायें डिप्रेस्ड हैं।
- बचपन में सेक्सुअल अब्यूज के शिकार लड़के–लड़कियाँ डिप्रेस्ड हैं।
- रोजमर्रा के जीवन में बिना कारण तनाव झेल रहे लोग डिप्रेस्ड हैं।
- माँ–बाप द्वारा 99% मार्क्स लाने का दबाव सहते बच्चे डिप्रेस्ड हैं।
- बेरोजगारी के मारे पढ़े–लिखे युवा डिप्रेस्ड हैं।
- शादी जल्दी करने का तनाव झेलती तमाम लड़कियाँ डिप्रेस्ड हैं।
- विवाह में देरी होने के कारण युवा डिप्रेस्ड हैं।
- काम के बोझ और नौकरी छिनने के भय से काम करने वाले प्रोफेशनल डिप्रेस्ड हैं।
- बिना छुट्टी भयंकर परिस्थितियों में काम करने वाले सेना के तमाम जवान डिप्रेस्ड हैं।
- सीनियर की तानाशाही झेल रहे जूनियर डिप्रेस्ड हैं।
- घमण्ड करने वाले डिप्रेस्ड हैं।
- एकतरफा प्रेम में धोखा खाये लोग डिप्रेस्ड हैं।
- डिवोर्स से गुजर रहे लोग (खासकर महिलायें) डिप्रेस्ड हैं।
- गंभीर बीमारीग्रस्त तमाम लोग डिप्रेस्ड हैं।
- लाखों बीमार गरीब ईलाज के अभाव में डिप्रेस्ड हैं।
- 30–35 साल पढ़ाई करने के बाद भी बेरोजगार युवा डिप्रेस्ड हैं।
- दूसरों पर स्वयं से ज्यादा भरोसा करने वाले डिप्रेस्ड हैं।
- अकेलापन झेलते बच्चे–जवान–बुजुर्ग एवं महिलाएं डिप्रेस्ड हैं।
- भारत में पुरूषों की तुलना में महिलायें ज्यादा डिप्रेस्ड हैं।
- तांत्रिक–ओझा के चक्कर में पड़े लाखों डिप्रेस्ड हैं।
- अभावों में जाने को मजबूर और सुविधाओं में रहने वाले दोनों डिप्रेस्ड हो सकते हैं।
- जातिगत उत्पीड़न सहते लाखों लोग डिप्रेस्ड हैं।

- WHO के अनुसार ऊपर लिखे तमाम कारणों के कारण भारत में करीब 7 करोड़ लोग डिप्रेस्ड हैं।
- भ्रम में ना रहें! ऊपर से दिखायी न देने पर भी, छिपाये जाने पर भी Depression is real.

तो अब सवाल ये उठता है कि सामान्य रूप से खुश रहने, मानसिक स्वास्थ्य को पोषित करने व डिप्रेशन से दूर रहने के लिए क्या किया जाए?

चलिए तो आप को कुछ ऐसे आसान तरीके से अवगत कराती हूँ जिन्हें रोजमर्रा की जिदंगी में आसानी से अपनाया जा सकता हैं–

- अपने–परायों सबका हाल–चाल लेते रहें।
- सलाह लें, डॉक्टर के पास जायें! न छिपायें और न ही शरमायें।
- अपने आप से प्यार करो और अपने रंग, लम्बाई, शारीरिक छवि को स्वीकार करे।
- अपने द्वारा खाए जाने वाले खाने में कैलोरी के बारे में दोषी महसूस करने के बजाय, आप जो भी खाएं सन्तुलित हो, और उसका आनंद लें।
- अपने प्रत्येक अच्छे बुरे विचारों पर चर्चा करें जो आपको परेशान कर रहे हैं।
- उन चीजों को लिखें, जिनके लिए आप आभारी हैं, आप बेहतर महसूस करना शुरू कर देंगें।
- रोजाना व्यायाम करें। उस शौक, रूचि के अभ्यास में लिप्त रहें, जिसे आप करना पसंद करते हैं न कि उनमें जिसे आप दूसरों को करते हुए देखते हैं।
- उस बारे में विचार बिल्कुल ना करें जो आप के अधिकार क्षेत्र में नहीं।
- अपने चेहरे पर हमेशा मुस्कान रखें।
- खुद को खुश रखें।
- तारीफ करना सीखें।
- मौन रहने का अभ्यास करें।
- जब जो महसूस करें उसका प्रदर्शन तत्काल करें, जैसे– गुस्सा, उदासी, रोना, खुशी हर संवेग को प्रदर्शित करना सीखें।
- ''ना'' कहना सीखें।
- घमण्ड ना करें।
- वह करें जिससे आप को खुशी मिलती हो और जैसा मैं कहती हूं और वह करें जिसमें आपको खुशी मिले और वह सब भी जरूर करें जिसे मैंने कहा.....।

यह कुछ आसान तरीके मानसिक तनाव को बढ़ने से रोकेंगे और खुश रहने में मददगार होंगे।

इस तरह समझा गांधी को.....

डॉ. माधवीलता दुबे
प्राध्यापक, समाजशास्त्र

– बात सन् 1972 की है। हमारे स्कूल में गांधी जयंती मनाई जा रही थी। प्राचार्य महोदया ने स्कूल की शिक्षिकाओं को यह निर्देश दिया था कि गांधी जयंती पर छोटे बच्चों को भी शामिल करो अर्थात् छोटी कक्षा के बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करो। मुझसे बड़ी मेरी दो बहनें उसी स्कूल में पढ़ती थी। एक छठवीं में, दूसरी चौथी में, और मैं कक्षा दो की छात्रा थी। मेरी बड़ी बहिन से कक्षा शिक्षिका ने कहा अपनी छोटी बहिन को गांधी जयंती के कार्यक्रम में भागीदारी के लिए तैयार करो। मुझे याद है एक गीत मेरी बहनों ने मुझे रटा दिया था,

"ये पावन चौवन्नी चांदी की
भैया चांदी की.....
जय बोलो महात्मा गाँधी की ।।"

– बहिनों के निर्देशन में यह गीत याद कर मैंने बाल सुलभ तरीके से प्रस्तुत किया, सराहा भी गया, किंतु यह प्रश्न कई–कई बार मन में आया कि जिनकी हम जय बोल रहे हैं वे कौन थे? बस यह कह देना कि महात्मा गांधी हमारे राष्ट्रपिता थे, मेरी समझ से परे था। यह बात छतरपुर जिले के एक छोटे से कस्बे महाराजपुर की थी। बुंदेलखण्ड का यह इलाका डकैती जैसे उत्पात के लिए काफी संवेदनशील माना जाता था तब। घर में बच्चों को अक्सर डराया जाता था कि कहीं बाहर नहीं निकलना है। एक घेरे में हमारा स्कूल, पुलिस थाना और थोड़े से सरकारी क्वाटर्स थे। स्कूल की प्राचार्या भी हमारे पड़ोस में रहती थी। पिताजी पुलिस इंस्पेक्टर थे बहुत व्यस्त रहते थे और मां मिडिल स्कूल तक पढ़ी थी। मां से पूछती तो मां बस इतना कहतीं कि अंग्रेजों ने हमारे देश पर शासन किया और गांधीजी ने हमें आजादी दिलाने के लिए संघर्ष किया। मां आजादी मिलने की अपनी यादें जरूर साझा करतीं कि उस दिन कितने खुश हुए थे उनके गांव वाले। स्कूल में छुट्टी का ऐलान हो गया था–यह उनकी स्कूली जीवन की सुखद स्मृति थी। नानी भी हमारे साथ रहती थीं, बिस्तर में सोते समय भगवान राम–कृष्ण की कहानियां सुनाती थीं। गांधीजी पर कोई बात नही करती थीं, हाँ, इतना जरूर कहतीं कि बेटा अंग्रेजों ने चाय पिलाना सिखा दिया। मेरा मन गांधीजी और अंग्रेजों के बारे में जानने सदैव उत्सुक रहता। मेरी कक्षा शिक्षिका से मुझे बहुत डर लगता था और प्राचार्या चूंकि पड़ोस में ही रहती तो अक्सर दिख जातीं, हम हर बार उन्हें देखते ही 'नमस्ते बहिन जी' कहकर छुप जाते। एक दिन उन्होनें आवाज देकर मुझे बुलाया, कहा तुम कुछ दिन तक मेरे घर पर आना खेलने के लिए मैने उन्हें आश्चर्य से देखा, बिना कहे ही मैं शायद उनसे पूछ रही थी किसके साथ? क्योंकि वह तो अकेली रहती थीं। तभी उन्होनें मेरी भावभंगिमा को ताड़ते हुए मेरा हाथ पकड़ा और अंदर ले गईं, प्लेट में बिस्किट लाकर मेरे सामने रखे और अपने बेटे को आवाज लगाई। उनका बेटा अरूण बोर्डिंग (कक्षा पांचवी) में पढ़ता था, कुछ दिन के लिए देहरादून से आया था, थोड़ी देर में हम लोग घुल मिल गए, सांप सीढ़ी भी खेली और उसकी सुंदर किताबें भी देखीं। वह किताबें मैं सिर्फ देख सकती थी अच्छे चित्र भी थे पर पढ़ नहीं सकती थी क्योंकि मुझे अंग्रेजी नहीं आती थी और हिंदी में अक्षर जोड़ना सीख कर पढ़ना शुरू ही किया था, तब। मैनें एक दिन उससे पूछा तुम मुझे गांधीजी के बारे में बतलाओगे। उसने कहा, सिर्फ बतलाऊंगा ही नहीं उनके बंदर भी दिखलाऊंगा। मैंने पूछा कैसे? उसने कहा मेरे पास हैं, मैंने उत्सुकता वश कहा अभी दिखाओ। उसने कहा आज नहीं कल। कल एक काम करना पड़ेगा फिर बताऊंगा। मैं घर वापस आ गई। दूसरे दिन 12 बजे स्कूल से लौटकर जल्दी से खाना खाया और पहुंच गई अरूण के पास, अरूण ने कहा पहले साथ चलो मैनें पूछा कहा? उसने कहा मम्मी पोस्ट ऑफिस से डाक छांटने

के लिए बोलकर गई है। पर मैं तो अपने दायरे से निकली ही नहीं थी और पैरों में चप्पल भी नहीं थी, कितनी दूर है पोस्ट ऑफिस, यह सब पता भी नहीं था लेकिन गांधी जी के बंदर पोस्ट ऑफिस से लौटने पर ही वह दिखलायेगा यह बात पक्की थी। अंदर से डर लग रहा था, नानी और मां ने डाकू की बातों से डराकर जो रखा था, फिर भी मैं चली गई पैरों का बुरा हाल हो गया था, वापस आकर अपने वचन के अनुसार उसने एक छोटी सी प्रतिमा मेंरे सामने रख दी उसमें तीन बंदर बने थे, **'बुरा मत बोलो, बुरा मत देखो और बुरा मत सुनो'** यह संदेश अरूण ने समझाया तब मैं उससे कहने लगी मैं तो सोचती थी कि गांधीजी ने तुम्हें तीन बंदर घर में रखने के लिए दिए। उसने बहुत जोर से हंसा और कहा तुम गांधीजी के बारे में कुछ भी नहीं जानती वो भला मुझे या मेरी मां को बंदर क्यों देते....? मैं घर वापस आई आकर अपनी दीदी को और फिर रात में नानी को पूरी घटना सुनाई। डाँट तो पड़ना ही थी क्योंकि मैं घर से बाहर बिना बताकर गई, पर क्या करूँ ? मेरे बहुत सारे प्रश्नों का कोई उत्तर भी नहीं देता था बहिनें भी घर का काम और अपनी पढ़ाई करती थीं। नानी ने पिताजी से कहा कि बच्चों को कहानी की किताबें ला दिया करो। पिताजी ने फिर बाल पाकेट बुक्स, अमर चित्र कथाएँ, नंदन, चंदामामा, गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित आदर्श कहानियाँ लाकर देना शुरू कर दीं और किताबों से पढ़ने समझने का सिलसिला चल पड़ा। हां यह जरूर है कि पिताजी ने जीवनपर्यंत मेरी इस अभिरूचि का ख्याल रखा और किताबें आना कभी कम नहीं हुई। कुछ समय बाद पिताजी का स्थानांतरण हो गया और अब बात उस समय की है जब मैं कक्षा पांचवी में पहुंच गई थी हमारे पाठ्यक्रम में सहायक वाचन में गांधीजी की कहानी विस्तार से दी थी। फिर गांधी जयंती आई। इस बार मेरी बहनों ने नहीं बल्कि खुद मैंने कक्षा शिक्षिका के पास भाषण प्रतियोगिता में भाग लेने नाम लिखवाया था। वह मंच पर मेरे द्वारा दिया जाने वाला पहला भाषण था, उस कार्यक्रम में बाहर से अतिथि भी आए थे सहायक वाचन की अधिकांश बातों को मैंने रट लिया था और दस मिनट से ज्यादा बोला। निर्बाध रूप से बोल पाने के कारण अतिथियों ने पास बुलाकर हौसलाअफ़जाई की और पुरस्कृत भी किया। यहां से मेरा आत्मबल बढ़ने लगा।

जब मैं कक्षा 7वीं में आई हम फिर सब एक नई जगह पहुंच गए थे 'अमरवाड़ा' (छिंदवाड़ा)। वहां तब गांधी शिक्षा पर आधारित स्कूल था नाम था बेसिक शाला। हमें यहां स्कूल के पाठ्यक्रम के अलावा स्वावलंबन के प्रयास भी करना पड़ते थे। व्यायाम नियमित रूप से, पोनी और तकली हाथ में पकड़कर सूत कातना मैंने वहीं सीखा था। मेरे कुछ साथी बहुत अच्छे कलाकार थे वे मिट्टी के खिलौने, सरई के पंखे बहुत सफाई से बनाने थे। इस तरह श्रम से लगाव करना सीखा था तब हमने। गांधी जंयती यहां भी धूम से मनाई जाती थी। लाउड स्पीकर में, "सुनो–सुनो ये दुनिया वालो बापू की यह अमर कहानी....." और दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल जैसे गाने देर तक चलते थे। मुझे याद है हमने समूह में भजन गाया था तब, "वैष्णव जन तो तेरो कहिए जो पीर पराई जाने रे.....।" हमारे हिंदी के मास्टर जी गाते थे फिर हम साथ देते थे।

– गांधी जी के बारे में समझ धीरे–धारे समाज विज्ञान के पाठ्यक्रम से बढ़ती गई। मैंने उच्च शिक्षा में कदम रखा तब स्वाध्यायी छात्रा के रूप में स्नातक किया। खाली वक्त में पढ़ने की आदत के कारण गांधी जी की आत्मकथा (सत्य के प्रयोग) और हिंद स्वराज पढ़ डाली। जब मैं शोध छात्रा के रूप में अध्ययनरत थी तब गांधी के बारे में समझ अलग ढंग से विकसित हुई। डॉ. राममनोहर लोहिया के विचारों पर मेरा शोध कार्य केंद्रित था। लोहिया स्वयं को कुजात गांधीवादी मानते थे, गांधी के सत्याग्रह को लोहिया ने सिविल नाफरमानी (मारेंगे नहीं लेकिन मानेंगे भी नहीं) के रूप में व्याख्यायित किया, लोहिया ने सप्त क्रांति की जो अवधारणा रखी उनमें सिविल नाफरमानी की भूमिका महत्वपूर्ण थी। उन्होंने इसे अपने रचनात्मक कार्यक्रमों का हिस्सा भी बनाया था। लोहिया गांधी की शक्ति की चर्चा करते हुए कहते थे, कि "इस सदी की दो महान ताकतें है एक गांधी और दूसरा एटम, देखना है जीत किसकी होती है।"

–जब मैं अध्यापन करने लगी तब विद्यार्थियों की जिज्ञासा शांत करने के लिए गांधी पर लिखी अन्य संदर्भ पुस्तकों को भी पढ़ा। अभी–अभी हाथ में आई लेखक सुधीर चंद्र की किताब, 'गाँधी एक असंभव संभावना' पढ़कर खत्म की है। इस पुस्तक ने मन को उद्वेलित कर दिया है एक कसक उठती है मन में। लेखक ने लिखना शुरू करने के पहले ही गांधी को उद्धृत करते हुए लिखा है कि "मैं तो कहता–कहता चला जाऊंगा लेकिन किसी दिन मैं याद आऊंगा कि एक दिन मिस्कीन आदमी जो कहता था, ठीक था।" (गाँधी, 16 अक्टूबर 1947) और अंत में लेखक ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा कि कसक यह भी कि, *'कभी हमारे ही मानने और बनाने से संभव बने गांधी आज हमारे ही न मानने से असंभव बन गए हैं। असंभव भी ऐसे वक्त में जब हमें पहले से ज्यादा जरूरत है उनकी।'* लेखक की यह पीड़ा मेरे मन में भी कसक पैदा कर रही है, समाज में दुश्वारियां बढ़ती जा रही हैं एक ओर कभी भीड़ हिंसा करती है तो कभी दूसरी ओर समूह में रहते हुए आदमी अपने अकेलेपन से घबरा रहा है। उत्पादन आवश्यकता के लिए नहीं उत्पादन के लिए आवश्यकताएं पैदा की जा रही हैं। अहं का उन्माद नम्रता को नेपथ्य में ले जा रहा है। समाज का चेहरा तथाकथित विकास की चकाचौंध में विद्रूप होता जा रहा है। श्रम विहीन रोजगार अपने पैर पसार रहा है। हस्तशिल्प उद्योग मंथर मृत्यु की मार झेल रहे हैं। गांव से पलायन बढ़ता जा रहा है। शहरों में आर्थिक असमानता अर्थात् वर्ग असमानता बढ़ती जा रही हैं। यह सब तब हो रहा है जब हम गांधी के चश्मे से कुछ देखना चाह रहे हैं स्वच्छ भारत गांधी के सपनों का भारत.....।

– गांधी चिंतन करते वक्त दो अहसास मेरे साथ होते हैं एक गांधी विचार के साथ खुद को रखना और एक खुद को अकेले में रखना। जब मैं व्यक्तिगत जीवन में खुद के दृष्टिकोण से सोचती हूँ तो शायद तटस्थ होकर खुद का मूल्यांकन नहीं कर पाती लेकिन जब गांधी विचार के बरक्स मूल्यांकन करती हूँ तो अपनी गलतियों पर पछतावा भी होता है और उनका प्रत्युत्तर भी मिलता है। गांधी विचार के सागर से कुछ मोती मैंने चुने हैं जैसे, 'कोई और आपको धोखा नहीं देता बल्कि आप स्वयं को धोखा देते हैं।' 'अहिंसा नम्रता की पराकाष्ठा है बिना नम्रता के कभी मुक्ति नहीं मिलती' और एक और बात 'जो परिवर्तन हम देखना चाहते है वह अपने अंदर लाएं।'

लघु प्रसंग :–

बात उन दिनों की है जब कोरोना के बढ़ते संक्रमण ने लॉकडाउन में सख्ती कर दी थी। फोन की घंटी सुनने के पहले हिदायतें, नगर निगम की गाड़ी का गलियों में प्रचार और आस–पास, अपने नाते–रिश्तों और परिवार में भी दहशत बढ़ा देने वाली खबरें। अचानक मैंने अपने घर के पिछवाड़े का दरवाजा खोला, पीछे एक लाईन से सर्वेंट क्वार्टर्स से दरवाजे से झांकते बच्चों को भी देखा। उन्हें मैंने आवाज दी, बच्चे पास आ गए। मैंने कहा कल से तुम्हारी कक्षा मैं लूगीं पीछे वाले आंगन में। दूसरे दिन बच्चे समय पर आ गए, मैंने उन्हें दूर–दूर बैठाया, मास्क दिए, हाथ धुलवाए और कहा; कक्षा हो गई। उनमें से एक बच्चा बोला और पाठ कौन सा पढ़ेगें मेडम जी? मैंने कहा याद करके आना है, लिखो–

दो गज की दूरी है जरूरी और अपने हाथ है रखना साफ।

वह बच्चा सहसा पूछा, मेडम जी दो गज यानि कितनी दूरी होती है। मैंने उनसे कहा– अपना स्केल निकालो अभी समझाती हूँ, बच्चों से निशान लगाने का कहा 3 फीट पर 1 गज फिर 3 फीट और नापा। यह करने के बाद मैंने पूछा अब समझ गए न कितनी दूरी है जरूरी? वह निःस्तब्ध खड़ा था, मैंने पूछा–क्या हुआ बेटा? उसने गरदन नीची कर ली, मैंने उसका सिर ऊँचा किया पूछा बताओ क्या हुआ? उसने हाथ का पंजा बतलाते हुए कहा, में इतनी दूरी पर तो हम पाँच लोग रहते हैं मेडम जी। मेरा भी सिर झुक गया। दूसरे दिन की कक्षा में क्या पढ़ाउंगी यह विचार करने लगी....।

माधवीलता दुबे, प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

नेहरू और धर्मनिरपेक्षता

डॉ. मीनू चतुर्वेदी
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

स्वतंत्र भारत की बुनियाद में राज्य का स्वरूप कैसा हो, इस पर देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने धर्म और राज्य की मान्यता के विपरीत धर्म निरपेक्षता का समर्थन किया। नेहरू जी भारत की बहुधर्मिता से प्रभावित थे, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नेहरू जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हम एक स्वतंत्र तथा धर्म निरपेक्ष राज्य का निर्माण कर रहे हैं, जहां पर प्रत्येक धर्म तथा विश्वास को पूर्ण स्वतंत्रता तथा समान आदर प्राप्त हो सके, जिसके प्रत्येक नागरिक को समान स्वतंत्रता तथा समान अवसर प्राप्त हों। उन्होंने सभी सामाजिक असमानताओं को दूर करने पर बल दिया। उनके अनुसार, जाति प्रथा पर आधारित समाज धर्मनिष्ठ कदाचित नहीं बन सकता। वे लोगों के निजी विश्वासों में हस्तक्षेप के विरूद्ध थे परन्तु अगर ये विश्वास जातीय विभाजनों में उलझ जाते हैं, तो वे राज्य के सामाजिक ढांचे को प्रभावित करते है। अतः समाज को इन बन्धनों से मुक्त कराना होगा।

नेहरू ने धर्म निरपेक्ष राज्य का समर्थन किया। वे धर्म को राजनीति से दूर रखने के पक्षधर थे। वे भारत को धर्मनिरपेक्ष मार्ग पर अग्रसर करने के इच्छुक रहे। वे भारत में राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करना चाहते थे। उन्हें संकीर्ण राष्ट्रवाद पसन्द नहीं था। इसी के रहते नेहरू ने जीवन पर्यन्त हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रयास किया ऐसा करते हुए वे राष्ट्रवाद और एशियाई देशों के नवोदय के बीच सेतु बने रहे। नेहरू का राज्य किसी धर्म को राजकीय धर्म अंगीकार नहीं करता। वह सब धर्मों की समान रूप से रक्षा करता है। धर्म निरपेक्ष राज्य उदार समाज की आधारशिला रखता है।

धर्म निरपेक्षता संबंधी दृष्टिकोणः–

1. राज्य को सामाजिक हित, सामाजिक सुधार, शिष्टाचार, स्वास्थ्य व सार्वजनिक व्यवस्था के हित के प्रसंगों के अतिरिक्त व्यक्ति के धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप का प्रयास नहीं करना चाहिए।
2. राज्य को धर्म के आधार पर अपने नागरिकों के मध्य किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए।
3. व्यक्ति को अपने अन्तःकरण और विश्वास की स्वतंत्रता का पालन करते हुए संकीर्ण और असहिष्णु दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए अपितु दूसरे धार्मिक विश्वासों के प्रति सहिष्णुता और सौहार्द का भाव रखना चाहिए।
4. सामाजिक जीवन में साम्प्रदायिक सद्‌भाव को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
5. धर्म के प्रति मताग्रही दृष्टिकोण नहीं रखा जाना चाहिए। धार्मिक विश्वासों के रूप में प्रचलित ऐसी रूढ़ियों को जो समानता, मानवीय गरिमा, न्याय व बन्धुता के आदर्श से असंगत हो, अस्वीकार करने के लिए व्यक्ति को तत्पर रहना चाहिए।
6. धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण को जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी व्याप्त किया जाना चाहिए।

नेहरू जी का दृष्टिकोण मानवतावादी रहा। उनके अनुसार मनुष्य को मानवतावादी धारा के साथ जोड़कर उसकी पूर्णता का बोध कराना चाहिए। उन्होंने मानवीय मूल्यों की भारतीय समाज में पुनर्स्थापना पर बल दिया।

नेहरू ने धर्म निरपेक्षवाद को आधुनिक लोकतंत्रीय समाज का एक अटूट अंग माना। आधुनिक भारत दो राष्ट्रों के सिद्धांत को नहीं अपनायेगा, क्योंकि आधुनिक विश्व के कुछ राज्यों को छोड़कर, शेष सभी राज्य धर्म निरपेक्ष राज्य हैं। उन्होंने सभी भारतीयों

के लिए जाति तथा धर्म के आधार पर भेदभाव किए बिना, एक सामान्य नागरिक संहिता तैयार करने का प्रयत्न किया।

वास्तव में नेहरू का धर्म निरपेक्षवाद भारत के लिए वास्तविक आवश्यकता थी। यह उन सभी धार्मिक विभिन्नताओं तथा आपसी शत्रुता के लिए अचूक दवा थी, जो कि इन विभिन्नताओं के फलस्वरूप भारत में देखने को मिलती है। प्रथम मत प्रणाली को समाप्त करके तथा उसके स्थान पर मताधिकार प्रणाली लागू करके इस दिशा में पहला कदम उठाया गया। कुछ एक मौलिक अधिकार जैसे कि धर्म का अधिकार, सांस्कृतिक तथा शिक्षा का अधिकार तथा समानता का अधिकार और कुछ ऐसे लक्ष्य जो निर्देशक सिद्धांतों में लिखे गये है आदि भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य बनाने की ओर उठाए गए दूसरे कदम हैं। डीएफ कारका जो कि नेहरू के सख्त आलोचक रहें हैं, ने ठीक कहा– ''बावजूद हिन्दू साम्प्रदायिकता के दबाव के, भारत के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को बनाये रखने का श्रेय नेहरू को प्राप्त है।''

'' अपने विद्यार्थियों को योग्य बनाना है शिक्षक का उद्देश्य''

शिक्षा एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा अयोग्य को योग्य, कुरूप को रूपवान और मूर्ख को विद्वान जा सकता है। इस प्रक्रिया में दो कारक होते हैं– एक गुरू व दूसरा शिष्य। गुरू अपने ज्ञान के द्वारा शिष्य को पारंगतता प्रदान कराता है, और शिष्य उस पारंगतता से नए आयाम बनाता है।

यह दैनिक जीवन के उस उदाहरण जैसा है और जिसमें मकान कोई और बनाता है, पर रहता कोई और है और जो उस मकान में रहता है उसी के नाम से मकान की पहचान होती है। उसी प्रकार शिक्षक अपनी शिक्षा से किसी नादान व्यक्ति को योग्य बना कर उसे समाज का भाग्य विधाता बना देता है। जब कोई भाग्य विधाता बनता है, तो वह अपने कौशल से समाज को कई नए मुकाम तक ले जाता है, जिसकी चारों ओर प्रशंसा होती है। उसके द्वारा किए गए कार्य को उसके नाम से जाना जाता है, लेकिन उसके इस कार्य के पीछे वास्तविक उपज उसके शिक्षक की होती है।

व्यक्ति के जीवन में कई गुरू होते हैं– जो उसके माता–पिता, शिक्षक, भाई–बहन, दोस्त, सहयोगी या उसके जीचे काम करने वाले व्यक्ति भी हो सकते हैं।

कोई भी गुरू क्यों न हो?, वह किसी भी क्षेत्र से संबंध क्यों न रखता हो? लेकिन सभी गुरू का एक ही लक्ष्य होता है, वह है अपने शिष्य को योग्य के साथ–साथ, वह जो स्वयं नहीं कर पाया या जो वह स्वयं करना चाहता था, वह अपने शिष्य को उस लक्ष्य तक पहुंचाना है।

विवेक तिवारी
कक्षा– बी.ए. द्वितीय वर्ष

स्वामी विवेकानंद का युवाओं को संदेश...

श्री के.एल.खाण्डपा
पुस्तकालय अध्यक्ष

किसी भी समाज एवं राष्ट्र के विकास में युवाओं की भूमिका सदैव उल्लेखनीय रही है। इतिहास में हुई क्रांतियों की पृष्ठभूमि में युवाओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। युवा जीवन का सर्वाधिक गतिशील पक्ष होता है। स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्र निर्माण के लिए युवाओं का आव्हान किया। उनके अनुसार युवा किसी भी देश की सबसे मूल्यवान संपत्ति है। युवाओं में अनंत ऊर्जा का स्त्रोत है। यदि इस ऊर्जा का सही दिशा में इस्तेमाल कर लिया जाए तो राष्ट्र के विकास को एक नई दिशा मिल सकती है और यदि इसका सही उपयोग न किया गया तो यह शक्ति विध्वंसक हो सकती है। इस दृष्टिकोण से विवेकानंद ने युवाओं की शक्ति को जाग्रत करने हेतु सर्वप्रथम उनके चरित्र निर्माण पर बल दिया इसके पश्चात् युवाओं को राष्ट्र के विकास में योगदान के लिए एकजुट होकर प्रयत्न करने संकल्प की प्रेरणा दी। युवाओं को चरित्र निर्माण के जो सूत्र विवेकानंद ने बतलाए वे इस प्रकार हैः–

आत्मविश्वास, आत्मसंयम, आत्मज्ञान, आत्मत्याग, मानव के चरित्र के वे सशक्त आधार हैं जिसमें कोई व्यक्ति स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है व राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकता है विवेकानंद के अनुसार संसार का इतिहास उन थोड़े से व्यक्ति का इतिहास है जिनमें आत्मविश्वास था आत्मविश्वास के सहारे व्यक्ति सफलता को प्राप्त कर लेता है। असफलता तभी होती है जब हम अंतःस्वशक्ति के निकालने का प्रयास नहीं करते। विवेकानंद ने बड़ी दृढ़ता से यह बात कही कि जिस क्षण व्यक्ति या राष्ट्र आत्मविश्वास खो देता है उसी क्षण उसकी मृत्यु आ जाती है। विवेकानंद ने युवाओं को बलवान बनने की प्रेरणा दी। उनके अनुसार बल ही जीवन है, दुर्बलता ही मृत्यु है और युवाओं से उन्होंने अपील की कि साहसी व पूर्ण नीतिपरायण बनो। दृढ़चित्त बनो और इससे भी बढ़कर पूर्ण पवित्र और कपट शून्य बनो। अपने चरित्र में आज्ञापालन का गुण लाओ। अपने हाथों अपना भविष्य बनाओ। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। जीवन में लक्ष्य का संधान करो। दिन रात उसी लक्ष्य के बारे में सोचो और जुट जाओ उस लक्ष्य की प्राप्ति में। दूसरो को दोष मत दो। अपने दोषों और गलतियों के लिए तुम दूसरों को दोषारोपण मत करो। दूसरों पर दोषारोपण हमें दुर्बल बनाता है। विवेकानंद के अनुसार – व्यक्ति का चरित्र और कुछ नहीं उसकी आदतों और वृत्तियों का सार है। इसी के आधार पर श्रेष्ठता और निकृष्ठता सिद्ध होती है।

श्रेष्ठ चिंतन और आचरण से चरित्र का निर्माण होता है। विवेकानंद कहते हैं यदि तुम सचमुच पवित्र हो तो तुम्हें अपवित्रता कैसे दिखाई दे सकती है जो हमारे भीतर है। हमें बाहर भी वही दिखाई देता है। अतः अपने अंदर पवित्रता का भाव विकसित करो। दूसरों से प्रेम करो और घृणा किसी से भी नहीं। प्रेम पुण्य है और घृणा पाप है। सब प्रकार की नीति, शुभ तथा मंगल का मूल मंत्र है मैं नहीं तुम (Not me but you)। विवेकानंद ने युवाओं को चारित्रिक दृढ़ता का संदेश देकर उनके भीतर सोई आत्मशक्ति को जगाने का प्रयास किया बल्कि मानवता आधारित उत्तरदायित्व बोध की प्रेरणा भी दी। विवेकानंद ने युवाओं से कहा हर स्त्री, पुरूष और सभी को ईश्वर के समान देखो। तुम किसी की सहायता नहीं कर सकते तुम्हें केवल सेवा करने का अधिकार है। केवल पूजा के भाव से सेवा करो जो दीन दुःखी है वे सब हमारी मुक्ति का साधन हैं। उनकी सेवा करके हम अपना उद्धार कर सकेंगे। विवेकानंद ने धर्म के सार के रूप में युवाओं से कहा परोपकार ही धर्म है। सारी उपासनाओं का सार है कि व्यक्ति पवित्र रहें और सदैव दूसरों का भला करें। मनुष्य देह में स्थित मानव आत्मा ही एक मात्र उपास्य ईश्वर है। अतः उस आत्म स्वरूप ईश्वर का चिंतन करो। संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाओ। गरीबों में ज्ञान का विस्तार करो। प्रसन्न रहो और इस बात पर विश्वास करो कि ईश्वर ने तुम्हें बड़े कार्य के लिये चुना है। विवेकानंद का यह विश्वास था कि पूर्ण निष्कपटता, पवित्रता, विशाल बुद्धि और सर्वविजयी इच्छा शक्ति इन गुणों से संपन्न है छोटे से युवा संसार में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। उनकी कार्ययोजना का सूत्र वाक्य था।

उठो, जागो और तब तक लगे रहो जब तक लक्ष्य न मिल जायें। विवेकानंद ने धर्म और आध्यात्म के साथ विज्ञान के समन्वय पर बल दिया। आत्मविश्वास, आत्मशक्ति, कर्तव्यनिष्ठा, परानुभूति, परोपकार नवभारत निर्माण हेतु संकल्पित थे। उन्होंने युवाओं के चरित्र निर्माण के साथ युवाओं को देश सेवा, जन सेवा के लिये लगाने की कार्य योजना बनाई। उनका विश्वास था कि कोई भी मनुष्य अथवा राष्ट्र को महान बनने के लिये सदाचार की शक्ति में विश्वास ईर्ष्या और संदेह का परित्याग एवं जो सद् कार्य करने में प्रयत्नशील हैं उसकी सहायता करना, यह तीन बातें महान बना सकती हैं।

महाविद्यालय परिसर में खेलों के प्रति नया उत्साह...

डॉ. संजय तेलंग
प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र
एवं खेल समिति के सदस्य

शा. डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल में 2015 में पदस्थ हुए क्रीड़ा अधिकारी डॉ. सतीश कुमार ने महाविद्यालय में मौजूद खेल संसाधनों, खेलों में विद्यार्थियों के रूझान व विभिन्न प्रतियोगिताओं में आने वाले परिणामों का विस्तृत मनन किया। इसके पश्चात उन्होंने महाविद्यालय में खेलों की स्थिति में सुधार हेतु एक कार्य योजना तैयार की। इस कार्ययोजना में डॉ. सतीशकुमार ने प्रमुख रूप से महाविद्यालय के ऐसे शिक्षकों को खेलों से जुड़ने का आग्रह किया जो अपने छात्र जीवन में कुछ खेलों में खिलाड़ी रहे व जिन्हें कुछ खेलों की अच्छी समझ थी। ऐसे सभी शिक्षकों को अपने–अपने प्रिय खेल में खाली समय पर नियमित अभ्यास हेतु प्रेरित किया गया।

इस सतत अभ्यास का परिणाम यह रहा कि वर्ष 2016 से महाविद्यालय के क्रीड़ा अधिकारी व प्राध्यापकगण ने म.प्र.शासन उच्च शिक्षा विभाग के तत्वावधान में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली राज्य स्तरीय शिक्षक एवं कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता में लगातार 5 वर्षों से विभिन्न खेलों में भोपाल संभाग का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उक्त राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में डॉ. सतीशकुमार (लॉन टेनिस) डॉ. संजय तेलंग (टेबल टेनिस एवं लॉन टेनिस), डॉ. मुकेश दीक्षित (बेडमिंटन), डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी (लॉन टेनिस) व डॉ. राकेश सक्सेना (लॉन टेनिस) द्वारा भोपाल संभाग की इन खेलों की टीमों में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व किया गया । वर्ष 2017, 2018 व 2019 में पुरूषों की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में टेबल टेनिस में चेम्पियन रहने वाली भोपाल संभाग की टीम में डॉ. संजय तेलंग ने सदस्य के रूप में भाग लिया । वर्ष 2020 में टेबल टेनिस में डॉ. संजय तेलंग उप विजेता रहे । इसी प्रकार बेडमिंटन में डॉ. मुकेश दीक्षित ने 2017 व 2018 में भोपाल संभाग का प्रतिनिधित्व किया। वर्ष 2018 में डॉ. मुकेश दीक्षित उप विजेता रहे। इसी प्रकार वर्ष 2019 में महाविद्यालय की शिक्षिकाओं डॉ. हर्षा जालोरी व डॉ. हरनीत चीमा ने महिला वर्ग में बेडमिंटन में चैम्पियनशिप जीती । डॉ. हर्षा जालोरी ने टेबल टेनिस में वर्ष 2017 में उप विजेता रहीं। वर्ष 2018 में वे टेबल टेनिस, बेडमिंटन एवं शतरंज में उप विजेता रहीं। वर्ष 2020 में डॉ. हर्षा जालोरी बेडमिंटन एवं टेबल टेनिस में उप विजेता रहीं।

महाविद्यालय में खेलों में उपलब्धियां हासिल कर रहे शिक्षकों को विद्यार्थियों की महाविद्यालय की टीमों के चयन में, वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन में व खेल समिति से जोड़ा गया। शिक्षकों के द्वारा मैदान पर खेलने के अलावा छात्र छात्राओं को मार्गदर्शन व प्रोत्साहन प्रदान किया गया। परिणाम स्वरूप हमारे महाविद्यालय में खेलों का एक उचित वातावरण बना व विभिन्न खेलों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में बढोतरी हुई। साथ ही विभिन्न जिला स्तरीय, संभाग स्तरीय, राज्य स्तरीय अखिल भारतीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने शानदार उपलब्धियां हासिल कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया। उदाहरण के लिए, प्रियांशु पाण्डे ने शूटिंग में अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर एकलव्य पुरस्कार हासिल किया। गौरव शाक्य ने वर्ल्डकप पैसापोलो प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व किया । आशुतोष पाण्डे ने अखिल भारतीय अंर्तविश्वविद्यालयीन कराटे प्रतियोगता में स्वर्ण पदक हासिल किया । रजनी सिंह ने राष्ट्रीय स्तर पर बाक्सिंग में व विजय कनर्जी ने (अंडर 23) कुश्ती में रजत पदक जीते। कु. मोहिनी गुप्ता ने राज्य स्तरीय टेबल टेनिस में रजत पदक जीता । कुल मिलाकर महाविद्यालय के क्रीड़ा अधिकारी के मागर्दशन में महाविद्यालय परिसर में खेलों के प्रति नये उत्साह का वातावरण निर्मित हुआ है। छात्र छात्राओं के खेल से

अधिक संख्या में जुड़ने से उनकी ऊर्जा सकारात्मक दिशा में गतिमान हुई है, साथ ही महाविद्यालय परिसर में अनुशासन का एक बेहतर वातावरण भी तैयार हुआ। एक प्रकार से खेल गतिविधियां विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास व स्वास्थ्य में सहायक रही हैं। इस शानदार उपलब्धि के संबंध में गत 5 वर्षों मे पदस्थ महाविद्यालय के सभी प्राचार्य के अतिमहत्वपूर्ण योगदान के लिए भी उनको आभार प्रकट करता हूं।

हमारे महाविद्यालय की स्टॉफ की टीम जिसनें वर्ष 2019 में राज्यस्तरीय शिक्षक एवं कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता में भोपाल संभाग का प्रतिनिधित्व किया।

स्वाधीनता संघर्ष में वनराजों की स्वर्णिम गाथा

पुष्पा देवी साहू
सहायक प्राध्यापक, इतिहास

भारत में सभ्यता का विकास महर्षियों, ऋषियों के गुरूकुल से प्रारंभ हुआ और उसे वन संस्कृति के नाम से पहचाना गया। सिन्धु घाटी सभ्यता में वृक्षों की पूजा के साक्ष्य मिलते है। गौतम बृद्ध को पीपल (बोधिवृक्ष) के पास बैठकर ज्ञान प्राप्त हुआ। आर्यावर्त के मध्यबिन्दु सी.पी. एण्ड बरार में स्थित बैतूल जिले का सौभाग्य रहा है कि यहां के वनवासियों ने वनों को जिस पर उनका जीवन निर्भर है और जो प्रकृति प्रदत्त हैं तथा जिस पर सबका समान अधिकार है, के संरक्षण संवर्धन हेतु सत्याग्रह का मार्ग अपनाया।

अंग्रेजों को भारत का हरा सोना खूब पसंद आया और इस कड़ी में मालाबार के वनों को 1803 में रिजर्व कर दिया। मध्य भारत में कर्नल जी.एफ. पियर्सन को (1858–1867) प्रथम बार वन विभाग बनाकर उसका मुख्य संरक्षक बनाया गया। जिसका मुख्य लक्ष्य वन पुत्रों से जंगल छीनकर उस पर अधिकार करना था।

अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य आर्थिक रूप से समृद्ध होना था, जिसके लिए बेशकीमती जंगलों के स्वामियों वन पुत्रों (आदिवासी) को उनसे वंचित करना था। यह प्रक्रिया शनेःशनेः तीव्र होती गयी। जिसे स्वाभिमानी भारतीय और सहन नहीं कर सके एवं स्वदेशी संसाधन पर विदेशी अधिकार के विरोध में ज्वाला भड़कने लगी। चूंकि मध्य भारत समृद्ध नहीं था। अतः नमक सत्याग्रह के अनुक्रम में जंगल सत्याग्रह करने का व्यापक विचार आदिवासी सांमतों के राज्य, जमीन जायदाद छीन लिये थे, जंगल कानून बन जाने से जंगल भी छिन गये, जिससे विद्रोह की आग जीवित रही जो हवा आने से अवसर पाकर सत्याग्रह के रूप में दहल गयी। गोंड, कोरकू, भील मुख्यतः बैतूल, सिवनी, छिन्दवाडा, मण्डला के पहाड़ों में रहते थे। नये जंगल कानून से जंगल रिजर्व हो गये। शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया उनके पास जो आत्मरक्षा के अस्त्र–शस्त्र, तीर, कमान, गुलेल, लाठी करसा, बल्लम थे। इन्हें बना पाना मुश्किल हो गया। महुआ, हर्रा, बेहड़ा आदि वनोपज पर प्रतिबंध से जीवन जीना अंग्रेजों ने दूभर कर दिया था। जिससे वे पलायन करने लगें एवं बेघर हो गये। आदिवासीयों को आरक्षित वनों से बाहर निकाला जाने लगा क्योंकि वे वन संरक्षण और वैज्ञानिक वन प्रबंध में जैविक विघ्न–बाधा यानी बायोटिक इंटरफियरेंस थे। अपनी जमीन जायदाद की जब्ती तथा जंगलों पर परम्परागत अधिकारों के छिने जाने से वनराजों ने फिरंगियों के विरूद्ध संघर्ष का शंखनाद बैतूल जिले से 3 कि.मी. दूर चिरवलार ग्राम से किया। 01 अगस्त 1930 को दीपचंद गोंठी ने पांच हजार वनराजों का समूह बनाकर चिखलार पहुंचकर पहाड़ एवं घास काटकर जंगल कानून भंग कर सत्याग्रह किया और इतिहास में एक नया मोड़ आ गया। सातलदेही, बंजारीढाल, नीगढ़ और जंबाड़ा में भी जंगल सत्याग्रह हुआ और जिर्रा गोड़ की शहादत हो गयी।

दो दिन बाद ही सत्याग्रहियों को 01 वर्ष का कठोर कारावास दिया गया। सितम्बर 1930 में गिरफ्तार व्यक्ति को मुक्त कराने के लिए चिखलार में पुलिस पर आक्रमण कर दो व्यक्ति शहीद हुए और 40 घायल। बाद में कई व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया गया। अक्टूबर 1930 तक सत्याग्रह कमजोर पड़ गया। 1932 में पुनः प्रारंभ करने का प्रयास किया। इस सत्याग्रह में सोनी बाई, सावित्री बाई आदि कई महिलाओं ने भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। घोड़ाडोगंरी डिपो से सागौन और बांस बाहर ले जाते थे। वनराजों ने जलती मशाल डिपों में फेंककर आग लगा दी, जिससे अंग्रेजों ने गोली चला दी और सरदार विष्णु सिंह गौड़ शहीद हो गया।

22 अगस्त 1930 को बंजारी ढाल में गंजन सिंह कोरकू के नेतृत्व में सत्याग्रह हुआ और कोवा, गोड़ सहित शहीद हो गये।

जंगल सत्याग्रह बैतूल में 2 माह ही चला, परन्तु इसने स्वाधीनता के संघर्ष में अंग्रेजों के खिलाफ निरंतर आंदोलन की नींव डाल दी। स्वदेशी संसाधन पर विदेशी सरकार के कब्जे, जो वनराजों के आर्थिक हितों की अनदेखी कर रहे थे, उनके अधिकारों को वापिस दिलाने की बेमिसाल स्वर्णिम गाथा जंगल सत्याग्रह एक बानगी थी।

कोरोना वैक्सीन के संबंध में तथ्यात्मक जानकारी

डॉ. हर्षा जालोरी
प्राध्यापक, भौतिकीशास्त्र विभाग

एफिकेसी रेट –

किस वैक्सीन की क्या है एफिकेसी रेट ?–

अमेरिकी कम्पनी फाइजर और मार्डना की वैक्सीन का एफिकेसी रेट सबसे ज्यादा है, फाइजर बायोएनटेक की एफिकेसी 95 प्रतिशत है, जबकि मार्डना की 94 प्रतिशत, वहीं जॉनसन एंड जॉनसन की एफिकेसी सिर्फ 66 प्रतिशत है। जब आप अन्य वैक्सीन की बात करते हैं तो स्पूतनिक–5 की एफिकेसी 92 प्रतिशत, नोवावैक्स की 89 प्रतिशत, भारत बायोटेक के कोवैक्सीन की 81 प्रतिशत और आक्सफोर्ड एस्ट्रोजनेका की 67 प्रतिशत है। जब आप नंबरों को देखते हैं तो लगेगा कि जिनकी एफिकेसी ज्यादा है वह वैक्सीन अच्छी है और जिनकी एफिकेसी कम है वह खराब, पर यह सोचना पूरी तरह गलत है।

यह एफिकेसी क्या होती है? इसे कैसे निकाला जाता है?

1. किसी भी वैक्सीन की एफिकेसी बड़े पैमाने पर होने वाले क्लीनिकल ट्रायल्स से पता चलती है। यह ट्रायल्स हजारों लोगों पर होती है। इन ग्रुप्स को दो हिस्सों में बांटा जाता है। आधे लोगों को वैक्सीन दी जाती है और आधों को प्लेसिबों। दोनो ग्रुप की मॉनिटरिंग होती है। वैज्ञानिक यह देखते कि किस ग्रुप के कितने लोगों को कोरोना इन्फेक्शन हुआ है।
2. मान लीजिये कि 170 कोविड–19 इन्फेक्टेड व्यक्ति बराबरी से दोनों ग्रुप्स का हिस्सा होते यानि प्लेसिबों वाले ग्रुप से 85 और वैक्सीन वाले ग्रुप से 85 वालेंटियर इन्फेक्टेड होते तो एफिकेसी 0 प्रतिशत होती। अगर सभी 170 इन्फेक्टेड वालिंटियर प्लेसिबों ग्रुप से होते तो एफिकेसी होती 100 प्रतिशत।
3. अब फायजर–बायोएनटेक के ट्रायल्स के वास्तविक आंकड़ो को समझते है। इनमें 162 प्लेसिबों एवं सिर्फ 8 वैक्सीन ग्रुप से थे। मतलब यह हुआ कि जिन्हें वैक्सीन लगी थी, उनके इन्फेक्शन से बचने की संभावना वैक्सीन न लेने वालों के मुकाबले 95 प्रतिशत रही। इसका मतलब यह है कि जिसे वैक्सीन लगी है उसके कोविड 19 से इन्फेक्ट होने की संभावना 95 प्रतिशत कम रही।

   लेकिन वैक्सीन के एफिकेसी रेट्स का प्रतिशत किसी वैक्सीन पर फैसला लेने का सबसे अच्छा तरीका नहीं है। क्योंकि वैक्सीन का काम सिर्फ वासरस से बचाने का ही नहीं होता।

तो वैक्सीन का उद्देश्य क्या है?

कोविड वैक्सीन का उद्देश्य वायरस को शून्य पर ले जाना नहीं है बल्कि शरीर को वायरस से लड़ने के लिये तैयार करना है। ताकि इन्फेक्शन गंभीर स्तर तक न पहुंचे और लोगों की अस्पताल में लग रही भीड़ को कम किया जा सके। वायरस इन्फेक्शन होने पर महज सर्दी–जुकाम जैसी स्थिति बने, जो कुछ दिनों में ठीक हो जाती है।

एफिकेसी महत्व रखती है, पर यह सब कुछ नही है। सवाल यह नहीं है कि कौन सी वैक्सीन आपको कोविड–19 इन्फेक्शन से बचायेगी बल्कि यह है कि कौन सी वैक्सीन आपको जीवित रखेगी या अस्पताल से बाहर रखेगी? अतः जो भी वैक्सीन उपलब्ध है। उसे लगवाईये। जो वैक्सीन आप लगवायेगें वह हमें महामारी को खत्म करने के करीब लेकर जायेगी।

Traditional Knowledge for Protection and Conservation of Environment

Dr. Mamta Pandey
Prof (Physics)

Traditional knowledge refers to the knowledge, innovations and practices of indigenous and local communities around the world. Development from experience gained over the centuries and adapted to the local culture and environment, traditional knowledge is transmitted orally from generation to generation. It tends to be collectively owned and takes the form of stories, songs, proverbs, cultural values, beliefs, community laws, local languages and agricultural practices including the development of plant species and animal breeds. Sometimes it is referred to as an oral tradition for it is practised and passed can be singing, dancing, painting to millennia. Traditional knowledge is mainly of a practical nature, particularly in the field of agriculture, fisheries, health, horticulture, forestry and environmental management in general. Traditional knowledge is vital for sustainability of natural resources including forests, water and agroecosystems across the world, be it for households, farming or villagers.

Following different traditional methods can be used to save the environment.

Water conservation and agricultural practices. Traditionally water conservation was given emphasis to conserve water in all possible manners. To avoid drought conditions, every village had enough number of ponds, lakes and wells to fulfill water requirement of the villagers and animals.

This helped in conserving water, maintaining water table and providing water for drinking, irrigation, domestic animals and do household works.

1. Traditionally People used to make earthen embankment (MED) around their farms (fields) to store water during rains which after infilteration recharged ground water table and also provided enough moisture soil for farming.
2. Traditionally People used crop rotation and natural organic manure (made from cow-dung & vegetation, neem etc.) to maintain fertility of soil. This provided healthy grains free from chemicals and people enjoyed organic food, without any publicity and high cast, which we see in city these days. The organic food is sold at very high cost now-adays.
3. Traditionally many rituals are performed which help conserving ecosystem. For example people do not use any sharp implement for farming on Nagpanchmi. This was strictly followed by every farmer just to avoid any killing of reptiles in the field which helped in conserving the crops from insects.
4. Traditionally, every house hold, planted trees for daily needs. Few trees and plants near their houses, were also planted. The villages were mostly able to meet their requirement from these trees/gardens.
5. The big trees like peepal, bargad were also planted which provide-shelter/shade during summers for animals and villagers.

6. Almost every house hold in villages had domestic animals for providing milk. Dedicated fields were left for domestic animals, to get enough grass for feeding.

Gandhiji said, "All of us have sufficient resources for our needs but not for our greed." Traditional knowledge also emphasises the logic of balanced and sustainable living.

If we see, what actually is traditional knowledge? It is nothing but a sum total of experiences and learnings of a community in an area, over a period of time. Our ancestors lived closely with nature and thus they realised the importance of all the components of nature. In various communities in India, natural substances/objects like water and trees are worshipped as Gods. People consider them sacred. The reason for worshipping them can be understood in two ways.

1. Social/Religious causes.
2. Mark of respect.

Since we respect nature, we don't exploit it. This is our traditional knowledge. We see nature as a part of our life. This union between man and nature has helped both in surviving and flourishing and now, there is much greater need than before for all of us to understand the relevance of this union & imbibe it in our lives.

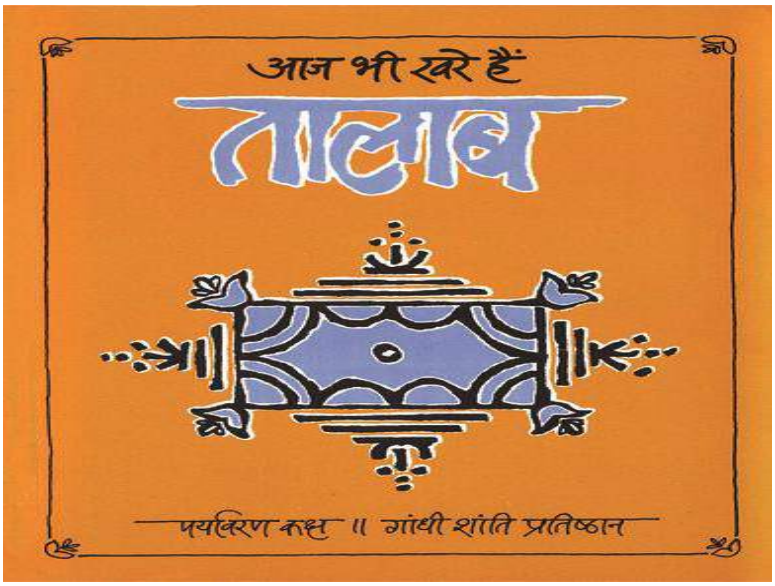

आज भी खरे हैं तालाब, पुस्तक ''**श्री अनुपम मिश्र**'' द्वारा लिखित बेजोड़ पुस्तक है। जो भारत की पारम्परिक जलसंरचनाओं के बारे में समझ विकसित करने में सहायक है। 19 भाषाओं में इसे अनुदित किया जा चुका है।

संकलनकर्ता
कुलदीप धनवारे, बी.ए. द्वितीय वर्ष

Elysia chlorotica- the Photosynthetic Animal

Dr. Devendra Patel
Department of Botany

It has long been known that photosynthesis occurs only in chlorophyll containing plants, algae and some bacteria. This process provides oxygen and energy for all the heterotrophic organisms on the Earth. Chlorophyll molecules occur in plastids eg chloroplasts in plants and algae while bacteria have Photosynthetic lamellae containing chlorophyll molecules.

Occurrence of plastids and chlorophyll molecules draw a line between plants and animals i.e. animals lack plastids and so photosynthesis. But now this line has been diluted by the discovery of *Elysia chlorotica,* an animal having plastids in its digestive cells, the diverticulae making the animal green in colour like plants. So it is termed as photosynthetic animal. Although they are not their own plastids.They receive them from their food, the algae *Vaucheria litoria*.

Elysia chlorotica is a marine invertebrate. It is a sea slug commonly known as Eastern Emerald Elysia. It is also called 'crawling leaves' due to its resemblance with green leaves. It was first described by A. A. Gould in1870. It is a member of kingdom Animalia belonging to the Phylum Mollusca and Class Gastropoda. They are soft and naked mollusks like other garden snails commonly noticed during rainy season.

They occur along the East coast of the United States including the Masachusetts, Connecticut, New York, New Jersey, Florida, Maryland and Texas. They have also been reported from Nova Scotia, Canada.

Elysia chlorotica is not green by birth but becomes green later. Main stages of it's life cycle are Egg, Larva(Veliger state) and Adult.

Egg is without chloroplasts, therefore colourless while larval stage known as Vilegar state is brown with red pigments earlier. It feeds upon *Vaucheria litoria,* a green unicellular, multinucleate, coenocytic algae. It punctures the algal filament with radula (tooth like structures) and sucks out the contents having chloroplasts with other protoplasmic materials like nuclei, mitochondria etc.

Digestive system of *Elysia chlorotica* consists of tubules that branch throughout the animal's body. Tubules are made up of single layer of cells. When algal contents go through these tubules, chloroplasts are not digested by the enzymes, but are engulfed by the well known process of phagocytosis. Now these chloroplasts are called symbiotic plastids or kleptoplasts and the process is called Kleptoplasty. These chloroplasts remain here for nine months to one year making the animal green. Some Scientists believe that kleptoplasts can photosynthesize for varying periods of time from hours to months and provide some sort of energy depending upon the slug species. Thus resulting into a unique type of symbiotic relationship.

Other sea slugs such as *Elysia crispate*, *Plakobranchus ocellatus* etc. are also capable of kleptoplasty but only for a limited period, while *Elysia chlorotica* can sequester them from nine months to one year.

Chloroplasts are called semi- autonomous cell organelles because although they have their own genetic system in the form of circular DNA but

this genetic system is not sufficient and a number of nuclear genes are necessary for their maintenance.Due to dependence upon nuclear genes, chloroplasts degrade very rapidly when they are kept isolated from plant cells.

Similarly kleptoplasts situated in the foreign environment of animal cell too cannot survive without nuclear genes. But they do, how? Efforts to answer this question have resulted in some very interesting hypotheses and has divided scientists into two groups. Julie A Schwartz, Nicholas E. Curtis, Sidney K. Pierce etc. carried out experiments using molecular biology and biochemical techniques and suggested that some of nuclear genes necessary for chloroplast function have transferred fron *Vaucheria litoria* into *Elysia chlorotica's* nucleus or any unknown virus has done this work. These types of gene transfers are known as horizontal gene transfers.

Although horizontal gene transfers are not new and its classical example is transfer of T-DNA from *Agrobacterium tumefaciens* bacteria into higher plants.But another group of scientists oppose this theory of gene transfer for Elysia and argues that the methods used to prove the hypotheses are insufficient and are prone to be contaminated.

Hope, scientists will soon unravel the exact method of kleptoplsty using modern sophisticated techniques of molecular biology, biochemistry and genetic engineering.

क्या आप जानते है?

डॉ. ईला जैन
प्राध्यापक, रसायनशास्त्र विभाग

'' वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना प्रत्येक व्यक्ति में जागृत हो रही है, प्रत्येक व्यक्ति अहिंसक हो रहा है, परन्तु क्या इतने मात्र से हम अहिंसक सिद्ध हो सकते है। '' भारत सरकार ने खाद्य पदार्थो को दो भागों में वर्गीकृत करते हुये माँसाहार के पैकेट पर '' भूरा व शाकाहारी पदार्थो के पैकेट पर हरा निशान लगाये जाने का कानून बनाया है।''

कंपनिया निश्चित रूप से शाकाहारी खाद्य सामग्री बनाती है पर माँसाहार संबंधी आयात का लायसेंस लेती है क्योंकि वो Food additives मिलाती है वे माँसाहार की श्रेणी में आते है। ये additive के कोड नं. को E- Numbering System कहते है। कंपनिया ENS नम्बर डालकर डालकर उन Additives के नाम लिखकर शाकाहारी होने का भ्रम रखती है।

निम्न प्रकार से ENS नम्बर दिये गये है।

100- Coloring agent
200- Conservative
300- Antioxidant
400- Emulsifier
500- Anti- Coagulants
600- Taste Enhancer

प्राणीजन्य स्त्रोत

E- 120, E- 153, E-422, E- 442, E-441, E-471 etc.

यदि किसी हरे निशान के पैकेट पर ENS No. है तो देखकर ग्रहण करे।

Plagiarism

Dr. Rajni Raina
Professor, Department of Zoology

Introduction:

Plagiarism is presenting someone else's work, ideas, images and sounds without consent. In plagiarism one incorporates work of others without acknowledging the concerned person. Under it is included all materials viz., manuscripts, printed matter, electronic form etc. It is to steal and pass off the ideas/ words of another as one's own without crediting the source. It is a literacy theft and the most unethical practice. Under it is included self-plagiarism which is also known as reuse / recycling or duplicate publication wherein a person re-purposes his/her written material without citing original content.

As per global plagiarism statistics the study by the centre for academic integrity found that almost eighty percent of the persons admit to cheating at least once. It started in 1601 when Ben Jonson used the term "plagiary" meaning kidnapper, to describe a copycat.

Why plagiarism?

- Persons practising plagiarism do not have academic skills.
- Lack knowledge.
- Are desirous of good grade.
- Lack of knowledge about consequences of cheating.
- Pretend to be more creative and innovative.
- To show better academic skills.
- Disinterested in assignments.
- Gaining credit for work of others.
- Persons under high pressure situations, poor time management and lack of organisational skills practice plagiarism.

Why Plagiarism is an offence?

Plagiarism comes under civil offence. It is an illegal practice and theft which fringes worker's intellectual property rights / copy right / trade mark. Further, it is an unethical practice and academic dishonesty wherein culprit fails to acknowledge the source of information. Person practising plagiarism receives credit for the work of others hence being highest forms of offence.

Consequences of plagiarism:

- Deprives the person of the opportunity to learn.
- Various penalties imposed :

  Jail

  Kicked out / expulsion from the institute

Work destroyed
Loosing registration
Legal action

Levels of Plagiarism:	**Penalties**
Level 0 (similarities up to 10%)	No penalty
Level 1 (similarities above 10 -40%)	Asked to submit revised script within 06 months.
Level 2 (similarities above 40-60%)	Debarring from submitting a revised script for a period of one year.
Level 3 (similarities above 60%)	Registration cancelled

Checking plagiarism:

- Expressing main ideas using ones own words.
- Using quotation marks.
- Referring the work used.
- In 2018 new regulations for higher education institutions as notified by university grants commission and approved by Ministry of human resource development have been introduced:
  - Setting up of plagiarism detection tools:
    - ❖Dulpi checker
    - ❖Grammarly
    - ❖Plagiarisma
    - ❖Search engine reports
    - ❖Plag tracker
    - ❖Plagium
    - ❖Scribbr
    - ❖Copyleaks.
  - Training of students, faculty, researchers and staff on the usage of these soft wares.
  - Submission of an undertaking while submitting thesis / dissertation / other document indicating that the document has been prepared by him or her and the document being original.
  - Undertaking to the effect that the document has been checked through the plagiarism tool.
  - Submission of certificate by supervisor indicating the work by researcher is plagiarism free.

My 90 years old mother and my battle with corona- My Experiences

Dr. Harneet Chima
Associate Professor, Sociology

I still remember everything so vividly, the day my mother had fever. I have been looking after her for many years. She has had different medical problems but she never had fever. As it was corona times, I immediately rang up the corona helpline. The doctor told me to give her paracetamol TDS for 3 days. Not satisfied, I rang up another doctor who told me the same thing and asked me to get her blood and urine tests done. The urine report showed "slight" infection, so she was put on antibiotics.

But her fever was 103^0-104^0 despite paracetamol and to my logical mind, it didn't seem correct that "slight" infection should lead to such high fever. One evening, her fever reached 104^0. I immediately started cold fermentation and continuously did it for five hours, till her fever came down. I told my mother, I was going to shift her to a hospital but as her fever had come down and she was tired, she told me to let her sleep.

Next day, her fever was all right. But when I was helping her in sitting up to take her medicines, I saw her panting a little and she coughed once. It was a strange cough, it had a different sound. I immediately realized that this was something more than "slight" infection; maybe corona.

But then I thought to myself. "How can it be corona?" Mummy doesn't go out of the house and nobody comes from outside to our house. I was perfectly fine, except for a little breathing problem, which I had for many months, ever since my brother died.

But I could not take any chance. Within 10 minutes, I rushed her to Akshay Hospital; they took various tests. The x-ray report showed 13% lung infection/pneumonia; which could be due to various reasons, including corona.

I immediately contacted Bansal Hospital for RTPCR test and a person came and took her sample. I was told her report would be given next evening. But I couldn't wait for 24 hours. I rang up the SDM Kolar and although I didn't know him, he immediately sent a doctor from JP hospital to Akshay hospital for Rapid Antigen Test. As the doctor was taking mummy's sample, I told her jokingly to take mine too; which she did and within five minutes told me

"YOU BOTH HAVE CORONA".

I just could not believe it initially!!

How was it possible? I had been so careful. But then I panicked, I was scared, not about myself (not at all) but for my mother.

Then began a round of frantic telephone calls for help and admission in a covid hospital. After about two hours, my class mate informed that beds were available in J.K. hospital. I immediately arranged for an ambulance and we rushed to J.K. hospital.

On reaching there, they kept us waiting for about five hours (all the time my mother was on a stretcher and I was running around, trying to get my mother admitted). They did a C.T. Scan and said her lung was 60% damaged and she had severe corona and needed to be admitted in an I.C.U. but they didn't have any bed vacant. After getting her there from Akshay hospital, after five hours, I was told to shift her elsewhere!!

Again, I frantically started ringing up people for help. After many phone calls, I was told that an I.C.U. bed was available in Chirayu Hospital, Bairagarh. Again, managed to get an ambulance (with great difficulty) and we started towards chirayu hospital. We had just gone about half a mile from J.K. hospital, when I got a call from J.K.Hospital, saying-

"Mam, we have good news. A bed has just become available in the I.C.U."

I realized that someone had died. I told the person "Any persons death is not good news for me, people have lost their loved one"

But as a bed was available and as Chirayu was very far from my house, we turned and went back to J.K. hospital.

They immediately put my mother on a wheel chair and took her to the I.C.U. I was stopped from entering the I.C.U., even though I myself was covid positive. My heart sank. I wanted to be with my mother, my presence would have given her strength but that was not possible. I was shifted to a private room.

I had told my son, who was in Germany that we had both tested positive for corona. He reached Bhopal the next day from Germany. I don't know how he managed this, as flights were stopped. But even though he reached Bhopal the very next day, I could not meet him for almost a month, as a non-covid person could not enter the hospital. But just knowing he was there, was a great solace for me.

My mother was in I.C.U. for many days, initially on 15 liters of oxygen. Every day, I somehow managed to meet her for two minutes. I never told her, she also had corona. Slowly, her oxygen requirement came down to two litres and they said they would shift her to a ward. Since I had a private room, I requested them to shift her to my room, which they allowed.

It was so nice to be able to see my mother, to talk to her, to hug her.

She could not move, she could not even turn to her side but I decided to look after her and managed most things.

One day, just after I had given her breakfast, she said "I feel something is stuck in my throat"

Although she spoke normally, I ran to find a doctor. Nobody was available. I saw a young doctor from another ward. I rushed to him and within 30 seconds we were with my mother, who by that time had started choking. The young doctor made her sit up and started slapping her back with cupped hands. I could see my mother could not breathe. Was I going to see her die in front of me, after she succeeded in coming out from the I.C.U.?? After a little while, thick mucus came out from her mouth and I pulled it out as it was extremely sticky. Slowly, my mother could breathe again. That young doctor saved my mother's life. Till today, I bless that young lad.

The docs started a medicine to thin the mucus. The hospital usually provided medicines for two times. As the medicine was over, I requested them to ensure that it was available for the night dose. But although they assured me, at 11.30 P.M. I was told that it was not available. A basic medicine not available, despite reminding??.I rang up my son and he got it at midnight.

The same thing happened again; an important medicine for her heart was not available and I was told about it at 11.45 PM. I told the nurse in charge that at least I could have been told on time; I would have purchased it. She told me "Madam, you are being hyper". I told her, "For you she is a patient, for me she is my mother" and rang up the hospital administration about problems.

Next day, I got a phone call saying both my mother and me would be discharged. I was shaken and shocked. My mother had still not tested negative and was still on oxygen. How would I manage suddenly at home??

Then it struck me, as my mother had been admitted through the ECHS (Army), I rang up the army authorities, who asked me to give things in writing for action from their side. A couple of phone calls from the army changed things for the better. (I always say-No organization like the army-they were looking after us 33year after my father's death)

Anyway, after a months stay, my mother came home. It was like "Diwali" for my son and me. The doctors in J.K.Hospital were excellent, as were most nurses, but one nurse just created problems. People helped me, in whatever way they could, boosting my morale, I can't thank them enough.

The time was very tough, I myself had corona. But as they say "tough times don't last" and I remember the words written in the army training grounds. "When the going gets tough, the tough get going"

So, remain tough in tough times. Keep extra medicines for the patient and "pray to God" for "when prayers go up, blessings come down". My mother could recover from 70% lung damage at the age of 90. It shows that where there is a will and a positive attitude, things work out. "Stay healthy, stay positive, stay safe!!

कोरोना से जंग जीतेंगें हम
बचाव ही उपाय हैं–

''मास्क नहीं तो टोकेंगें
कोरोना को हम रोकेंगे''

चलो यह वादा करते हैं.....

- ❖ भीड़ में जाने से बचें
- ❖ बार–बार साबुन से हाथ धोएं
- ❖ हाथ और मुंह की स्वच्छता का ध्यान रखें
- ❖ वैक्सीन जरूर लगवाएं

महाविद्यालय एन.सी.सी./एन.एस.एस. टीम की ओर से सविनय आग्रह।

SELF-RELIANCE

Dr. Ila Jain
Professor, Dept. of Chemistry

Man can learn a lot from the life of an ant-the lesson of self-reliance means dependence on one's own efforts. One who looks up to others for help has no future. There is a folktale of a bird who lived on a field with her two young ones. She would fly away every morning to collect food for her children. One day the children were alone. Just then the master of the field came there with his son and a servant. The master said to the servant, "The crop is ripe. Engage a few labourers to get the work done." The servant assured his master to start harvesting on the next day. When the sparrow's young ones over-heard the conversation and reported the details to their mother, the sparrow said: "Fear not, my children. No- body will come to this field." The sparrow's prediction proved true. A week passed and nobody turned up to reap the crop. Five days later the peasant and his son arrived there and noticed that the crop had not been reaped yet. "Reap it tomorrow",the master said to his son. The son assured that the work would be done. The little fledglings were worried. They reported the matter to their mother.

What did the peasant say this time? asked the mother bird.

He asked his son to reap the crop tomorrow.

The mother said, "Fear not then. The farmer's son won't come." Her predictions came true. A week passed and neither the farmer nor his son came to collect the food grain. One day the farmer decided to do the task himself. The young birds were frightened to hear those words. The mother sparrow, on getting the information, took a quick decision.

"My dear ones, get ready to leave this place. Tomorrow the farmer would definitely come to reap the harvest." But such plan had been made earlier also. "Just possible the farmer may not come tomorrow", the little ones said. The bird said, "Earlier the master had wanted others to do the job, but now he has taken the responsibility upon himself. Take it from me, he'll come early tomorrow morning with a sickle." And that was what actually happened. But the bird had already flown away with her children. This little tale has a hidden message and a moral. Do your job yourself. Be self-reliant and don't depend upon others for support.

A person waiting for a wind fall, gains nothing. On the other hand success kisses the feet of one who gives up his idleness and tries to move forward with a strong will.

सिंगल यूज प्लास्टिक

डॉ. हर्षा जालोरी
प्राध्यापक, भौतिकशास्त्र विभाग

प्रधानमंत्री ने सितम्बर महीने 2019 में देशव्यापी 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान का शुभारम्भ करते हुए जनता से सिंगल यूज प्लास्टिक के इस्तेमाल को खत्म करने की अपील की थी और अब 2 अक्टूबर 2019 को महात्मा गांधी की 150वीं जयंती से सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूर्णतया प्रतिबंध लगाया। हालांकि अधिकांश लोगों के बीच यह भ्रम है कि प्लास्टिक की सभी चीजें बंद हो रही हैं या कुछ ही चीजें। कई लोग तो यह भी नहीं जानते की सिंगल यूज प्लास्टिक होता क्या है और अन्य प्लास्टिक से कैसे अलग है? तो कई लोग ऐसे भी हैं जो यह जानना चाहते हैं कि प्लास्टिक हमारे लिए और प्रकृति के लिए कैसे और कितना नुकसानदायक है।

सबसे पहले समझते हैं कि यह सिंगल यूज प्लास्टिक है क्या – **चालीस माइक्रोमीटर (माइक्रॉन) या उससे कम स्तर के प्लास्टिक को सिंगल यूज प्लास्टिक कहते हैं।** इसका मतलब प्लास्टिक से बनी उन चीजों से है जो एक बार ही उपयोग में लायी जाती हैं और उसके बाद फैंक दी जाती हैं। मसलन आप जब बाजार में सब्जी या फल लेने जाते हैं तो आपको जो प्लास्टिक की पन्नी दी जाती है वह सिंगल यूज प्लास्टिक है। आप चाय वाले की दुकान पर जिस प्लास्टिक के कप में चाय की चुस्कियां लेते हैं, वह सिंगल यूज प्लास्टिक है, आप चाट वाले की दुकान पर जिस प्लास्टिक की प्लेट में गोलगप्पे या पापड़ी खाते हैं, वह सिंगल यूज प्लास्टिक है, आप बाजार से जो पानी की बोतल खरीद कर पीते हैं, वह सिंगल यूज प्लास्टिक है, आप शीतल पेय को जिस स्ट्रा के जरिये फटाफट गटक जाते हैं, वह सिंगल यूज प्लास्टिक है, आप जिस प्लास्टिक के चाकू से बर्थडे केक काटते हुए लंबी उम्र की कामना करते हैं, वह सिंगल यूज प्लास्टिक है, आप जिस प्लास्टिक के चम्मच से केक के स्वाद का लुत्फ उठाते हैं, वह सिंगल यूज प्लास्टिक है। इसी तरह ऐसी ही अनेकों प्लास्टिक की चीजें हैं जो हमारे दैनिक जीवन से जुड़ी हुई हैं और उन्हें हम एक बार ही उपयोग में लाकर फेंक देते हैं। फेंक कर हम सोच लेते हैं कि हमारा तो इस कूड़े से पीछा छूटा लेकिन यहीं हम गलती कर जाते हैं यह सिंगल यूज प्लास्टिक हमारा पीछा छोड़ता नहीं है।

बेहद कम खर्चे पर बनने वाले यह प्लास्टिक उत्पाद बहुत ज्यादा खतरनाक रसायन लिये होते हैं जिसका बुरा प्रभाव इंसान और पर्यावरण के स्वास्थ्य पर पड़ता है। यही नहीं इस सिंगल यूज प्लास्टिक के कचरे की सफाई पर होने वाला खर्च भी बहुत आता है। वो इसलिए कि आप पन्नी में सब्जी खरीद कर लाते हैं वह आसानी से फट तो जाती है लेकिन पूरी तरह खत्म नहीं होती। जब इस सिंगल यूज प्लास्टिक को जमीन के अंदर दबाकर नष्ट करने की कोशिश की जाती है तो यह नष्ट होने की बजाय छोटे'–छोटे टुकड़ों में बंट जाता है और विषैला रसायन पैदा कर भूमि की उर्वरक क्षमता को नुकसान पहुँचाता है। मिटटी में घुलमिल चुका यह विषैला रसायन जैसे ही खाद्य पदार्थो और पानी में पहुँचता है तो उससे मानव के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। आपने कई जगह पढ़ा होगा, देखा–सुना होगा कि कैंसर जैसी बीमारी फैलती जा रही है। आपको आश्चर्य तब होगा जब आप देखते होंगे कि बहुत सफाई से रहने वाले और कोई गलत आदत नहीं पालने वाले व्यक्ति कैंसर जैसी बीमारी की चपेट में आ जाते हैं। मन में सवाल आता होगा कि वह तंबाकू या गुटखा तो खाता नहीं था फिर ऐसा क्यों हो गया? तो इसका जवाब है वह विष जो हमारी धरती, हमारे पानी, हमारे खाद्य उत्पादों में धीरे–धीरे फैलता जा रहा है। इस जहर को खत्म करना है तो सिंगल यूज प्लास्टिक के विरोध में उठ खड़ा होना होगा। यह सही है कि शुरू में हमें दिक्कत होगी लेकिन अपनी आगे आने वाली पीढियों, जानवरों और प्रकृति से जुड़ी हर चीज की कुशलता के लिए यह जरूरी है कि सिंगल यूज प्लास्टिक को जड़ से खत्म किया जाये। इंग्लैंड के शोधकर्ताओं की ओर से किया गया एक अध्ययन बताता है कि एक इंसान हर साल औसतन 70 हजार माइक्रोप्लास्टिक का सेवन करता है।

सिंगल यूज प्लास्टिक से होने वाले और नुकसानों के बारे में आपको जानकारी दें उससे पहले यह जान लीजिए कि यह प्लास्टिक कार्सिनोजेनिक होता है और इसमें कैंसर कारक रसायन होते हैं। आपने बहुत बार देखा होगा कि सड़कों पर गाय, कुत्ते या अन्य छुटट्ा जानवर कचरा खा रहे होते हैं। इस कचरे में सिंगल यूज प्लास्टिक भी होता है जो कि इन जानवरों के पेट में जाने के बाद इकट्ठा होता रहता है क्योंकि यह पच नहीं सकता। कुछ दिनों बाद यह जानवर बीमार होने लगते हैं और तड़पते हुए दम तोड़ देते हैं। जमीन पर जानवरों के सिंगल यूज प्लास्टिक से परेशान होने तक ही बात सीमित नहीं रह गयी है बल्कि इससे समुद्री जीव भी प्रभावित हो रहे हैं। एक हालिया अध्ययन के मुताबिक प्लास्टिक का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा महासागरों में फैला हुआ है। यह अध्ययन रिपोर्ट कहती है कि सिर्फ एक प्रतिशत प्लास्टिक कचरा हमें समुद्र तल पर दिखाई देता है जबकि 99 फीसदी समुद्री जीवों के पेट में या समुद्र तल में जा चुका है। प्लास्टिक से नदियों, झीलों, तालाबों के जीवों को बहुत नुकसान होता है। एक और हालिया रिपोर्ट बताती है कि प्लास्टिक कि वजह से हर साल लगभग 11 लाख समुद्री पक्षियों और जानवरों की मौत होती है, यही नहीं 90 फीसदी पक्षियों और मछलियों के पेट में प्लास्टिक मिला है। दरअसल जब समुद्र के अंदर समुद्री जीव भोजन की तलाश में निकलते हैं तो अनजाने में प्लास्टिक का सेवन कर जाते हैं और यही एक बड़ा कारण है कि आज लगभग 700 समुद्री जीव लुप्त होने की कगार पर पहुँच गये हैं। यहाँ यह आंकड़ा गौर करने लायक है कि जितने प्लास्टिक का उपयोग होता है उसका करीब 91 फीसदी रिसाइकल नहीं होता यानि समस्या कितनी विकराल है यह अंदाजा आप खुद लगा सकते हैं।

सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ भारत ही उठ खड़ा हुआ है ऐसा नहीं है बल्कि दुनिया भर के देश इस बड़ी समस्या से निजात पाने के लिये रणनीतियां बनाने में जुट गये हैं। भारत सरकार जहाँ सभी राज्यों को यह निर्देश दे चुकी है कि सिंगल यूज प्लास्टिक के उत्पाद बनाने वाली इकाइयों को बंद कराया जाये वहीं अब जल्द ही सरकारी दफ्तरों में प्लास्टिक की बोतलों की बजाय मिटटी और धातु के बर्तन आपको दिखेंगे। केंद्र सरकार का पूरा प्रयास है कि प्लास्टिक थैलियों, प्लास्टिक की कटलरी और थर्माकॉल से बनी कटलरी का उत्पादन और बिक्री पूरी तरह बंद हो जाये। पर्यावरण मंत्रालय की ओर से जारी दिशा निर्देश में भी कहा गया है कि सरकारी और निजी कार्यालयों में कृत्रिम फूल, बैनर, फूल लगाने वाले पॉट और प्लास्टिक स्टेशनरी आइटम खासकर प्लास्टिक फोल्डर उपयोग में नहीं लिये जाएं। खाद्य नियामक FSSAI ने कहा है कि उसने प्लास्टिक का इस्तेमाल कम करने के लिए कई कदम उठाए हैं। इनमें होटलों को प्लास्टिक बोतलों के स्थान पर पेपर–सील वाली कांच की बोतलों का उपयोग करने को कहा गया है। नियामक ने प्लास्टिक के 'स्ट्रॉ', प्लेट, कटोरे और कटलरी के विकल्प के रूप में बांस के उत्पादों की अनुमति दी है। यही नहीं रेल यात्रियों को जल्दी ही 400 रेल्वे स्टेशनों पर चाय, लस्सी और खाने–पीने का सामान मिटटी से बने कुल्हड़, गिलास और दूसरे बर्तनों में मिलने लगेगा। इस कदम से जहां एक तरफ स्थानीय और पर्यावरण अनुकूल उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा, प्लास्टिक के उपयोग पर अंकुश लगेगा नहीं दूसरी तरफ कुम्हारों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। जहाँ तक बाजार में बिकने वाली पानी की बोतलों का सवाल है तो इनका कोई प्रभावी विकल्प फिलहाल नजर नहीं आ रहा है इसीलिए शायद यह बोतलें अभी कुछ समय दिखें। इन कंपनियों को विकल्प कब मिलेगा इसकी चिंता छोड़ कर आप खुद स्टील, तांबे की बोतलों को रखना शुरू कर दीजिये। हालांकि जब हम सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ अभियान आगे बढ़ा रहे हैं तो हमें व्यापारियों की चिता पर भी गौर कर लेना चाहिए। खुदरा कारोबारियों ने बड़ी कंपनियों को एकल इस्तेमाल के प्लास्टिक का उपयोग करने से रोकने के लिये स्पष्ट दिशा निर्देश की भी मांग की है। इन कारोबारियों का कहना है कि बड़े विनिर्माताओं द्वारा इस तरह के प्लास्टिक में पैक सामानों को बेचने के लिये कारोबारी बाध्य हैं। इसी तरह एक बार उपयोग में आने वाले प्लास्टिक के उपयोग के खिलाफ अब भारत ने जो खड़ा होने की बात ठानी है उसमें सभी भारतीयों को सहयोग करना चाहिए ताकि हम एक बार फिर विश्व के लिए अनुकरणीय बन सकें।

Important Issues in Abolition of Capital Punishment in India

Dr. V.P.S. Gaur
Professor, Political Science

All punishments including capital punishments are based on two assumptions

1. A person who has done wrong should suffer for it
2. Inflicting punishment on wrongdoers discourage others from doing wrong.

As the humanitarian ideas gained momentum, the efficacy of capital punishment has come under serious criticism. The amnesty international view capital punishment as cruel, inhuman and degrading as it violates an individual's right to life and it can be used as a repressive major against those who are opposed to establish order.

Those in favor of Capital punishment argue that if a person takes the life of another human being, his life should also be taken away. In keeping this view, the feelings of vengeance of the relative of the victim are assuaged if the accused is put to eternal sleep. But in reality what benefits do the relative of victim derive except the satisfaction that the wrong doer has also met with the same fate. On the contrary, if the accused is imprisoned for life, he will have time to repent and atone for his heinous act. Nowadays, the treatment and training program in prison have been considerably improved in time with the modern trends in correction. The prisoner can learn a trade in accordance with his aptitude and earn remuneration during his incarceration. Thus he will be able to pay for his maintenance in the prison & contribute towards the support of his dependents and if necessary, make payments to the relatives of victim of his crime.

It was also argued that human judgment cannot be infallible. Conviction of the innocent does occur and the death penalty leaves no chance for rectification later. What is worse, in the legal battle is that the wealthy and resourceful often escape the punishment. It is the ignorant and unfortunate without power who suffer from greater exposure to the death penalty. In respect of the death penalty, the law is applied in the uneven way.

1. Different courts apply different standard of severity.
2. The application of this law is influenced by economic and sociological considerations, offenders lacking financial means and consequently incapable of presenting their defense are in greater danger of being sentenced to death.

The advocates of capital punishment hold that sentence has a great deterrent effect as it dissuades others from committing heinous crime. It is submitted that the object of punishment is to ensure that the offender should realize his guilt, repent and pay for his crime. But the offender who is to meet the gallows does not get a chance to pay his crime. In so far as the object of capital punishment is the effective protection of society, the life imprisonment is sufficient for their purpose.

It is however, submitted that the Criminal Justice System in India accords the highest priority to the dignity and worth of human life in spite of provision for death penalty contained in S.121,132,194,302,305,307 and 396 IPC. In this context, following points deserve consideration:

1. The legislative policy for the death penalty has undergone a basic change. Sec. 367(5) Cr PC (1898) provided that a person convicted for murder was to be sentenced to death as a normal rule and if a lesser sentence was intended to be imposed , reasons were to be recorded in writing. However, the new Code of Criminal Procedure 1973 provides for all such offences life imprisonment as a rule and death sentence as an exception. A new change in legislative policy has occurred The Cr PC 1973 now provides "When the conviction is for an offence punishable with death or in the alternative with imprisonment for a term of years; the judgment shall state the reasons for the sentence awarded and in case of a sentence of death, the special reasons for such sentence"
2. Under Sec. 366(1) the trial court passing a sentence of death has to submit the proceedings to the High Court for confirmation of death sentence.
3. Where the high Court has on appeal reversed an order of an acquittal and convicted an accused and sentenced him to death, such person shall have right to appeal to Supreme Court.
4. Article 72 of Constitution empowers the President to grant pardon or to suspend, remit or commute sentences including that of death.

In view of these safeguards as operative in the Indian Law, there is hardly any chance of miscarriage of Justice. As a matter of fact, death sentence is now inflicted in the rarest of rare cases. In Macchi Singh v. Punjab; Supreme Court formulated broad guidelines for determining the "rarest of the rare cases".

1. Whether there is something uncommon about the crime which renders life imprisonment inadequate.
2. Whether the circumstances of the crime are such that there is no alternative but to impose the death sentence even after according maximum weightage to mitigating circumstances which speak in favor of the accused.

To conclude the issue whether the death penalty be retained or abolished had to be decided in relation to the hard realities of time and the socio, culture conditions of the society. Keeping in mind, the conditions prevailing at present in our country, the variety of social upbringing of its inhabitants, to the disparity in the level of mortality and education and to the paramount need for maintaining law and order in such a vast country at the present juncture, India cannot risk the experiment of total abolition of capital punishment. There may be forceful arguments against the retention of this punishment, but the fact remains that it has a deterrent value and it will be unwise to arrive at hasty decision in favor of the total abolition of this extreme penalty at the present situation of growing lawlessness, drug trafficking, violence against women and terrorism in India.

Education is the key to women empowerment

Dr. Meenakshi T. Shroti
Assistant Professor, Political Science

"Education is the foundation for a vibrant democracy in which informed citizens exercise their franchise to support the internal growth of the nation and its constructive role in the world community. Education is the foundation for access to the benefits of the information revolution that is opening up vistas on the whole world." Thus education forms the basis for a better quality of life, for national development as well as increased empowerment for both men and women.

"Educate a man and you educate one person, educate a women and you educate an entire family" was the maxim which governed efforts to improve the literacy status of women. Various committees and commissions appointed from time to time to assess the status of education, particularly women's education stressed upon the need to close gender gaps in education. The National Committee on Women's Education (1959) had recommended "a bold and determined effort be made to close the existing gap between the education of men and women in as short a time as possible and the funds required for the purpose should be considered to be the first charge on the sums set aside for the development of education".

The National Policy for Education, 1986 laid emphasis on education for women's equality. Education of girls also was a priority area for the national perspective plan for women (1988).

The constitution also enacted 86th Amendment Act, 2002 which guaranteed the fundamental right of education.

Women's education, assumed significance at the international level and its importance for women's empowerment was emphasized at various international forum. Thus, article 28 of the Universal Declaration of Human Rights focused on the Right to Education.

The Government of India has also made concerted efforts at eradicating the gender gap in literacy rates. A number of innovative schemes have been launched to provide infrastructure to schools and to retain the children, particularly girl children, in schools through various incentives. These include operation blackboard, Sarva Shiksha Abhiyan, Mahila Samakhya,Open Schools etc.

Government of India introduced the New Education Policy 2020, where there is a provision for equitable access to quality education for all students. There is also assurance that some steps would be taken by government to bridge the gender gap. The government has also planned to provide vocational and technical education to women. For women this is a crucial step towards becoming empowered and independent.

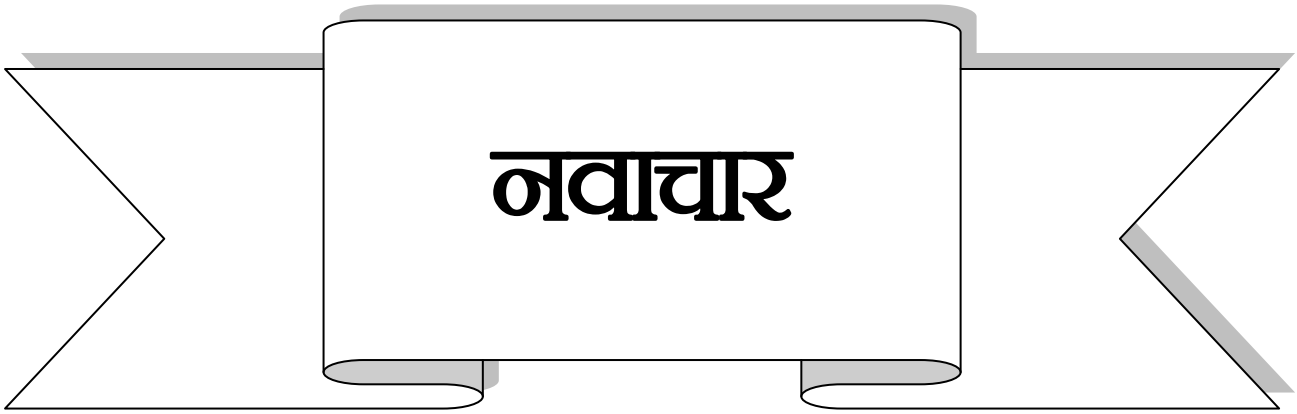
नवाचार

''छत पर बागवानी''
(न्यूट्रीशनल ऑर्गेनिक किचन गार्डन)

डॉ. एस.के.मल्होत्रा
सह–प्राध्यापक, गणित

आज के वर्तमान समय में जो सब्जियां हम खा रहे हैं, वो कैसी हैं, जरा हम इस पर विचार करें, कि बाजार में मिलने वाली सब्जियों में कितने पोषक तत्व मौजूद हैं? सब्जियों में कौन सा पानी दिया जा रहा है, कहीं नाले का पानी तो नहीं है? यदि हां, तो हम स्वयं विचार करें कि नाले के पानी से पैदा होने वाली सब्जियों में कितने पोषक तत्व होंगे, कितने खनिज लवण होंगे? अर्थात् नाले के पानी से पैदा होने वाली सब्जियां देखने में अच्छी लग सकती हैं, लेकिन मानव स्वास्थ्य पर ऐसी सब्जियों का कितना बुरा असर होता है, जरा हम सोचें और विचार करें, कि आज के भौतिकवादी युग में, जिसमें मानव को अपने स्वास्थ्य की देखरेख के लिये बहुत अधिक समय नहीं है, ऐसे में वह अगर इस प्रकार की सब्जियों का दैनिक जीवन में उपयोग करेगा, तो निश्चित ही केंसर जैसी बीमारियों को न्यौता दे रहे हैं, फिर हम क्या करें, क्या सब्जियां खाना छोड़ दें? नहीं, संभव नहीं हैं।

दालें–सब्जियां हमारे जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं, उनके बिना अच्छे भोजन की कल्पना ही नहीं की जा सकती, फिर हम ऐसा क्या कर सकते हैं, कि हमें पोषक तत्वों से भरपूर और स्वास्थ्यवर्धक सब्जियां प्राप्त हो सकें। आज के वर्तमान समय की आवश्यकता को देखते हुये क्यों न हम अपने घर की छत/टेरिस पर किचिन गार्डन लगायें और ऑर्गेनिक सब्जियां प्राप्त करें और अपने–अपने परिवार के स्वास्थ्य का ख्याल रख सकें? हम स्वस्थ्य रहेंगे तो परिवार स्वस्थ रहेगा, परिवार स्वस्थ रहेगा तो हमारा समाज स्वस्थ रहेगा और समाज स्वस्थ रहेगा तो यह देश स्वस्थ रहेगा, तो आओ हम सब मिलकर अपने–अपने घरों में ऑर्गेनिक किचिन गार्डन लगायें।

'' ऑर्गेनिक किचिन गार्डन कैसे लगायें''

घर की छत पर, उपलब्ध स्थान के अनुसार गमलों/ग्रो–बैग में सब्जियां उगा सकते हैं। ग्रो–बैग अलग–अलग साइज के बाजार में उपलब्ध हैं जैसे– 1'x1'x1', 3'x3'x1', 3'x6'x1', 4'x6'x1' आदि (लंबाई x चौड़ाई x उंचाई)। इन ग्रो–बैग को साइज के अनुसार, लोहे के स्टैण्ड तैयार करवा कर, उन पर रख सकते हैं, इससे घर की छत पर पानी की सीपेज की समस्या भी नहीं होगी। इन ग्रो–बैग में सबसे पहले खाली कच्चे नारियल की परत, खाद के

रूप में, गोबर की खाद या वर्मी कम्पोस्ट खाद की परत, फिर उसके पश्चात् मिटटी की परत से इन ग्रो–बैग को तैयार करना हैं। ग्रो–बैग तैयार होने के पश्चात् सीजन के अनुसार फल/सब्जियों का बीज रोपण/पौध रोपण किया जाना है। सीजन के अनुसार पालक, मैथी, धनियां, बरबटी, लौकी, गिल्की, कद्दू, भिण्डी, लाल भाजी, खीरा, मिर्ची, बैगन, सेम, अरबी, टमाटर आदि सब्जियां को बोया जा सकता है। समय–समय पर सब्जियों में पानी देना है। खाद के रूप में गोबर खाद/वर्मी कम्पोस्ट खाद को एक बड़े से ड्रम में घोलकर रखना है, उसमें से ही समय–समय पर पेड़–पौधों को खाद देना है। पेड़–पौधे जैसे–जैसे बड़े होंगे, ग्रो–बैग में पेड़–पौधों के बीच निदाई एवं गुडाई भी करनी है, जो पत्ते पीले पड़ जाते है, उन्हें हटाना है। यदि पेड़–पौधों में कीड़े लग जाते हैं, तो नीम तेल (सस्पेंडिड) 3 मिली/प्रति लीटर के हिसाब से घोल का छिड़काव भी करना है।

किचिन वेस्ट (घर में उपयोग आने वाली सब्जियों/फलों के छिलके) को भी खाद के रूप में उपयोग कर सकते हैं। सब्जियों/फलों के छिलकों को, गमले/ग्रोबेग में मिटटी में दबा देना है, जो वह कुछ समय पश्चात् स्वमेव खाद बन जायेगी, इससे हमें दो फायदे होंगे कि, किचिन वेस्ट, घर के बाहर नहीं फेंकना है और वह हमारे पौधो के लिए खाद का कार्य भी करेगी।

इस तरह जो फसल प्राप्त होगी, वह पूर्ण रूप से आर्गेनिक होगी एवं स्वास्थ्य के लिये बहुत लाभदायक होगी।

आइए हम सभी ऊपर दी गई विधि अनुसार अपने–अपने घरों की छतों पर आर्गेनिक किचिन गार्डन लगायें और ऑर्गेनिक सब्जियां/फल प्राप्त करें और अपने साथ–साथ अपने परिवार की भी सेहत बनायें।

ऑर्गेनिक किचिन गार्डन लगाने से हमारे पर्यावरण पर भी विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा। घर की छत पर किचिन गार्डन लगाने से हमारे घरो पर विभिन्न प्रकार के पक्षी/चिड़िया/तितलियों का आगमन होता है। पक्षियों का कलरव हमेशा सुनाई देता रहेगा, रंग बिरंगीं तितलियां, भी दिखाई देती रहेगीं, छत पर हमेशा हरियाली रहेगी, यह हरियाली हमें मानसिक शांति भी प्रदान करेगी, इससे शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साभ हमें मानसिक स्वास्थ्य लाभ भी प्राप्त हो सकेगा।

''सांसें हो रही हैं कम.....प्रकृति को मिलकर बचायें हम''

एक भारत-श्रेष्ठ भारत
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की अभिनव पहल)
अंतरराज्यीय शिक्षक-विद्यार्थी आदान - प्रदान कार्यक्रम
प्रतिभागी राज्य - असम एवं मध्यप्रदेश

Bongaigaon College

व्वदहंपहंवद . 783380

Appreciation Letter

To,

The Principal

Dr. Shyama Prasad Mukherjee College of Science & Commerce Bhopal.

For the remarkable contribution to theproject "Ek Bharat Shrestha Bharat"

Respected Dr. Saroj Srivastava,

The undersigned, on behalf of Bongaigaon College fraternity, would like to offer heart-felt appreciation and congratulation on the dynamism you exemplified during the study tour undertaken by our college with a mission towards academic and socio-cultural exchanges involving students of two different regions under "Ek Bharat Shrestha Bharat" mission. You have been an amazing team leader, who with an exemplary enterprise is capable of involving the co-workers for a well-oiled teamwork towards all the creative works and ideas.

Your initiative to the project has gone a long way in a heightened output for the students that are bound to increase and diversify with an increased mobility of their knowledge base.

We cordially acknowledge your initiative in providing us the platform for successful study tour with a mission of integrating and confronting values and knowledge to a shared experience for the student community at large. .

With best regards,

(Dr. Hitesh Chandra Das)
Principal,
Bongaigaon College

BONGAIGAON – 783380 (ASSAM); *www.bongaigaoncollege.ac.in*
 - 03664 230310; FAX: 03664 230310; E-MAIL – principalbgncol@gmail.com

D A Y O N E : 18TH J A N U A R Y 2 02 0:

Warm reception in Balmi Sansthan, Bhopal by the Coordinator, IQAC from Govt. Dr. shyama Prasad Mukherjee College of Science and Commerce at around 9-30 am, followed by inaugural programme in the college with cultural blending:

राज्य - असम एवं मध्यप्रदेश
18 से 21 जनवरी, 2020
- आयोजक -
एक भारत-श्रेष्ठ भारत

D A Y T W O – 19TH J A N U A R Y 2 02 0:

Moved to the town for scheduled visit to State Museum and Tribal Museum located in Bhopal from 10-00 am to 1-00 pm. After taking lunch in Balmi Sansthan, the entire team moved to Sanchi in Raisem District of Madhya Pradesh to witness the Buddha Stupa, the popular heritage of ancient India.

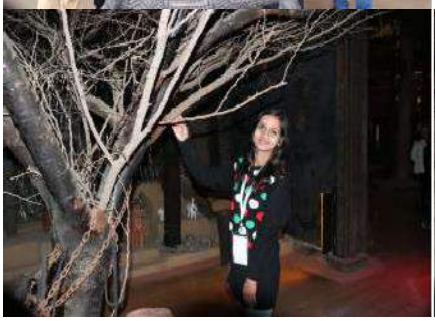

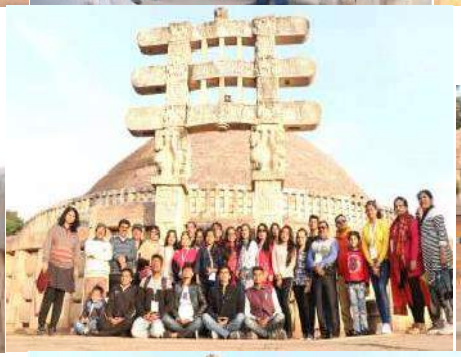

DAY THREE: 20TH JANUARY 2020:

We availed the opportunity of joining "Jila Yuva Sanmelan Ewam Sanmaan Samaroh" organized by Nehru Yuva Kendra, Bhopal in the Auditorium Hall of State Museum from 10-30 am on the 3rd day of our scheduled programme. Mrs. Anusuiya Uike, Hon'ble Governor of Chhattisgarh graced the occasion along with the seating MLA and other dignitaries. We could pay our honour to the Governor and all other present there and also could perform Bihu, the traditional dance. After lunch break, we visited Bidhan Sabha Bhawan could collect relevant information from Mr. Sanjay Sharma, the Protocol Officer there. Then, we visited Big Lake of Bhopal for site seeing and also witnessed Shaurjya Smarak before returning back to the guest house.

20/01/2020 16:35

DAY FOUR: 21ST JANUARY 2020:

The fourth day began with valedictory programme organized in Sant Hirdaram Girls' College, Bairagarh, Bhopal under the under the guidance and hospitality of Dr. Charanjit Kaur, Principal, where the joint coordinator, Dr. Malhotra addressed the gathering. A good number of cutltural programmes were arranged by the students and participants. After concluding ceremony, we visited Bhojpur Shiva Temple, followed by a visit to the Raj Bhawan to meet Shri Lal ji Tandan, Hon'ble Governor of Madhya Pradesh.

असम के युवाओं ने समझा एमपी का कल्चर

भोपाल की वादियां स्टूडेंट्स को आई पसंद

सच प्रतिनिधि || भोपाल

मप्र की संस्कृति के बारे में लोगों को बताने के लिए हर साल यूथ एक्सचेंज कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, जिसका आयोजन 18 से किया गया। इस चार दिवसीय कार्यक्रम में असम के 22 स्टूडेंट्स ने सहभागिता की। इसमें उनको अलग-अलग कार्यक्रम के माध्यम से मप्र की सांस्कृति और यहां कि विरासतों से रूबरू करवाया गया। शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय बेनजीर की संगठन व्यवस्था में चल रहे एक भारत-श्रेष्ठ भारत यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के दौरान असम के प्रतिभागियों को बोद्ध जगत की तीर्थ स्थली और यूनेस्को की सूची में विश्व धरोहर सांची, मानव संग्रहालय, शौर्य स्मारक, मप्र विधानसभा भवन का भ्रमण कराया गया। असम के युवाओं को इसके बारे में विस्तृत जानकारी भी दी गई। सांची एवं मानव संग्रहालय की स्थापत्य कला को देखकर सभी के चेहरे खिल उठे। भ्रमण में 22 शिक्षक, विधार्थियों सहित दल प्रभारी डॉ. टीके बहादुर, समन्वयक डॉ. सुधांशु द्विवेदी और डॉ. एसके मल्होत्रा ने सहभागिता की और इस यादकार पल को अपनी सेल्फी के माध्यम से स्मृति में कैद किया। इस दौरान कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। कार्यक्रम के अंतिम दिन प्रतिभागियों ने राजभवन में राज्यपाल लालाजी टंडन से मुलाकात की और अपने अनुभवों को साझा किया।

हमें मप्र आकर अच्छा लगा हमने यहां भोजपुर, मानव संग्रहालय, जनजातीय संग्रहालय, सांची का भ्रमण किया। यहां की सुंदरता और स्वच्छता काबिले तारीफ है।

श्रेयशी, छात्रा

एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत असम राज्य के प्रतिभागियों ने मप्र की संस्कृति को समझा एवं भाषा का आदान-प्रदान किया, इस तरह के कार्यक्रम युवाओं में एकता का भाव विकसित करते हैं।

डॉ. सरोज श्रीवास्तव, प्राचार्य

भोपाल के दौरे पर गया दल कार्यक्रम में असम की विशिष्टता का बना गवाह

बंगाईगांव, 21 जनवरी (एसं)। मध्यप्रदेश के भोपाल के दौरे पर गए 22 सदस्यीय दल वहां के डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय में शनिवार से आयोजित एक भारत-श्रेष्ठ भारत अंतर राज्यीय शिक्षक-विद्यार्थी कार्यक्रम में शामिल हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. शैलेन्द्र शुक्ल- ने कहा कि असम भारत का सबसे सुंदर और लोक नृत्यों में विशेष स्थान रखता है। विशिष्ट अतिथि डॉ. सुरेंद्र शुक्ला ने कहा कि भारत में विविधता होने के बाद भी कहीं ना कहीं हम दिल से जुड़े हुए हैं। विश्व में कई संस्कृतियों का पतन स्वतः ही हो गया है, जबकि हमारी हस्ती को कोई डिगा नहीं पाया है। इसकी वजह हमारा सदाचार समन्वय और एक दूसरे में सौहार्द की भावना है। हम पूर्वोत्तर में रहे या दक्षिण में रहे मगर हमारा चिंतन राष्ट्र के लिए हो। दल प्रभारी डॉ. टीके बहादुर ने कहा कि हम पूर्वोत्तर से आए हैं और पूर्वोत्तर भारत का अभिन्न अंग है। असम की प्रतिभागी श्रेयसी साहा ने कहा कि मध्य प्रदेश में आकर ऐसा लगा कि हम देश के दिल में आए हैं और इसीलिए शायद यह हृदय प्रदेश है। दोनों प्रदेशों की संस्कृति को दर्शाते हुए छात्रों बोहू, गोंडी, घूमर, भांगड़ा किया। इसी कार्यक्रम में बंगाईगांव की महिमा जैन पांड्या ने वहाँ बिहू नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी जो की कार्यक्रम का आकर्षण का केंद्र बनी। उन्होंने अपनी प्रस्तुति के बाद कहा कि यह नृत्य भारत के असम राज्य का लोक नृत्य है जो बिहु त्योहार से संबंधित है। यह खुशी का नृत्य युवा पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा किया जाता है और इसकी विशेषता फुर्तीली नृत्य मुद्राएँ तथा हाथों की तीव्र गति है। नर्तक पारंपरिक रंगीन असमिया परिधान पहनते हैं। महिला ने इस मौके पर कहा कि देश के नागरिकों को अपनी संस्कृति को समझने के लिए समय निकालना चाहिए, क्योंकि दुनिया में भारत आज जो भी है, वह अपनी परंपराओं और संस्कृति की वजह से ही है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धुन से गूंज उठा। कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से आए ख्याति प्राप्त कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति से सबको झूमने पर मजबूर कर दिया। वहीं दिगम्बर जैन समाज के रोहित छाबड़ा ने बताया कि पूरे बंगाईगांव में खुशी की लहर है कि उनकी बेटी महिमा जैन पांड्या व उसके संघस्थ साथियों ने बेहतरीन प्रदर्शन से आसाम की संस्कृति को पहचान स्थापित कर बंगाईगांव का भी नाम रोशन किया।

एक भारत श्रेष्ठ भारत अभियान

युवाओं के बीच संवाद सत्र

संत हिरदाराम नगर. संत हिरदाराम कन्या महाविद्यालय की रासेयो इकाई एवं शा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय की रासेयो इकाई के संयुक्त तत्वाधान में भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की योजना 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत भारत के पूर्वी राज्य असम से 22 सदस्यीय दल के साथ विद्यार्थियों का संवाद और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. सरोज श्रीवास्तव, डॉ. सुधांशु धर द्विवेदी, डॉ. एसके मल्होत्रा, डॉ. राजेश श्रीवास्तव, राकेश सक्सेना, डॉ. नीतू प्रिया, तरुण बहादुर, एसी साधवानी, डॉ. चरनजीत कौर, मीनाक्षी श्रीवास्तव उपस्थित थीं।

पत्रिका Wed, 22 January 2020
epaper.patrika.com/c/48220068

असम के युवाओं ने किया सांची भ्रमण

भोपाल(नरि)। शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय (पुराना वेनजीर) की संगठन व्यवस्था में चल रहे एक भारत- श्रेष्ठ भारत यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के दौरान असम के प्रतिभागियों को बौद्ध जगत की तीर्थ स्थली एवं यूनेस्को की सूची में विश्व धरोहर सांची, मानव संग्रहालय, शौर्य स्मारक, मप्र विधानसभा भवन का भ्रमण कराया गया, असम के युवाओं को इसके बारे में विस्तृत जानकारी भी दी गई। सांची एवं मानव संग्रहालय की स्थापत्य कला को देखकर सभी के चेहरे खिल उठे। भ्रमण मे 22 शिक्षक-विद्यार्थियों सहित दल प्रभारी डॉ. टीके बहादुर, समन्वयक डॉ. सुधांशु द्विवेदी, डॉ. एसके मल्होत्रा ने सहभागिता की और इस यादगार पल को स्मृति में कैद किया।

सांची की स्थापत्य कला से रूबरू हुए असम के युवा

भोपाल दैनिक जयहिन्द न्यूज.
शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय (वेनजीर) की संगठन व्यवस्था में चल रहे एक भारत- श्रेष्ठ भारत यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के दौरान असम के प्रतिभागियों को बौद्ध जगत की तीर्थ स्थली एवं यूनेस्को की सूची में विश्व धरोहर सांची,मानव संग्रहालय, शौर्य स्मारक,मप्र विधानसभा भवन का भ्रमण कराया गया, असम के युवाओं को इसके बारे में विस्तृत जानकारी भी दी गई, सांची एवं मानव संग्रहालय की स्थापत्य कला को देखकर सभी के चेहरे खिल उठे। भ्रमण मे 22 शिक्षक- विद्यार्थियों सहित दल प्रभारी डॉ टीके बहादुर, समन्वयक डॉ सुधांशु द्विवेदी, डॉ एसके मल्होत्रा ने सहभागिता की और इस यादगार पल को अपनी सेल्फी के माध्यम से स्मृति में कैद किया।

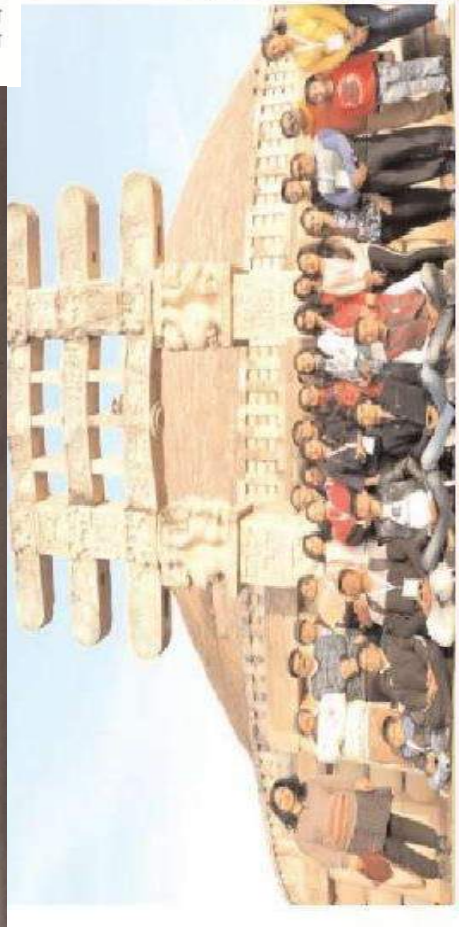

बंगाईगांव में एक भारत-श्रेष्ठ भारत अंतर्राज्यिक कार्यक्रम आयोजित

बंगाईगांव, 21 जनवरी (ख.सं)। मध्यप्रदेश के भोपाल में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय में गत 18 से एक भारत-श्रेष्ठ भारत अंतर राज्यिक शिक्षक-विद्यार्थी कार्यक्रम शुरू किया गया। इसमें असम का 22 सदस्यीय दल मध्य प्रदेश भ्रमण पर गया है। मुख्य अतिथि डॉ. धीरेंद्र शुक्ल ने कहा कि असम भारत का सबसे सुंदर और लोक नृत्यों में विशेष स्थान रखता है। विशिष्ट अतिथि डॉ. सुरेंद्र शुक्ला ने कहा कि भारत में विविधता होने के बाद भी कहीं न कहीं हम दिल से जुड़े हुए हैं। विश्व में कई संस्कृतियों का पतन स्वतः ही हो गया है, जबकि हमारी हस्ती को कोई डिगा नहीं पाया है। इसकी वजह हमारा सदाचार समन्वय और एक दूसरे में सौहार्द की भावना है। हम पूर्वोत्तर में रहे या दक्षिण में रहे, मगर हमारा चिंतन राष्ट्र के लिए हो। दल प्रभारी डॉ. टीके बहादुर ने कहा कि हम पूर्वोत्तर से आए हैं और पूर्वोत्तर भारत का अभिन्न अंग है। असम की प्रतिभागी श्रेयसी साहा ने कहा कि मध्य प्रदेश में आकर ऐसा लगा कि हम देश के दिल में आए हैं और इसलिए शायद यह हृदय प्रदेश है। दोनों प्रदेशों की संस्कृति को दर्शाते हुए छात्रों ने बिहू, गोंडी, घूमर, भांगड़ा नृत्य प्रस्तुत किया। इसी कार्यक्रम में बंगाईगांव की महिमा जैन पांडया ने वहां बिहू नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी जो कि कार्यक्रम का आकर्षण का केंद्र रहा। उन्होंने अपनी प्रस्तुति के बाद कहा कि यह नृत्य भारत के असम राज्य का लोक नृत्य है जो बिहू त्योहार से संबंधित है। यह खुशी का नृत्य युवा पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा किया जाता है और इसकी विशेषता फुर्तीली नृत्य मुद्राएं तथा हाथों की तीव्र गति है। नर्तक पारंपरिक रंगीन असमिया परिधान पहनते हैं। महिला ने इस मौके पर कहा कि देश के नागरिकों को अपनी संस्कृति को समझने के लिए समय निकालना चाहिए, क्योंकि दुनिया में भारत आज जो भी है, वह अपनी परंपराओं और संस्कृति की वजह से ही है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धुन से गूंज उठा।

आकाशवाणी म.प्र. भोपाल पर महाविद्यालय के कार्यक्रम का प्रसारण

All India Radio Bhopal- आकाशवाणी भोपाल में कार्यक्रम **''नमस्कार भोपाल''** में **दिनांक 18.01.2020** को **सुबह 07.15** पर **''एक भारत श्रेष्ठ भारत''** के अंतर्गत **अंतर राज्यीय विद्यार्थी–शिक्षक आदान–प्रदान कार्यक्रम** में **कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी** एवं **सह–समन्वयक डॉ. एस.के.मल्होत्रा** की वार्ता का आकाशवाणी पर प्रसारण किया गया।

भारत सरकार के कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक निर्णायक की भूमिका में:

FIT INDIA कार्यक्रम के तहत गृह मंत्रालय, भारत सरकार, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से नेहरू युवा केन्द्र संगठन, म.प्र. भोपाल द्वारा आयोजित किये गये **"12वां आदिवासी युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम"** में महाविद्यालय के **प्राध्यापक, डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी एवं डॉ. एस.के.मल्होत्रा,** द्वारा **निर्णायक मंडल** की भूमिका का निर्वहन किया गया।

महाविद्यालय की झलकियां

ANCHOR डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव

रैंप पर जलवा बिखेर श्रुति और सुमित ने जीता खिताब

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

भोपाल ◆ डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय में चल रहे वार्षिकोत्सव 'अनुपम' में शुक्रवार को विभिन्न आयोजन हुए। समारोह की शुरुआत में पुलवामा में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर मिस्टर अनुपम तथा मिस अनुपमा प्रतियोगिता आयोजित की गई। जहां रैंपवॉक में मिक्स फ्यूजन पर करीब 30 प्रतिभागियों ने दो घंटे तक रैंपवॉक कर अपना जादू दिखाया। कई राउंड से गुजरने के बाद प्रतिभागियों का चयन निर्णायकों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में रैंप वॉक और अन्य प्रतियोगिता में कड़े मुकाबले के बाद मिस अनुपमा की विनर श्रुति साहू बनीं। वहीं, फर्स्ट रनर अप समरीन कुरैशी, सेकंड रनर अप वेदिका मालवीय बनीं। पुरुष वर्ग की प्रतियोगिता में सुमित बागरी मिस्टर अनुपम का खिताब जीते। वहीं, फर्स्ट रनर अप हरीओम यादव, सेकंड रनर अप नीतेश

150 विजेता हुए सम्मानित

स्नेह मिलन समारोह के अंतर्गत आखिरी दिन नाटक, नृत्य, स्पोर्ट्स समेत सिंगिंग और डांसिंग में बेस्ट परफार्मेंस देने वाले करीब 150 विजेता प्रतिभागियों को सम्मानि

जलवा दिखाने वाली श्रुति और सुमित को क्राउन पहनाकर मिस और मिस्टर का खिताब दिया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के विधायक आरिफ मसूद

युवाओं ने निभाई भागीदारी शिविर में 40 यूनिट रक्तदान

भोपाल. शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य स्नाकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत शुक्रवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आयोजन रेड रिबिन क्लब के तत्वाधान में रेडक्रास सोसायटी की ओर से किया गया। शिविर में 40 यूनिट रक्तदान किया गया। शिविर में स्वास्थ्य परीक्षण, रक्त परीक्षण, एवं एचआईवी पर परिचर्चा भी हुई। इसमें क्लब के अध्यक्ष रवि चौहान, आशीष कौरव, विशाल, अनस खान, शुभांशु, विकास आशीष, तीर्थ, सचिन आदि युवाओं ने रक्तदान किया।

अनिल, मंयक और साहिल को मिली स्वर्णिम सफलता

भोपाल ◆ पुराने बेनजीर कॉलेज की ओर से टीटी नगर स्टेडियम में आयोजित जिला स्तरीय पुरुष जूडो प्रतियोगिता मे सोमवार को अनिल यादव, भरत मालवीय, मंयक, साहिल ने अपने-अपने भारवर्ग में स्वर्ण पदक जीते।

56 केजी वेट में अनिल यादव, 60 केजी में भरत मालवीय, 66 केजी में में मयक, 73 में साहिल पांडेय, 81 केजी में अभिषेक मीणा, 90 में विभु शुक्ला, 100 केजी में मंथन और युवराज सिंह ठाकुर ने पहला स्थान हासिल कर स्वर्ण पदक जीते।

इस प्रदर्शन के आधार पर इन खिलाड़ियों का चयन जिले की टीम में हुआ जो संभागीय प्रतियोगिता में भाग लेंगे। जिसका आयोजन बीयू में 8 नवंबर को किया जाएगा।

शिविर में ग्रामीणों को बताया साफ-सफाई का महत्व

सिटी रिपोर्टर। शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय (पुराना बेनजीर) की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की ओर से शिविर का आयोजन किया गया। इस एनएसएस कैंप का उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सरोज श्रीवास्तव ने किया।

शिविर में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. राकेश सक्सेना, डॉ. मुकेश नापित और महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी, डॉ. राजेश श्रीवास्तव सहित अन्य मौजूद रहे। एन एस इकाई के इस शिविर का आयोजन ग्राम बेरखेड़ी रातीबड़ में किया गया है, जिसके तहत स्वयंसेवकों ने खेल मैदान की साफ-सफाई और मरम्मत कार्य किया। वहीं गांव भ्रमण के दौरान ग्रामीणों को स्वच्छता, स्वास्थ्य और अंकल्याणकारी योजनाओं के बारे बताया। कैंप का नेतृत्व दल प्रभारी रवि चौहान, अयान खान और आशीष कौरव कर रहे हैं।

एकल नृत्य में यशी, समूह में आकांक्षा-संजय विनर

ओल्ड बेनजीर कॉलेज के वार्षिकोत्सव अनुपम में एकल-समूह नृत्य व पारंपरिक वेशभूषा प्रतियोगिता

एनुअल फंक्शन

सिटी रिपोर्टर . भोपाल

शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य (ओल्ड बेनजीर) महाविद्यालय के वार्षिक स्नेह सम्मेलन 2019-20 अनुपम में गुरुवार को विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। वार्षिक उत्सव के दूसरे दिन एकल नृत्य प्रतियोगिता में 16 प्रतिभागियों ने प्रस्तुति दी। इसमें उन्होंने फ्यूजन डांस, इंडियन और वेस्टर्न डांस के साथ कई थीम आधारित डांस की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में समूह नृत्य की प्रस्तुति हुई, जिसमें प्रतिभागियों के 6 से ज्यादा समूहों ने

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव का शुभारंभ

भोपाल। शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय भोपा वार्षिकोत्सव 2019-20 अनुपम का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. सरोज श्रीवास्तव द्वारा किया वार्षिकोत्सव के तहत आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी छात्र संघ प्रभारी डॉ. श्रीवास्तव द्वारा दी

जिसमें सलाद डेकोरे मेंहदी प्रतियोगिता, फ डेकोरेशन, रंगोली, न एकल नृत्य, समूह एकल गायन, समूह छात्र अंताक्षरी, पारम वेशभूषा, मिस्टर अनु मिस अनुपम विधायें आयोजित की जायेगी। कार्यक्रम का संचालन, डॉ. एसके मल्होत्र किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक एवं छात्र-छात्रायें उपस्थि

अंताक्षरी, नृत्य और संगी से बिखेरे विविध रंग...

बेनजीर कॉलेज में वार्षिकोत्सव 'अनुपम' के अंतर्गत प्रतियोगि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय बेनजीर कॉलेज में चल रहे, वार्षिक स्नेह सम्मेलन 2019-20 'अनुपम' अंतर्गत दूसरे दिन विभिन्न प्रतियोगिताए आयोजित की गई। जिसके अंतर्गत एकल नृत्य प्रतियोगिता, अंताक्षरी के साथ ही ग्रुप डांस परफार्मेंस का आयोजन किया गया।

शिवजी का रूप धारण कर प्रतिभागियों ने दी प्रस्तुति

एकल नृत्य प्रतियोगिता में 16 प्रतिभागियों ने प्रस्तुति दी, जिसमें यशी राय ने फ्यूजन डांस प्रस्तुत कर प्रथम स्थान प्राप्त किया साथ ही एकल नृत्य प्रतियोगिता में शिवजी का रूप धारण कर प्रतिभागियों ने आकर्षक प्रस्तुति दी, एकल नृत्य ने द्वितीय स्थान पर स्नेहा नामदेव रही। समूह नृत्य में आकांक्षा तथा संजय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अंताक्षरी में रहा कांटे का मुकाबला छात्राओं के बीच

पिछली शामों से अंताक्षरी का प्रारंभ हुआ। इस प्रतियोगिता में छात्राओं के बीच कांटे का मुकाबला देखने व सुनने को मिला। एकल गायन प्रतियोगिता में छात्रों द्वारा क्षेत्रीय भाषा में गीत प्रस्तुत किए. वेश-भूषा प्रतियोगिता में 25 प्रतिभागियों द्वारा अलग-अलग प्रदेशों की संस्कृति को प्रस्तुत किया एवं प्रतिभागियों द्वारा पारंपरिक परिधानों की विशेषताएं भी बताई गई। भारतवर्ष विविधताओं के लिये विश्व में जाना जाता है, जहां न सिर्फ भाषाई विविधता पाई जाती है अपितु परिधानों की विविधता अपने आप में एक पहचान रखती है। पारंपरिक वेशभूषा में विद्यार्थियों ने एक मंच पर अनेकता में एकता को प्रदर्शित करते परिधानों का प्रदर्शन कर रंगों की छटा बिखेर दी।

बेनजीर कॉलेज में हुआ 40 यूनिट रक्तदान

भोपाल। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय (बेनजीर कॉलेज) में राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत शुक्रवार को 'रेड रिबन क्लब' के तत्वावधान में रेडक्रास सोसाइटी की टीम ने स्वैच्छिक रक्तदान शिविर किया। इसके अंतर्गत स्वास्थ्य परीक्षण, रक्त परीक्षण एवं एचआईवी एड्स पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ. सरोज श्रीवास्तव ने बताया कि रक्तदान शिविर में महाविद्याल के स्टॉफ एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता कर 40 यूनिट रक्त दान किया। शिविर में रेड रिबन क्लब के रवि चौहान (अध्यक्ष), आशीष कौरव (सचिव), विशाल, अनस खान, शुभांशु, विकास, आशीष, तीर्थ, सुमित, सचिन, विजय, अभिषेक, सतेन्द्र, इशिका व निखिल मीना ने रक्त दान किया।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय का वार्षिकोत्स

मेहंदी में उकेरी अरेबिक, भरवां, दुल्हन की डिजाइ

सिटी रिपोर्टर। किसी प्रतिभागी ने रंगोली के जरिए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया तो किसी ने नाटक के जरिए समाज में हो रही घटनाओं को दिखाया। बुधवार को शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव 2019-20 अनुपम में ऐसा ही नजारा दिखाई दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. सरोज श्रीवास्तव ने किया। इस दौरान छात्र संघ प्रभारी डॉ. राजेश श्रीवास्तव सहित अन्य शिक्षक यहां मौजद रहे। उत्सव के पहले दिन मेहंदी ने हिस्सा लिया। मेहंदी प्रति स्टूडेंट्स ने अरेबिक, भरवां डिजाइन बनाई। प्रतियोगिता वे चरण में फ्लॉवर डेकोरेशन प्र हुई, जिसमें 20 से अधिक स्टू हिस्सा लिया।

अगली कड़ी में रंगोली प्रति हुई, जिसमें स्टूडेंट्स ने पर्यावर बचाओ, स्वच्छता का संदेश अगली कड़ी में नाटक की प्रस्तु जिसमें 4 समूहों ने नारी के जीवन, समाज

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज के एनएसएस शिविर का आयोजन

भोपाल। शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय पुराना बैनजीर भोपाल की राष्ट्रीय सेवा योजना का शिविर ग्राम बेरखेड़ी, रातीबड़ भोपाल में 2 मार्च से आठ मार्च तक आयोजित किया जा रहा है, जिसमें महाविद्यालय के 85 स्वयंसेवक सहभागिता कर रहे ह । एनएसएस कैम्प का उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ सरोज श्रीवास्तव द्वारा किया गया जिसमें एनएसएस इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. राकेश सक्सेना एवं डॉ. मुकेश नापित एव महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी एवं डॉ. राजेश श्रीवास्तव, डॉ. रूचि सोनी एवं डॉ. निषा यादव द्वारा कार्यक्रम के उद्घाटन में अपने-अपने विचार व्यक्त किये गये। एनएसएस शिविर में सहभागिता कर रहे छात्रों द्वारा निर्धारित दिनचर्या के साथ परियोजना कार्य के रूप में विद्यालय कैम्पस में विद्यार्थियों हेतु खेल मैदान की साफ-सफाई व मरम्मत कार्य संचालित किया गया। साथ ही ग्राम भ्रमण के दौरान ग्रामीण को स्वच्छता का संदेश दिया गया एवं स्वास्थ्य तथा जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभों से ग्रामीणों को अवगत कराया गया। कैम्प का नेतृत्व दल प्रभारी रवि चौहान, अयान खान व आशीष कौरव द्वारा किया जा रहा है।

पीजी विद्यार्थियों के दल ने किया भ्रमण

भोपाल। शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय(पुराना बेनजीर) भोपाल के स्नातकोत्तर कक्षाओं में विद्यार्थियों का एक दल औद्योगिक भ्रमण के लिए स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के तत्वावधान में वर्धमान यार्न मंडीदीप, जिला रायसेन में अवलोकन करने गया। जहां वर्धमान यार्न के मानव संसाधन प्रभारी अब्राहम थामस तथा प्रोडक्शन यूनिट के प्रभारी धनंजय द्वारा विद्यार्थियों को यूनिट 01 का पूर्ण भ्रमण करवाया गया एवं उत्पादन की प्रक्रिया को विस्तार से जानकारी दी गई। भ्रमण में प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. आशा वर्मा , डॉ. नीतूप्रिया लचौरिया, डॉ. हरनीत चीमा सहित 25 विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

मिस्टर अनुपम सुमित व मिस अनुपमा का खिताब श्रुति ने जीता

बेनजीर कॉलेज में वार्षिकोत्सव 'अनुपम' का आयोजन

● लेक सिटी रिपोर्टर ●

शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय भोपाल में चल रहे वार्षिकोत्सव अनुपम के अंतर्गत शुक्रवार को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। जिसकी शुरूआत पुलवामा में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि देकर की गई।

इसमें मिस्टर अनुपम तथा मिस अनुपमा प्रतियोगिता आयोजित की गई। कई राउंड से गुजरने के बाद प्रतिभागियों का चयन निर्णायकों द्वारा किया गया। इस दौरान मिस अनुपमा की विनर श्रुति साहू रही वहीं फस्ट रनरअप समरीन कुरैशी, सेकंड रनरअप वेदिका मालवीय रही। मिस्टर अनुपम का खिताब सुमित बागरी ने प्राप्त किया। फस्ट रनरअप हरी ओम यादव तथा सेकंड रनरअप नीतेश पटेल रहे। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. सरोज श्रीवास्तव व विधायक आरिफ मसूद ने विजेताओं को क्राउन एवं विजेता ट्राफी प्रदान की।

महाविद्यालय परिवार

प्राचार्य

डॉ. सरोज श्रीवास्तव

मों.नं.:–9406532917 ई–मेलः– sarojshrivastava59@gmail.com

शैक्षणिक परिवार

	शैक्षणिक विभाग	पदनाम	मोबाईल नं.	ई.मेल
	वनस्पतिशास्त्र विभाग			
1	डॉ. कीर्ति जैन	प्राध्यापक	9827069568	kirtipadam@yahoo.in
2	डॉ. अरूणा जैन	प्राध्यापक	9893081068	drarunajain@gmail.com
3	रफत फातिमा	सहा. प्राध्यापक	9826215534	fatamrafat@gmail.com
4	डॉ. सरला पटेल	सहा. प्राध्यापक	9425469820	dr.sarla.bpl@gmail.com
5	डॉ. देवेन्द्र पटेल	सहा. प्राध्यापक	7415771824	dev_smita33@yahoo.com
	प्राणीशास्त्र विभाग			
1	डॉ. संजय तेंलग	प्राध्यापक	9893423112	telangs.st@gmail.com
2	डॉ. मुकेश दीक्षित	प्राध्यापक	9425117406	dixitmukesh1@gmail.com
3	डॉ. के.के.मिश्रा	प्राध्यापक	9425361882	kaushalmishra94@gmail.com
4	डॉ.. शाहीना परवीन	प्राध्यापक	7974436392	shakilahaman@gmail.com
5	डॉ. दीप्ती वैश्य	सहप्राध्यापक	9425021447	deeptivaishbpl@gmail.com
6	डॉ. इंतेखाब आलम दुर्रानी	सहप्राध्यापक	9425600156	durrani.zoology@gmail.com
7	डॉ. मुकेश कुमार नापित	सहा. प्राध्यापक	9826867242	napit.mukeshkumar7@gmail.com
8	डॉ. हेमलता वर्मा	सहा. प्राध्यापक	9425611936	hem12ta@gmail.com
	रसायनशास्त्र विभाग			
1	डॉ. सुधांशुधर द्विवेदी	प्राध्यापक	9425007434	sudhanshu_dhar@yahoo.co.in
2	डॉ. आशा वर्मा	प्राध्यापक	9424417062	ashaverma@yahoo.com
3	डॉ. ईला जैन	प्राध्यापक	9425433155	ilajain69@gmail.com
4	डॉ. नीतूप्रिया लचौरिया	सहा. प्राध्यापक	9827724427	neetupriya04@gmail.com
5	डॉ. स्मिता वर्मा	सहा. प्राध्यापक	9340595911	smita_priti@rediffmail.com
	भौतिकशास्त्र विभाग			
1	डॉ. रागिनी तिवारी	प्राध्यापक	9303113697	ragini.240360@gmail.com
2	डॉ. राकेश सक्सेना	प्राध्यापक	9425377629	rakesh_saxena60@yahoo.com
3	डॉ. हर्षा जलौरी	प्राध्यापक	9425637396	jalori.harsha@gmail.com
4	डॉ. ममता पाण्डेय	प्राध्यापक	9926868929	mrsmamtapandey@gmail.com
	गणित विभाग			
1	डॉ. राजेश श्रीवास्तव	प्राध्यापक	9425010401	rajeshraju0101@rediffmail.com
2	डॉ. नवल सिंह	प्राध्यापक	9425680718	drsinghnaval12@gmail.com
3	डॉ. अनीता मंडलोई	सहप्राध्यापक	9425008408	m_mandloi2003@yahoo.co.in
4	डॉ. एस.के. मल्होत्रा	सहप्राध्यापक	9826543918	skmalhotra75@gmail.com
5	डॉ. ज्योति पंथी	सहाप्राध्यापक	9406952867	jyoti_panthi@yahoo.com
	वाणिज्य विभाग			
1	डॉ. एम.के. गुप्ता	प्राध्यापक	8109273861	gupta19@sancharnet.in
2	डॉ. जी.पी.यादव	प्राध्यापक	9425438406	gpyadav2405@gmail.com
3	डॉ. असद अली	प्राध्यापक	9827010838	ashmaali1972@gmail.com
4	डॉ. शिवाली शाक्या	सहा. प्राध्यापक	9406518859	shakyashivali10@gmail.com
	हिन्दी विभाग			
1	डॉ. संगीता गुप्ता	प्राध्यापक	9425378486	sangeeta2019gupta@gmail.com
2	डॉ. मीनू चतुर्वेदी	प्राध्यापक	9826029815	meprofes@gmail.com
	अंग्रेजी विभाग			
1	डॉ. प्रज्ञा रावत	सहप्राध्यापक	9926434541	pragya61rawat@gmail.com
2	आशा वाधवानी	सहा. प्राध्यापक	9425393548	ashawadhwani12@gmail.com

	समाजशास्त्र			
1	डॉ. माधवी लता दुबे	प्राध्यापक	8839969901	madhavidb62@gmail.com
2	डॉ. हरनीत चीमा	सहप्राध्यापक	8461949151	chimaharneet@gmail.com
3	नीलिमा चटर्जी	सहा. प्राध्यापक	9753972180	chatterjeeneelima04@gmail.com
	राजनीतिकशास्त्र			
1	डॉ. विष्ण पाल सिंह गौर	प्राध्यापक	9406500789	vpsgour63@rediffmail.com
2	डॉ. मीनाक्षी टांडेकर	सहा. प्राध्यापक	9303128557	meenu_kshi11@rediffmail.com
	अर्थशास्त्र			
1	डॉ. फिरोजा बी खान	प्राध्यापक	9229113448	firozabpl0707@gmail.com
	इतिहास			
1	डॉ. मधुसूदन प्रकाश	सहा. प्राध्यापक	9425029306	ms23prakash@gmail.com
2	डॉ. एकता पाल	सहा. प्राध्यापक	9826766350	ektaabhijitpal@gmail.com
3	श्रीमती पुष्पा देवी साहू	सहा. प्राध्यापक	8718018988	pushpadevisahu079@gmail.com
	गृह विज्ञान विभाग			
1	डॉ. सविता खरे	प्राध्यापक	9977479324	kharesavita@gmail.com
2	डॉ. भारती गोस्वामी	सहा. प्राध्यापक	9479782648	bhartigoswami2010@gmail.com
3	डॉ. रूचि सोनी	सहा. प्राध्यापक	9926702639	ruchi_ryd@yahoo.com
4	कु. निशा यादव	सहा. प्राध्यापक	9713944022	nishabhopal9713@gmail.com
	क्रीड़ा विभाग			
1	डॉ. सतीश कुमार	क्रीडाधिकारी	9827318612	satish_diamond@yahoomail.com
	पुस्तकालय			
1	श्री के. एल. खाण्डपा	ग्रन्थपाल	9329219035	klkhandpa@gmail.com

कार्यालयीन परिवार

	नाम	पदनाम	मोबाईल नं.
1	श्रीमती भारती पंथी	लेखापाल / प्रभारी मुख्यलिपिक	9993167755
2	श्री पी. मंगतानी	सहायक ग्रेड–2	9993375510
3	श्री प्रदीप हरतालकर	सहायक ग्रेड–3	9893661434
4	श्री सुदेश सैनी	सहायक ग्रेड–3	9826053137
5	श्री संजय सावलकर	प्रयोगशाला तकनीशियन	9893033855
6	डॉ. तनवीर खान	प्रयोगशाला तकनीशियन	8817669190
7	श्री दीपक तिवारी	प्रयोगशाला तकनीशियन	9826259977
8	श्रीमती सुनीता ठाकुर	प्रयोगशाला तकनीशियन	7869066163
9	श्रीमती सरस्वती मेहरा	प्रयोगशाला तकनीशियन	9827521470
10	श्रीमती आशा श्रीवास्तव	प्रयोगशाला तकनीशियन	8982689340
11	श्री मणीकान्त भिडे	प्रयोगशाला तकनीशियन	9425624243
12	श्री हेमराज महेडिया	प्रयोगशाला तकनीशियन	9893987963
13	श्री भागीरथ शाक्य	प्रयोगशाला परिचारक	9826407887
14	श्री गुणवंत ढोके	प्रयोगशाला परिचारक	9977057654
15	श्री सुशील मातुरकर	प्रयोगशाला परिचारक	9340370319
16	श्री जितेन्द्र पारोचे	बुक लिफटर	9301851223
17	श्रीमती सुमन बाथम	फर्राश	9685784635
18	श्रीमती शशी बाथम	भृत्य	
19	श्री मनीष करौसिया	स्वीपर	7869682267

राष्ट्रीय सेवा योजना राष्ट्रीय कैडेट कोर
PEOPLE'S WORLD
WELCOME
Swasth
Bharat
Yatra
शासकीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी
2019

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शासकीय विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय
कोलार भोपाल
REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA